CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
टाँग का निचला भाग, पुत्र वधु, जंवाई, चोट, रोगादि

द्वादश भाव—खर्च, अपव्यय, आँख, त्याग, भोग मामी, नींद, कारागार आदि का विचार किया जात

२।४।६।८।१०।१२

ग्रहों का अंग विचार—

सूर्य	—आत्मा	चंद्र
मंगल	—पराक्रम	बुध
बृहस्पति	—सुख-विज्ञान	शुक्र
शनि	—दुःख	

वी
काश
—जल
—वायु

ग्रह अवस्था—

क्रम संख्या	ग्रह अवस्था	
१.	दीप्त	अपने में
२.	मुदित	
३.	स्वस्थ	
४.	शान्त	
५.		
६.		

—अग्नि
—पृथ्वी
—वायु
—जल
—अग्नि
—पृथ्वी
—वायु
—जल
—अग्नि
—पृथ्वी
—वायु
—जल

कुंभ
मीन

उक्त पुस्तक श्री जगेन्द्र ... मल्ल ... सङ्कलनमा ... सार्वजनिक पुस्तकालयका प्रदान गरिएको छ।
श्रीमती ... मल्ल

राशियों के वर्ण—

मेष	—लाल
वृषभ	—सफेद
मिथुन	—हरा
कर्क	—उज्ज्वल लाल
सिंह	—धूम्र
कन्या	—पाण्डु
तुला	—अनेक रंग से मिश्रित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृश्चिक
धनु
मकर
कुम्भ
मीन

मैत्री चक्र—

ग्रह—	सूर्य	चन्द्र
अधिमित्र—	चन्द्रमा	बुध
मित्र—	बुध,	शुक्र, गुरु शनि
सम—	मंगल गुरु	सूर्य सूर्य चन्द्र, गुरु
शत्रु—	शुक्र मंगल	शुक्र शुक्र मंगल, शनि
अधिशत्रु—	शनि × बुध	× शुक्र बुध

ग्रहों का बल—

१. स्थान बल—जो ग्रह उच्च, सम, मित्र... स्थ होता है वह ग्रह बली कहलाता है। चन्द्रमा व शुक्र, ... कन्या, वृश्चिक, मकर, कुम्भ में स्थानबली एवं सूर्य, मंगल, ... शनि, मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ में स्थानबली कहलाते हैं।

२. दिग बल—लग्न में बुध व गुरु, चतुर्थ भाव में शुक्र व चन्द्रमा सप्तम भाव में शनि तथा १०वें भाव में सूर्य व मंगल हों तो वे दिग्बली कहलाते हैं।

३. काल बल—रात्रि में जन्म लेने वाले बालक की कुण्डली में चन्द्रमा, शनि तथा मंगल एवं दिन में जन्म लेने वालें की कुण्डली में सूर्य, बुध और शुक्र काल बली कहलाते हैं।

४. नैसर्गिक—शनि से मंगल, मंगल से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, चन्द्र और चन्द्र से सूर्य उत्तरोत्तर बली कहलाते हैं।

५. दृग्बल—शुभ ग्रहों से देखे जाने वाले सभी ग्रह दृग्बल कहलाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टाँग का निचला भाग, पुत्र वधु, जँवाई, चोट, रोगादि । । में

द्वादश भाव—खर्च, अपव्यय, आँख, त्याग, भोग, मोक्ष, पृथक्‌ा गुरु, मामी, नींद, कारागार आदि का विचार किया जाता है। ष्टावली

ग्रहों का अंग विचार—

सूर्य	—आत्मा	चंद्र	—चित्त
मंगल	—पराक्रम	बुध	—वा
बृहस्पति	—सुख-विज्ञान	शुक्र	—
शनि	—दुःख		

सम्पूर्ण दृष्टि

		७
	४	७
	८,४	४,८,७

ग्रह अवस्था—

क्रम संख्या	ग्रह अवस्था			
१.	दीप्त	अपनी उ	८,४	७
		में स्थि	८,४	५,६,७
२.	मुदित	मि	८,४	७
			८,४	३,१०,७
३.	स्वस्थ	,१० स्वयं के घर में		५,७
		२,१० ,,		५,७
४.	शान्त	कं, तुला, मकर		
		न, सिंह, वृश्चिक, कुंभ		
५.		श. मिथुन, कन्या, धनु, मीन		

राशि—मेष, वृषभ, कर्क धनु, मकर ।

६. —मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मीन

वाली राशि—५,६,७,८,११,१२

रात्रिवली राशि—१,२,३,४,६,१०

केन्द्र—१।४।७।१० भाव

ध्रुव केन्द्र—१ भाव

त्रिकोण—५।९ भाव

पणफर—२।५।८।११ भाव

आपोक्लिम—३।६।९।१२ भाव

त्रिक—६।८।१२ भाव

दुः स्थान—६।८।१२ भाव

उपचय—३।६।१०।११ भाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हृ. वृश्चिक
मध्यन्
दीर्घ रा

ग्रह स्वामी·

सिंह—सु
मिथुन, कन्या—बु
कुम्भ —शनि, कन्यर्यं चन्द्र

भावानुसार विचार बुध

प्रथम भाव—जन्म कां
आयु, रोग, यश, प्रतिष्ठा, उन्नति, गुरु

द्वितीय भाव—धन, कुटुम्ब, .
राज्य, सभा, नेत्र आदि।

तीसरा भाव—छोटे बहिन, भाई,
आपा, स्वांस नली, साहस, श्रम।

चतुर्थ भाव—माता—जन्म भूमि, रह
कृषि, जनता, वाहन इत्यादि।

पंचम भाव—पुत्र-पुत्री, गर्भ, प्रतिभा, बुद्धि
परीक्षा (competetive exam) सट्टे का व्यापा
भाग्य, प्रेम, बहनोई, पेट, हृदय।

षष्ठ भाव—शत्रु, चोट, रोग, ऋण, रुकावट, अभा
कारागार, म्लेच्छ, अन्यत्व आदि का विचार।

सप्तम भाव—स्त्री, कामवासना, वीर्य, पति, मूत्रेन्द्रिय, प्रयत्न, शूरता, व्यापार आदि।

अष्टम भाव—आयु, मृत्यु, मृत्यु का कारण, गंभीर बीमारी, विदेश महाकष्ट, नाश, पाप, अण्डकोष, मामी आदि का विचार।

नवम भाव—भाग्य, धर्म, बच्चे या नौकरी में उन्नति, पिता, शुभ कर्म, पुत्र, उच्च शिक्षा, अध्यात्म योग, नितम्ब, छोटे भाई की पत्नी, साला, तप आदि का विचार।

दशम भाव—कर्म, कामधन्धा, राज्य सेवा, यश, मान, ऊँचाई घुटने आदि।

एकादश भाव—लाभ, धन की प्राप्ति, बड़ा भाई-बहिन, ऊँचाई,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
टाँग का निचला भाग, पुत्र वधु, जँवाई, चोट, रोगादि।

द्वादश भाव—खर्च, अपव्यय, आँख, त्याग, भोग, मोक्ष, पृथक्ता, मामी, नींद, कारागार आदि का विचार किया जाता है।

ग्रहों का अंग विचार—

सूर्य	—आत्मा	चंद्र	—चित्त
मंगल	—पराक्रम	बुध	—वाक्-शक्ति
बृहस्पति	—सुख-विज्ञान	शुक्र	—भोग-विलास
शनि	—दुःख		

ग्रह अवस्था—

क्रम संख्या	ग्रह अवस्था	ग्रहावस्था कारण
१.	दीप्त	अपनी उच्च राशि में या मूल त्रिकोण में स्थित ग्रह 'दीप्त' कहलाता है।
२.	मुदित	मित्र की राशि में बैठा हुआ ग्रह 'मुदित' कहलाता है।
३.	स्वस्थ	अपनी ही राशि में बैठा हुआ ग्रह 'स्वस्थ' कहलाता है।
४.	शान्त	शुभ ग्रह के घर में बैठा ग्रह 'शान्त' ग्रह कहलाता है।
५.	शक्त	स्फुट रश्मि जालों से अत्यन्त शुद्ध ग्रह 'शक्त' होता है।
६.	प्रपीड़ित	ग्रहों से पराजित होने पर 'प्रपीड़ित' माना जाता है।
७.	दीन	शत्रु की राशि में या नवांश में शत्रु की राशि में 'दीन' ग्रह माना जाता है।
८.	खल	पाप ग्रहों के मध्य पड़ा ग्रह 'खल' कहलाता है।
९.	भीत	नीच ग्रहों के साथ होने से ग्रह 'भीत' कहलाता है।
१०.	विकल	जो ग्रह कुण्डली में अस्त होकर पड़ता है वह ग्रह 'विकल' कहलाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रहों की वृद्धि—

सूर्य के साथ शनि हो तो उसका बल बढ़ता है शनि के साथ मंगल हो तो अधिक बलशाली हो जाता है। मंगल के साथ गुरु, गुरु के साथ चन्द्रमा, चन्द्रमा के साथ शुक्र, शुक्र के साथ बुध तथा बुध के साथ चंद्रमा होने पर उनका बल बढ़ता है।

मंगल व गुरु साथ हों तो गुरु का बल बढ़ जाता है इसी प्रकार गुरु के साथ चंद्रमा का, चंद्र द्वारा शुक्र का, शुक्र द्वारा बुध का तथा बुध द्वारा चंद्रमा की शक्ति बढ़ जाती है।

ग्रहों की हानि—

सूर्य के साथ चन्द्रमा, चतुर्थ भाव में बुध, पंचम भाव में वृहस्पति, द्वितीय भाव में मंगल, छठे शुक्र, सातवें भाव में शनि हों तो उस भाव को विफल कर देते हैं।

ग्रह दोषारोपण—

राहु का दोष बुध नाश करता है, इन दोनों के दोष शनि नाश करता है। इन तीनों के दोषों को मंगल नाश करता है। उक्त चारों के दोषों का शुक्र नाश करता है। पांचों के दोषों को गुरु नाश करता है। छःहों के दोषों का निवारण चन्द्र करता है, तथा इन सातों के दोषों का हरण सूर्य करता है। अर्थात् यदि कुण्डली में सूर्य उच्च या बली होकर स्थित हो वह जातक की कुण्डली में पड़े, अनिष्टों को नष्टकर देता है।

ग्रह जाग्रतावस्था—

उच्चांश में तथा अपने नवांश में ग्रह जाग्रत होते हैं। मित्र के नवांश में रहने वाले ग्रह स्वप्नावस्था के होते हैं। और नीच शत्रु के नवांश में ग्रह सुप्त कहलाते हैं।

ग्रह नाम संज्ञा—

१. प्रथम भाव के स्वामी को— लग्नेश, केन्द्रेश, ध्रुवेश
२. द्वितीय ,, ,, ,, —धनेश, सहायक मारकेश
३. तृतीय ,, ,, ,, —पराक्रमेश, बान्धवेश
४. चतुर्थ ,, ,, ,, —सुखेश, माहेश,
५. पंचम ,, ,, ,, —पंचमेश, सन्तानेश, विद्याधीश
६. षष्ठम ,, ,, ,, —कष्टेश, रोगेश
७. सप्तम ,, ,, ,, —सप्तमेश, जायेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८. अष्टम भाव के स्वामी को —मृत्युयेश, मारकेश
९. नवम् „ „ „ —कर्मेश, भाग्येश
१०. दसवें „ „ „ —राज्येश, राज्यपदेश
११. ग्यारहवें „ „ „ —आयेश
१२. बारहवें „ „ „ —व्ययेश

ग्रहों के दीप्तांश—

सूर्य	के	दीप्तांश	१५
चंद्रमा	„	„	१२
मंगल	„	„	८
वुधं	„	„	७
गुरु	„	„	९
शुक्र	„	„	७
शनि	„	„	९
राहु	„	„	१
केतु	„	„	१
हर्षल	„	„	६
नेप्च्युन	„	„	६

बाधक राशि एवं ग्रह—

क्र. सं.	लग्नराशि	बाधक राशि	बाधक ग्रह	अशुभ फल
१. चर	मेष	कुंभ 11	शनि	शनि दशा में
२. स्थिर	वृषभ	वृश्चिक 7	मंगल	मंगल „
३. द्वि-स्व	मिथुन	सिंह 3	सूर्य	सूर्य „
४. चर	कर्क	वृष 11	शुक्र	शुक्र „
५. स्थि	सिंह	कुंभ 7	शनि	शनि „
६. द्वि	कन्या	वृश्चिक 3	मंगल	भौम „
७. चर.	तुला	सिंह 11	सूर्य	सूर्य „
८. स्थि	वृश्चिक	वृष 7	शुक्र	शुक्र „
९. द्वि.	धनु	कुंभ 3	शनि	शनि „

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०.	च.	मकर	वृश्चिक	११	मंगल	मंगल	,,
११.	स्थि	कुंभ	सिंह	७	सूर्य	सूर्य	,,
१२.	द्वि.	मीन	वृष	३.	शुक्र	शुक्र	,,

विशिष्ट ग्रह कारक—

१. सूर्य—पराक्रम, तेजस्विता, झगड़े, क्रोध, मारपीट, हिंसक कार्य आदि का कारक है। ११वें भाव में विशेष कारक ग्रह होता है।

२. चंद्रमा—सौम्यता, सज्जनता, शील, संकोच, लज्जा, भावुकता, सौंदर्य, जल यात्रादि का कारक ग्रह। १।७वें भाव में विशेष कारक ग्रह।

३. मंगल—युद्ध, नेतृत्व, सेनापतित्व, पुलिस, अस्त्र-शस्त्र संचालन, कृषि, भूमि संबन्धी कार्य, भूगर्भ विशेषज्ञ, मकान बनवाना, भूमि क्रय, डॉक्टरी शिक्षा, पशुपालन आदि का कारक। मंगल १०वें भाव में विशेष कारक ग्रह होता है।

४. बुध—व्यापार, लेन-देन, खरीदना-बेचना, वणिक वृत्ति, कंजूसी, ऐश्वर्य, भोग, क्लर्की, स्टेनो, टाइपिस्ट, वायुयान चालक आदि का कारक एवं ११वें भाव में बुध कारक ग्रह है।

५. गुरु—शिक्षा, पांडित्य, वेदपठन, वाद-विवाद, शास्त्रार्थ, धार्मिक कार्यों का ज्ञान, लेक्चरार, प्रोफेसर, 'गजेटेड ऑफीसर, नेतृत्व प्रधान कार्य का कारक तथा ५।९वें भाव में विशेष कारक ग्रह।

६. शुक्र—सुन्दरता, स्वच्छता, शारीरिक यष्टि, विश्व सुन्दरी पद, संगीत, शारीरिक गठन, तेजस्विता, सुकुमारता, विदेश यात्रा, संपर्क साधन, हड्डी विशेषज्ञ, प्रेम संबन्धी कार्य, दलाली, वैश्यावृत्ति, भोग, कामातुरता का कारक ग्रह है तथा १२।४।७वें भाव में यह कारक ग्रह होता है।

७. शनि—छूत, छल-कपट, धोखा, हिंसा, चौर्य कर्म, डाकू, हिंसक व्यक्तित्व का हेतु। लोहे का व्यापार, तिल, तेल, ऊन के व्यापार हेतु भी शनि है। ३।६ भाव में कारक।

८. राहु—आलस्य, अस्थिरता, स्थावर संपत्ति, योगाभ्यास, उदर-रोग, वाहन, जननेता, विधान सभाई, लोक सभापद, कूट नीतिज्ञता,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजदूत आदि का कारक ग्रह है । ३।६।१० कारक ग्रह ।

९. केतु—धन, लाभ, लेखन, शत्रु विजय, स्वभूमि के स्थानान्तरण बहुभाषा-भाषी, सफल वक्ता, व्यसन, तस्कर, नशीली वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विष विक्रेता, मशीनी कार्यों की प्रवीणता आदि का कारक ग्रह है तथा २।८वें भाव में यह कारक ग्रह है।

ग्रहों का त्रिशांश—

विषम राशियों में ० अंश से ५ अंश तक मंगल का त्रिशांश, ५ से १० अंश तक शनि का त्रिशांश, ११ से १८ अंश तक गुरु का त्रिशांश, १८ से २५ अंश तक बुध का त्रिशांश, उसके बाद ३० अंश तक शुक्र का त्रिशांश होता है। सम राशियों में इसका उल्टा है। ० से ५ अंश तक शुक्र का त्रिशांश, उसके बाद १२ अंश तक बुध का त्रिशांश, १२ से २० अंश तक गुरु का त्रिशांश गुरु के बाद ५ अंश तक शनि का त्रिशांश और २५ से ३० तक मंगल का त्रिशांश होता है।

तिथि विचार—

नाम	तिथि	तिथिफल	सिद्धियोग	मृत्युयोग
नंदा	१।६।११	आनंद-लाभ	शुक्रवार	रवि-मंगल
भद्रा	२।७।१२	कल्याण-शुभ	बुध	सोम-शुक्र
जया	३।८।१३	विजय-यश	मंगल	बुध
रिक्त	४।९।१४	क्लेश-संताप	शनि	बृहस्पति
पूर्णा	५।१०।१५	इच्छित सिद्धि	गुरु	शनिश्चर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेष लग्न और योग

मेष लग्न होने पर सूर्य सन्तान भवन के अधिपति, चन्द्रमा सुखेश तथा पराक्रम एवं शत्रु भवन के ईश भगवान बुध होंगे। गुरु महाराज भाग्येश एवं व्ययेश, शुक्र द्रव्य तथा स्त्री भवन के अधिपति तथा मृत्यु कारक शनिदेव कर्मेश व आयेश होते हैं। इससे पूर्व कि मेष लग्न से सम्बन्धित विभिन्न योगों का वर्णन करूँ, हमें बारहों भवनों के नाम याद होने चाहिएँ। स्पष्ट ध्यान रहे—१।४।७।१० भाव को केन्द्र कहा जाता है। ५।९ भाव त्रिकोण तथा उनके स्वामी त्रिकोणेश कहे जाते हैं। २।५।८।११वाँ भाव फणकार, ६।१२वाँ दुःस्थान ३।६।१०।११वाँ भाव उपचय ३।६।९।१२वाँ भाव आपोक्लिम एवं ६।८।१२वाँ भाव त्रिक कहलाता है। इनके साथ ही साथ हमें इन भावों के कारक ग्रह भी ध्यान में रखने चाहियें। ये कारक ग्रह निम्न प्रकार से हैं।

कारक ग्रह:
- सूर्य १ प्रथम
- चंद्रमा ४ चतुर्थ
- मंगल ३।६
- बुध ६
- गुरु २।५।९।१०।१२
- शुक्र ७
- शनि ८।१०।१२

अब मैं मेष लग्न होने पर विभिन्न ग्रहों की स्थिति से होने वाले

हनुमान, सिकंदर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योगों का स्पष्टीकरण करूँगा !

१. मेष लग्न हो, लग्न में ही चन्द्रमा हो तथा चंद्र व मंगल की युति हो तो जातक अवश्य ही संसद सदस्य बनता है।

२. मेष लग्न हो तथा सूर्य उच्च का (मेष में) हो। गुरु स्वराशिस्थ नवम् भावस्थ हो एवं कर्मेश मंगल उच्च का अर्थात् मंगल कुंभ का हो तो जातक राज्यपाल बनता है।

३. मेष लग्न हो तथा मंगल-गुरु का सम्बन्ध हो तो वह जातक केन्द्रीय मंत्री बन कर कई विदेश-यात्राएँ करता है।

४. मेष लग्न हो, लग्न में सूर्य, मंगल, शनि, केतु इनमें से कोई हो तथा गुरु भाग्य भवन में हो तो जातक अवश्य केन्द्रीय मंत्री बनता है।

५. मेष लग्न वाले जातक की कुण्डली में ११वें भवन में यदि चन्द्रमा एवं गुरु हों, उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक उच्च शासनाधिकारी बन कर मान पाता है।

६. चन्द्रमा लग्न में स्थित हो, शनि एकादश भाव में, सूर्य स्वराशिस्थ सन्तान भवन (५) में तथा गुरु मृत्यु भाव में (८) में हो तो जातक उच्च पदासीन होता है।

७. लग्नेश व राशीश लग्न में होकर ९वें चन्द्रमा हो तो जातक शासन में विरोधी दल का नेतृत्व करता है।

८. मेष लग्नस्थ जातक को पाप ग्रह नहीं देखता हो तो भी जातक उच्च पद प्राप्त करता है।

९. मेष लग्न हो तथा कर्मेश मंगल हो, ६ठे बुध, व्यय भाव में शुक्र हो तो जातक एम. एल. ए. बनता है।

१०. मेष स्थित चन्द्रमा को गुरु पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो जातक उच्च पद की प्राप्ति करता है।

११. मेष लग्न हो तथा बुध चौथे, गुरु सातवें, शुक्र १०वें भावस्थ हो तो जातक एम. पी. बनता है।

१२. मेष लग्न हो तथा समस्त शुभ ग्रह केन्द्र में स्थित हो तो जातक राज्यपाल बनता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३. मेष लग्न हो, मंगल कर्मेश भाग्येश ५वें हो तो जातक लक्ष्याधिपति बनता है। ९/१२/१० पति २ अवस्था

१४. मेष राशिस्थ लग्न की कुण्डली में सूर्य स्व का हो, गुरु-चंद्र की युति ११वें हो तो जातक लक्ष्मीवान होता है।

१५. राहु।केतु मिथुन।कुंभ का हो तो जातक के बड़े भाई की मृत्यु होती है।

१६. मंगल मिथुन का हो, उस पर पाप ग्रह की पूर्ण दृष्टि हो तो उस जातक का एक भी भाई जीवित न रहे।

१७. मेष लग्न हो तथा ६।१२ भाव या केन्द्र में पाप ग्रह हों तो भाई का नाश तथा वहीं शुभ ग्रह हो तो भाईयों की वृद्धि होती है।

१८. मेष लग्न हो तथा चन्द्रमा व शुक्र लग्न में हो तो जातक उच्च कोटि का वाहन प्राप्त करता है।

१९. चन्द्रमा-गुरु से दृष्ट हो तो भी जातक वाहन की प्राप्ति करता है।

२०. मेष लग्न हो तथा चन्द्रमा, १।४।७।१० भाव में कहीं हो अर्थात् केन्द्र में हो तथा चंद्र स्थित भाव का स्वामी (मंगल, चंद्रमा, शुक्र, शनि) लग्न में हो तो जातक को उच्च वाहन की प्राप्ति होती है।

२१. मेष लग्न हो तथा शनि ११वें भाव में तथा शुक्र मकर का हो तो भी उच्च वाहन की प्राप्ति होती है।

२२. मेष लग्न हो तथा गुरु चंद्र लग्न या ७वें भाव में हो तो जातक को उच्च वाहन की प्राप्ति होती है।

२३. चतुर्थेश, द्वितीयेश, सप्तमेश के साथ एकादश भाव में हो तो भी उच्च वाहन प्राप्त होता है।

२४. मेष लग्न हो। चतुर्थेश चौथे एवं भाग्येश १०वें हो एवं लग्नेश वलवान हो तो जातक सेना में उच्च पद की प्राप्ति करता है।

२५. षष्ठेश व बुध राहु के साथ होकर लग्नेश से संयोग करे तो जातक नपुंसक होता है।

२६. मेष लग्न हो तथा षष्ठेश से युक्त सूर्य ६।८ भाव में हो तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
जातक गंजा होता है।

२७. मेष लग्न हो। मंगल सप्तम भाव में, शनि लग्न में हो तो जातक अवश्य ही दूसरा विवाह करता है।

२८. यदि पाप ग्रह षष्ठेश, धनेश और लग्नेश से युक्त होकर सप्तम् भाव में हो तो जातक परस्त्रीगामी होता है।

२९. गुरु-बुध सप्तम भाव में हों तो जातक कई स्त्रियों के साथ संभोग करता है।

३०. मेष लग्न हो, शुक्र व सूर्य १।७ भावस्थ हो तो जातक की स्त्री वन्ध्या होती है।

३१. मेष लग्न हो, लग्नेश, लग्न को देखता हो, भाग्येश गुरु, केन्द्र या त्रिकोण में (५।९) हो तो जातक को उच्च पद की प्राप्ति होती है।

३२. नवम् भाव में चन्द्रमा, बुध जातक को पंडित बना देता है।

३३. मेष लग्न हो तो भाग्येश गुरु है अतः जातक का भाग्योदय १६वें वर्ष में निश्चय ही होगा।

३४. मेष लग्न हो, ९वें भाव में चन्द्रमा हो तथा नवम् भाव पर किसी की दृष्टि न हो तो जातक अवश्य ही संन्यासी बनता है।

३५. मेष लग्न हो। शनि केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक गजेटेड ऑफिसर बनता है।

३६. लग्न से १०वें सूर्य हो तो पिता से धन प्राप्त हो, चंद्र हो तो माता से, मंगल हो तो शत्रु से, बुध हो तो मित्र से, गुरु हो तो भाई से, शुक्र हो तो ससुराल से, शनिश्चर हो तो सेवक से तथा राहु।केतु हों तो छल-प्रपंच से अर्थ प्राप्ति होती है।

३७. मेष लग्न हो तथा शुक्र १२वें (उच्च का) हो तो जातक धनवान होता है।

३८. मेष लग्न हो, चन्द्रमा जहां स्थित है वहां से १।४।७।१०वें गुरु हो तो जातक भूमिपति होता है, मेयर बनता है।

३९. लग्नेश ५।९ भाव में, शुक्र ११वें एवं द्वितीयेश पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो लक्ष्मी योग होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४०. मेष लग्न, गुरु कर्क का एवं चन्द्रमा मीन का हो तो सरस्वती योग बनता है।

४१. मेषस्थ शुक्र हो, उसे सभी ग्रह देखते हों तो गजपति योग बनता है, जातक महा पराक्रमी, धनवान गुणवान एवं प्रभावशाली होता है।

४२. चन्द्रमा एवं मंगल एक साथ १।४।७।१० त्रिकोण या २।११ भाव में हों तो जातक धनवान होता है।

४३. चन्द्रमा से उपचय स्थानों में शुभ ग्रह हों तो जातक को अनायास अर्थ प्राप्ति होती है। ३/६/१०/११.

४४. चन्द्र-मंगल योग हो, लाभेश चतुर्थ भाव में, धनेश चतुर्थ भाव में हो, चतुर्थेश शुभ स्थान में हो तो यकायक धन की प्राप्ति होती है।

४५. मेष लग्न हो, चतुर्थेश, पञ्चमेश अर्थात् सूर्य, चंद्र का योग हो तो प्रबल राजयोग बनता है।

४६. मेष लग्न से शुक्र द्वितीयेश, सप्तमेश होने से मारकेश बनता है।

४७. गुरु ६।१२ का स्वामी होने से १०वें बैठे तो मारकेश बनता है।

४८. मंगल ६।८ घर के स्वामी के साथ हो तो उसकी महादशा या अन्तर्दशा में सिर में चोट लगने का भय रहता है।

४९. जन्म लग्न मेष हो, मंगल लग्नाधिपति ५वें घर में हो तो लग्नेश की दशा में निश्चय ही राजयोग, अभ्युदयादि होता है।

५०. मेष लग्न में सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र एक साथ नवम् में तथा शनि तुला का सप्तम में हों तो एक उत्तमातिउत्तम योग होता है।

५१. मेष लग्न हो और सूर्य, गुरु, शुक्र १०वें भाव में हों तो उसकी दशा में गंगा स्नान होता है।

५२. दूसरे घर का स्वामी ५वें, ५वें घर का स्वामी दूसरे या दूसरे का स्वामी ११वें व ११वें का स्वामी दूसरे हो या ५वें का स्वामी ५वें,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

९वें का स्वामी ९वें हो तो विशेष धन योग होता है।

५३. मेष लग्न हो, दूसरे घर में सूर्य व बुध हों तो ज्योतिष विशारद हो। यदि इन्हें शनि देखता हो तो जातक गणितज्ञ होता है।

५४. मेष लग्न हो, शुक्र स्व का सप्तम भवन में हो तो निश्चय ही पति से वियोग भोगना पड़ता है। अर्थात् पति-पत्नी में विच्छेद होता है।

५५. मेष लग्न हो तथा शनि-राहु का योग अष्टम भाव में हो तो जातक को मृगी का रोग हो।

५६. मेष लग्न हो, सप्तम भाव, शुक्र, शनि व राहु के प्रभाव में हो अर्थात् लग्न में शुक्र, दूसरे शनि व १२वें राहु हो तो जातक के सन्तान नहीं होती।

५७. मेष लग्न हो, शनि ११वें हो तथा सूर्य लग्न से भी वह स्थान ११वाँ हो अर्थात् लग्न में सूर्य हो तो जातक के पाँव में निश्चय ही चोट आती है।

५८. मेष लग्न हो, ६ठे स्थान के स्वामी बुध की शनि से युति हो तो जातक रोगी होता है।

५९. केतु चन्द्र राशि में हो तथा चन्द्रमा मीन का हो, मंगल की चन्द्र पर दृष्टि हो, शनि मिथुन राशि में हो तो मिरगी Phobia की बीमारी हो।

६०. मेष लग्न हो तथा शनि, मंगल द्वितीय भावस्थ होकर शुक्र पर दृष्टि डालें। गुरु सिंह का हो जिसपर मंगल की दृष्टि हो, शनि का केन्द्रीय प्रभाव होने तथा सूर्य कर्म भाव में हो तथा केतु से सम्बन्ध करे बुध ९वें हो तो जातक मूक होता है।

६१. शनि स्व का १०वें स्थान पर हों, मंगल कन्या का हो, सूर्य १२वें तथा राहु-मंगल का योग होने से जातक पागल हो।

६२. बुध-राहु मृत्यु भवन में हों सूर्य सप्तम भाव में हो तो जातक को गुर्दे का रोग हो।

६३. मंगल दूसरे, शनि ८वें हो तथा मेष लग्न हो तो जातक की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वाभाविक मृत्यु न हो।

६४. गुरु लग्न से द्वादशेश तथा चन्द्र लग्न से शनि द्वादशेश हो, मंगल ३रे हो तो जातक का पांव जलता है।

६५. राहु ६ठे भाव में हो, राहु के साथ बुध, शनि, गुरु हो, शुक्र ४थे घर में हो तो जातक हकलाता है।

६६. लग्न में चन्द्रमा हो, चन्द्रमा की युति केतु से हो, मंगल कर्क का हो (नीच का) शनि मृत्यु भाव में हो। सूर्य-शुक्र का साथ ३रे भाव में हो तो को पोलियो Polio का रोग होता है।

६७. मेष लग्न हो तथा लग्न में शनि हो एवं सूर्य ६ठे हो तो जातक आजीवन रुग्ण रहे।

६८. शुक्र-गुरु का सम्बन्ध नवम् भाव में हो तो जातक बड़ा कलाकार होगा।

६९. पुरुष का कुण्डली हो, दिन का जन्म हो तथा सूर्य, चन्द्र व लग्न अयुग्म राशियों में हों तो जातक महा भाग्यशाली होता है।

७०. मेष लग्न हो तथा सूर्य १०वें हो तो जातक भाषण-कला में चतुर होता है।

कुछ महान व्यक्ति जिनका मेष लग्न था तथा जिन पर उक्त में से अनेक योग घटित हुए हैं, की कुण्डलियाँ मैं यहाँ देने का प्रयास कर रहा हूं।

१. सुभाषचन्द्र बोस— कन्या

लग्न १	२	४	५	६	८	१०	११
	मंगल	केतु	गुरु	चन्द्र	शनि	बुध सूर्य राहु	शुक्र

२. दिलीप कुमार— मकर

१	७	८	९	१०	१२
केतु	मंगल राहु	सूर्य बुध	गुरु शुक्र	चन्द्रमा	शनि

३. अशोक कुमार— वृष

१	२	५	६	७
राहु शनि	चन्द्रमा मंगल	शुक्र	सूर्य बुध	गुरु केतु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४. सिकन्दर
तुला

२	३	४	५	७	११
शनि	मंगल	बुध	केतु सूर्य शुक्र	चन्द्रमा गुरु	राहु

५. सम्पूर्णानन्द
मेष

१	३	५	७	९	१०
चन्द्रमा	राहु	शनि	मंगल	शुक्र, गुरु, सूर्य केतु	बुध

६. जयनारायण व्यास
वृष

२	३	७	८	९	१०	११
चन्द्रमा	मंगल केतु	गुरु	शनि	शुक्र राहु	बुध	सूर्य

७. गुलजारीलाल नन्दा—
धन

१	३	४	६	८	९
मंगल	सूर्य, बुध केतु	शुक्र	गुरु	शनि	राहु चन्द्र

८. राजा कंस की पत्नि—
मिथुन

२	३	७	९	१०
गु	राहु चंद्रमा	शनि	बुध केतु	मंगल, सूर्य शुक्र

९. ~~रवीन्द्रनाथ टैगोर—~~
~~मीन~~ १२

१	३	४	५	९	१०	१२
~~सू, बुध शुक्र~~	~~केतु~~	~~गुरु~~	~~शनि~~	~~राहु~~	~~मंगल~~	~~चंद्रमा~~

१०. दिलीप कुमार—
मकर

१	७	८	९	१०	१२
केतु	राहु मंगल	सूर्य, बुध	गुरु शुक्र	चंद्रमा	शनि

११. लेखक की—
वृश्चिक

१	६	७	८	१०	१२
केतु	सूर्य	राहु, बुध शुक्र	चंद्रमा	मंगल	गुरु, शनि

१२. नर्गिस अभिनेत्री—
कुम्भ

१	२	४	७	९	११
राहु, शुक्र	सूर्य, बुध गुरु	मंगल	केतु	शनि	चंद्रमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३. पृथ्वीराज चौहान—
कन्या

३	५	६	७	९	१०	११
राहु	शनि	चंद्रमा	मंगल	केतु	गुरु, शुक्र वुध	सूर्य

१४. सरदार वल्लभ भाई पटेल चंद्रमा—
वृष

२	६	७	१०	१२
चंद्रमा	केतु	सूर्य वुध गुरु शुक्र	शनि मंगल	राहु

१५. जनरल दिगाल (फ्रांस)—
मीन

२	५	८	१०	१२
राहु	शनि	सूर्य वुध शुक्र केतु	मंगल गुरु	चंद्रमा

१६. राजा प्रताप मल्ल (नेपाल)
कन्या

१	२	३	४	६	७	९
केतु	सूर्य बुध	शुक्र	शनि गुरु	चन्द्र	राहु	मंगल

१७. श्री हनुमान जी
तुला

१	५	६	७	१०	१२
मंगल.	गुरु.	शुक्र, बुध, केतु	सूर्य, चन्द्र	शनि.	राहु.

१८. एम.ए. सचिव महिला (नेपाल)
जन्म २००५. सिंह

१	२	४	५	७	९
सूर्य बुध राहु	शुक्र	मंगल, शनि	चन्द्र.	केतु	गुरु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृष लग्न और योग

वृष लग्न होने पर भगवान भास्कर सुखेश चन्द्रमा पराक्रमेश, मंगल पत्नी भवन एवं व्ययेश बनते हैं। स्त्री नपुंसक बुध सुत स्थान के अधिष्ठाता बन द्वितीयेश भी बन जाते हैं। गुरुदेव मृत्यु भवन तथा आय स्थान के एवं शुक्र लग्नेश एवं शत्रु भवन के स्वामी होते हैं। क्रूर देव शनि भाग्येश तथा कर्मेश बन बैठते हैं। त्रिकोणपति बुध व शनि, केन्द्राधिपति शुक्र, सूर्य, मंगल व शनि होते हैं। पणफर बुध (२, ५) गुरु (८-१२) तथा आपोक्लिम स्थान के स्वामी शुक्र, चन्द्रमा, शनि व मंगल होंगे। उपचय पति चन्द्रमा, शुक्र, शनि, गुरु तथा दुःस्थान के स्वामी शुक्र व मंगल, त्रिकेश शुक्र, गुरु व मंगल होते हैं। ध्रुव केन्द्र का स्वामी शुक्र होता है।

अब मैं वृष लग्न के आधार पर होने वाले विभिन्न योगों का वर्णन करूँगा।

(१) यदि शनि एवं बुध की युति अच्छे स्थान पर हो तो प्रबलतम राज योग होता है।

(२) यदि चार ग्रह उच्च के हों या मूल त्रिकोण में हों तो जातक मंत्री या राज्यपाल होता है।

(३) शुक्र, गुरु, बुध केन्द्र में स्थित हों एवं मंगल १०वें हो तो जातक को उच्च पद प्राप्त होता है।

(४) यदि लग्न में सूर्य तथा चन्द्रमा द्वादश भाव में हो तो विदेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विभाग में सचिव का पद प्राप्त करता है।

(५) मूल त्रिकोण (५-६) में मंगल व शुक्र हो तो उच्च पद की प्राप्ति होती है।

(६) शुक्र ६ठे भावस्थ, द्वादश में मंगल एवं चतुर्थ गुरु हो तो वह शासकीय उच्च पद की प्राप्ति करता है।

(७) मेष का चंद्रमा हो तथा शुक्र पूर्ण दृष्टि से अर्थात् ६ठे भाव से देखता हो तो जातक चुनाव में विजय प्राप्त कर नेता बनता है।

(८) केन्द्र स्थानों पर पाप ग्रह तथा शुभ ग्रह स्वराशिस्थ हों तो जातक राजदूत का पद प्राप्त करता है।

(९) लग्न में चन्द्रमा हो तथा उस पर शुभ दृष्टि हो तो राज्य योग होता है।

(१०) शुक्र, सूर्य, चन्द्रमा एक स्थान पर हों तथा गुरु उन्हें देखता हो तो विशिष्ट राजयोग होता है।

(११) बुध एवं शनि द्वितीयस्थान में हों तो धन प्राप्ति होती है।

(१२) सूर्य वृश्चिक का हो तथा शुक्र सिंह का हो तो ससुराल से धन प्राप्त होता है।

(१३) शुक्र मिथुन का हो, बुध मीन का हो, गुरु ध्रुव केन्द्र में हो तो जातक को यकायक अर्थ की प्राप्ति होती है।

(१४) बुध ५।७।९।१०वें स्थित हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करता है।

(१५) भाग्येश शनि होने से जातक का भाग्योदय ३६वें वर्ष में होता है।

(१६) बुध सिंहस्थ, गुरु वृश्चिक का तथा शुक्र कुंभ का हो तो जातक एम. पी. का पद प्राप्त करता है।

(१७) वृश्चिक व धनु राशि में कोई ग्रह न हो तथा इन पर शुभ दृष्टि हो तो जातक लेखक बनता है।

(१८) गुरु सप्तम भाव में हो तो पत्नि को गर्भावस्था में अनिष्ट-कर एवं जीवन-हानि होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१९) वृष लग्न हो और शुक्र बलवान हो तो लग्नेश का षष्ठेश से सम्बन्ध हो जाने के कारण माता को वहिनादि से लाभ होगा।

(२०) वृष लग्न हो, १०वें भाव में राहु हो या मकर में, नवम् में मंगल, गुरु हों तो गंगा स्नान की प्राप्ति होती है।

(२१) वृष लग्न हो और मंगल, बुध, गुरु साथ हों तो बुध की महादशा में जातक पर कर्ज होता है।

(२२) लग्न में शुक्र व मंगल हो और नवम् में मकर का गुरु हो तो बुध व गुरु की दशा में भाग्योदय होगा।

(२३) यदि मंगल, बुध, शनि नवम् में हों, १०वें कुंभ का राहु हो तो मंगल तथा राहु की दशा में भाग्योदय होता है।

(२४) लग्न में राहु हो तो अरिष्ट भंग होता है।

(२५) वृष, सिंह, वृश्चिक व कुंभ राशि में कोई ग्रह न हो तो जारज सन्तान हो।

(२६) समस्त ग्रह २।६।८।१२वें स्थान में हों तो जारज सन्तान हो।

(२७) शुक्र व चन्द्रमा का योग हो एवं वृष लग्न हो तो जारज सन्तान होती है।

(२८) ६ठे, ८वें स्थान का स्वामी याने शुक्र या गुरु, चंद्र-मंगल से युक्त होकर सिंह राशि में स्थित हो तो जारज सन्तान होती है।

(२९) ६ठे, ९वें स्थान के स्वामी पाप ग्रहों से युक्त हों तो जारज सन्तान हो।

(३०) बुध/चन्द्रमा/शुक्र लग्न में हों तो जारज सन्तान होगी।

(३१) वृष लग्न हो, उसमें पूर्ण का चंद्रमा स्थित हो, कुंभ में शनि, सिंह में सूर्य, वृश्चिक में गुरु हो तो अधिक सम्पत्ति, वाहन व प्रभुता की प्राप्ति होती है।

(३२) राहु लग्न या २।३।४।५।६।८।९।११।१२ भाव में से कहीं भी स्थित हो एवं मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मीन में से किसी में स्थित हो तो जातक अवश्य ही धनी होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३३) वृष लग्न हो तथा सूर्य, बुध साथ हों तथा वृश्चिक के अतिरिक्त कहीं भी बैठे हों तो जातक बहुत बड़ा व्यापारी होता है।

(३४) लाभेश द्वादश स्थान में हो या भाग्येश, दशमेश व्यय स्थान में हों तो जातक दिवालिया होता है।

(३५) बुध (द्वितीयेश) ६।१०।११ भावों में हो तो जातक दिवालिया होता है।

(३६) लग्नेश शुक्र वक्री होकर ६।८।१२वें स्थान में हो तो जातक अवश्य ही दिवालिया होता है।

(३७) चंद्रमा वृश्चिक का हो तथा लग्नेश सुख भाव में स्थित हो तो ससुराल से धन प्राप्त होगा।

(३८) लग्नेश शुक्र से या लग्न से ३।११ स्थानों में बुध, चंद्र, मंगल व गुरु स्थित हों तो अधिक भाई व केतु स्थित हो तो बहिनें अधिक हों।

(३९) लग्न से/५वें स्थान का स्वामी (बुध) गुरु और शुक्र के साथ १।४।५।७।१०वें स्थानों में हो तो जातक विद्वान होता है। विद्या.

(४०) लग्न में शनि हो या गुरु मीन का हो तथा वृष लग्न हो तो जातक कवि होता है।

(४१) वृष लग्न हो, शनि से गुरु सप्तम भाव में हो अथवा शनि गुरु से ९वें पंचम का सम्बन्ध हो या ये ग्रह १।७।३।११।५ राशि के हों अथवा शनि-गुरु १।७, २।८, ३।९, ५।११ में हो तो जातक वकील, बैरिस्टर, प्रोफेसर, न्यायाधीश आदि बनता है।

(४२) वृष लग्न हो, ५वें भाव में स्थित राशि के नवांश शनि, बुध, शुक्र या चंद्र से युक्त हों तो कन्याएँ अधिक होती हैं।

(४३) सप्तमेश शुभ युक्त न होकर ६।८।१२वें भाव का हो या नीच का या अस्तगत हो तो विवाह ही नहीं होता या विधुर होता है। ← लग्नमंगेशकर

(४४) मंगल या शुक्र ३।६।१०।११।७वें स्थान में हो तो विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है। भाग्येश शनि होने से ३६वाँ वर्ष भाग्यो-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दय का होता है।

(४५) वृष लग्न हो तथा केन्द्र में गुरु व शुक्र होने से गंधर्व योग होता है। ऐसा जातक गायक बन ख्याति प्राप्त करता है तथा विदेश यात्राएँ करता है। लतामंगेशकर /

(४६) वृष लग्न हो तथा शुक्र ध्रुव केन्द्र में हो एवं नवमेश नवम भाव में ही हो तो विदेश-यात्रा का योग होता है।

(४७) मंगल कुंभ का हो तथा शनि अपनी उच्च राशि (मेष) में हो तो श्रीनाथ योग होता है। फलस्वरूप पारिवारिक जीवन सुखी, जातक घनवान होता है तथा उच्च पद की प्राप्ति करता है।

(४८) लग्नेश लग्न में ही हो तथा दशम पति व चतुर्थेश परस्पर स्थान परिवर्तन करते हों तो छाप होने से जातक घनवान होता ही है।

(४९) चन्द्रमा नवम भाव में व शनि तृतीय भाव में हो तो जलोदर का रोग होता है।

(५०) वृष लग्न हो तथा द्वादशेश द्वितीयेश के साथ शुक्र सुख स्थान में हो तो जातक कुष्ठ रोगी होता है।

(५१) चन्द्रमा, शनि व राहु तीनों ५वें भाव, मृत्यु भाव या द्वादश भाव में हों तो जातक का जीवन कलहपूर्ण रहता है।

(५२) लग्न में सुखेश हो तथा स्त्री भवन में स्व का मंगल हो या लग्न में शनि, ७।५।९वें भाव में मंगल हो तो जातक बातूनी, वक्रवादी, गप्पी व झगड़ालू होता है।

(५३) वृष लग्न हो, अष्टमेश व राहु या अष्टेश व केतु एक साथ बैठे हों तो जातक चाण्डाल तुल्य होता है। मंदबुद्धि, असन्तुष्ट व शरीर पर घाव का चिह्न लिए हुए होता है।

(५४) वृष का मंगल हो तथा शनि-सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखते हों तो शीतला योग होता है। फलस्वरूप जातक को जीवन में चेचक अवश्य ही निकलती है।

(५५) बुध और चन्द्रमा द्वितीय भाव में बैठे हों या लग्नेश व

१ ध्रुव = लग्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वितीयेश दोनों सूर्य के साथ द्वितीय भाव में हों या सूर्य, चन्द्र १२वें भावस्थ हों तो अंध योग होता है।

(५६) चन्द्रमा १०वें भाव में, मंगल सप्तम भावस्थ, सूर्य द्वितीयस्थ हो तो अंग-भंग होता है।

(५७) सूर्य-बुध सुख भवन में, शनि-चन्द्र १०वें, मंगल वृष का हो तो जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्य भोगता है।

(५८) चन्द्र वृश्चिक का हो, गुरु व बुध सुख भाव में हों तो जातक स्त्री का सुहाग अक्षुण्य रहता है।

(५९) वृष लग्न हो, चन्द्रमा कन्या का, सूर्य ४थे, शनि शत्रु भवन में बुध व सूर्य की युति होने तथा राहु की दृष्टि होने से तथा मंगल, राहु की युति हरनिया रोग उत्पन्न करता है।

(६०) शुक्र-बुध की युति दूसरे स्थान पर हो तथा मंगल साथ हो, तो त्वचा की चेतना चली जाती है। (Loss of Sensation in Skin) हाँ उस पर राहु, शनि की दृष्टि हो, सूर्य कर्क का हो तो मूक शक्ति को भी हानि देता है।

(६१) मंगल व शुक्र मीन का हो, बुध लग्न से ११वें हो, राहु लग्न में हो। सूर्य मेष का हो तथा चन्द्रमा स्व का हो तो जातक विषपान करता है।

(६२) लग्नाधिपति सप्तम भाव में हो, चन्द्रमा, राहु लग्न में हो, शनि-शुक्र की भी युति हो, मंगल मिथुन का हो तथा वह शुभ ग्रह से नहीं देखा जाता हो तो जातक नपुंसक होता है।

(६३) राहु व मंगल एकादश भाव में हों, शनि सूर्य लग्न में हो, शुक्र मेषस्थ हो तो जातक की सन्तान गूंगी व बहरी (Deaf and Dumb) होती है।

(६४) मंगल नीच का हो, सूर्य-चन्द्र दोनों मंगल से युति करें, शनि केन्द्र (ध्रुव) में हो तो जातक की मृत्यु आग से जल कर ही होती है।

(६५) वृष लग्न हो तथा नवमेश-दशमेश का सम्बन्ध भाग्य भाव

ध्रुव = लग्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में हो, चतुर्थेश-पञ्चमेश का सम्बन्ध चतुर्थ भाव में हो तो जातक लक्ष्याधिपति होता है।

(६६) लग्नेश सिंह राशिस्थ हो तथा उस पर शनि-राहु की दृष्टि न हो तो जातक को उच्च वाहन की प्राप्ति होती है।

(६७) गुरु कन्या का हो तथा उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, पञ्चमेश ६।८।१२वें स्थान में न हो या उच्च का हो, चन्द्रमा उच्च का हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त कर विदेश में शिक्षण-कार्य करता है।

(६८) मंगल वृश्चिक का हो तथा यदि शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक दूसरा विवाह करता है तथा उससे भी मतभेद रहता है।

(६९) मंगल लग्न में हो, शुक्र लग्नेश लग्न में हो, गुरु पञ्चम भाव में हो तो जातक व्यर्थ के खर्च, हानि, ऋण आदि से बचा रहता है।

(७०) शनि व मंगल ७वें भाव में हों तथा उनपर अन्य ग्रहों की दृष्टि न हो तो दत्तक जाने का योग बनता है।

अब मैं यहाँ कुछ ऐसे जातकों की कुण्डलियाँ देने का प्रयत्न करूँगा जिनका लग्न वृष रहा है।

१. लता मंगेशकर— २ ४ ५ ६ ७ ८ १
गुरु चन्द्रमा शुक्र सूर्य-बुध मंगल केतु शनि राहु

२. जगदीशचन्द्र बसु— २ ४ ५ ६ ८ ९ १० ११
गुरु शनि केतु चन्द्रमा सूर्य बुध शुक्र मंगल राहु

३. एक आदर्श कुण्डली— २ ४ ८ ९ १० ११
शनि केतु चन्द्र, बुध गुरु शुक्र सूर्य राहु मंगल

४. सेठ प्रदीप कुमार— ४ ६ ७ १० ११ १२ १
(लखनऊ) केतु चन्द्र शनि राहु बुध सूर्य मंगल, गुरु शुक्र

५. चीफ जस्टिश दीक्षित— २ ३ ४ ८ १० ११ १२
चन्द्रमा गुरु राहु मंगल केतु शुक्र शनि बुध, सूर्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६. महारानी विक्टोरिया—२ ६ १० १२ १
वृष सूर्य केतु गुरु मंगल, राहु बुध
चन्द्रमा शनि शुक्र

७. श्री कृष्ण—५ २ ४ ६ ८ १०
वृष सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध शनि केतु
गुरु शुक्र

८. महात्मा कबीर—२ ४ ६ ७ ११ १२
वृष चन्द्रमा गुरु राहु शनि मंगल केतु, सूर्य
बुध, शुक्र

९. श्यामाप्रसाद मुखर्जी—३ ४ ६ ७ ९ ११
कुम्भ सूर्य बुध मंगल राहु गुरु, शनि चन्द्रमा केतु
शुक्र

१०. टीकाराम ३ ४ ५ ९ १० ११ १२ १
पालीवाल—गुरु राहु चन्द्रमा मंगल केतु शनि बुध, शुक्र, सूर्य

११. आसुतोष मुकर्जी—२ ३ ६ ७ १
मेष बुध सूर्य शनि गुरु चन्द्रमा
शुक्र राहु मंगल
केतु

१२. तेज बहादुर सप्रु—६ ८ ९ १० ११ १२
मीन केतु सूर्य शुक्र शनि मंगल चन्द्रमा
बुध, गुरु राहु

१३. बर्नार्ड शॉ—२ ३ ४ ६ ७ १२
वृष चन्द्रमा बुध सूर्य केतु मंगल गुरु
शनि शुक्र राहु

१४. कृष्ण बहादुर थापा—१ | २ | ५ | ७ | ९
(नेपाल) सूर्य | मंगल | गुरु | बुध | चन्द्रमा
(धन) राहु | | शनि | शुक्र |
| | | केतु |

१५. उमर खय्याम—१ २ ३ ६ १० १२
मिथुन मंगल सूर्य चन्द्रमा राहु गुरु केतु
बुध शुक्र शनि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिथुन लग्न और योग

मिथुन लग्न होने पर भगवान भास्कर पराक्रमेश तथा चन्द्रमा द्वितीयेश होते हैं। शत्रु भवन के साथ ही साथ एकादशेश भी मंगल होते हैं। नपुंसक बुध ध्रुव केन्द्र के स्वामी होने के साथ सुखेश होते हैं। विद्यापति गुरु स्त्री भवन व कर्म भवन के अधिष्ठाता होते हैं। शुक्र प्रथम त्रिकोणपति व द्वादशेश होते हैं। क्रूर शनि मृत्यु भाव व भाग्येश होते हैं। राहु सुख स्थान के स्वामी होते हैं।

त्रिकोण के स्वामी शुक्र व शनि तथा दुः स्थान के अधिपति मंगल, शनि व शुक्र होते हैं। ध्रुव केन्द्र पति बुध तथा अन्य केन्द्रेश गुरु होते हैं। पणफर के स्वामी चन्द्रमा, शुक्र, शनि, मंगल होते हैं। आपोक्लिम पति सूर्य, मंगल, शनि, शुक्र तथा त्रिकेश मंगल, शनि व शुक्र उपचयी सूर्य, मंगल, गुरु होते हैं।

अब मैं मिथुन लग्न से होने वाले कुछ विशिष्ठ योग देने का प्रयत्न करूँगा !

(१) सूर्य एकादश भाव में, मंगल मृत्यु भवन में हो, शनि उच्च का हो तथा बुध त्रिकोण में हो तो जातक अवश्य ही मंत्री बनता है या राज्यपाल होता है।

(२) शुक्र, लग्नेश व दशमेश, दशम भाव में हो तो जातक अवश्य राज्य में उच्च स्थान प्राप्त करता है। हां, मंगल अवश्य ही १०वें भावस्थ हो।

(३) शुक्र पंचम भाव में, मंगल स्व का मेष में, गुरु द्वितीय भाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में हो तो जातक अवश्य ही शासन में उच्च पद प्राप्त करता है।

(४) लग्नेश दशमेश की किसी केन्द्र में युति हो तथा गुरु उसे देखता हो तो उत्तम राज्य योग होता है।

(५) सभी ग्रह परमोच्च में हों तथा बुध अपने उच्च के नवांश में हो तो जातक देश का सर्वश्रेष्ठ पद संभालता है।

(६) लग्न में बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र की युति हो तथा उन पर पाप ग्रहों की छाया न हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है।

(७) चन्द्रमा गुरु सहित ३।६।१०।११वें स्थान में हो तो जातक महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करता है।

(८) सूर्य सुख भाव में, गुरु १०वें तथा शुक्र त्रिकोण (५वें) में हो तो जातक एम० एल० ए० होता है।

(९) गुरु कर्क में तथा चन्द्रमा वृष का हो तो जातक नेता बनता है।

(१०) गुरु या शुक्र उच्च का हो तथा वह चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो जातक मंत्री बनता है।

(११) शनि मिथुन का, गुरु स्व का सप्तम भाव में तथा शुक्र की उस पर पूर्ण दृष्टि हो तो व्यक्ति राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है।

(१२) बुध, शुक्र व गुरु नवम् भाव में हो तथा इन पर मित्र ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक राजनीतिज्ञ बनता है।

(१३) गुरु द्वितीय भाव में तथा चन्द्रमा धनु राशि का हो तो जातक को उच्च पद की प्राप्ति होती है।

(१४) शनि अपने कारक स्थान, गुरु, चन्द्र के साथ ७वें स्थान में तथा बुध चतुर्थ भाव में हो तो जातक को उच्च श्रेणी की नौकरी प्राप्त होती है।

(१५) भाग्येश भाग्य भवन में बैठकर बुध से युति करे तो द्रव्य की प्राप्ति का योग होता है।

(१६) चन्द्रमा स्व का हो तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।

(१७) द्वितीयेश उच्च स्थान में बैठा हो तो पैतृक धन की प्राप्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होती है।

(१८) षष्ठेश, पंचमेश की युति होने से दरिद्र योग बनता है।

(१९) बुध सप्तम भाव में हो तथा द्वादशेश चतुर्थ भवन में हो तो जातक को ससुराल से अर्थ प्राप्ति होती है।

(२०) बलवान धनेश सातवें हो तथा शुक्र द्वारा देखा जाता हो तो ससुराल से धन की प्राप्ति होती है।

(२१) यदि बुध व चन्द्रमा १०वें स्थान पर हो तो यकायक अर्थ प्राप्ति होती है।

(२२) लग्नेश बुध निर्बल हो तथा शनि ४।५।९वें स्थान पर हो तो दिवालिया योग होता है।

(२३) मिथुन लग्न हो, शनि तुला का होने से दिवालिया योग बनता है।

(२४) सुखेश, कर्मेश परस्पर स्थान परिवर्तन करते हों तो जमींदार योग बनता है।

(२५) मिथुन लग्न में गुरु, शनि व मंगल लग्न में हों तो जमींदार योग होता है।

(२६) लग्न में शनि, आठवें स्थान पर राहु तथा छठे स्थान पर मंगल हो तो जातक को भारी दुःखों का सामना करना पड़ता है।

(२७) बुध वृष का, मंगल मीन का तथा सुख स्थान पर सूर्य-चंद्र साथ हो तो भारी दुःख का सामना करना पड़ता है।

(२८) मिथुन लग्न हो तथा सूर्य से नवें स्थान पर पाप ग्रह हो तो जातक गोद जाता है।

(२९) मिथुन लग्न में शुक्र त्रिकोण में, सप्तम में या कर्म स्थान में हो तो जातक को उत्तम विद्या योग होता है।

(३०) गुरु कर्क का हो तो उत्तम विद्या योग होगा। हाँ, मिथुन लग्न आवश्यक है।

(३१) गुरु कन्या का, बुध तुला का तथा पञ्चमेश भाग्य या कर्म भवन में हो तो उत्तम विद्या योग होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३२) रवि स्व का, रवि से पञ्चम में मंगल, शुक्र, शनि हो तो जातक आँग्ल भाषा का जानकार होता है।

(३३) सप्तमेश गुरु व तृतीयेश सूर्य का अन्योन्याश्रित योग होने से जातक के सन्तान बहुत होती है।

(३४) शुक्र कन्या का तथा सूर्य पंचम भाव में होने पर जातक के कन्याएँ अधिक होती हैं।

(३५) शुक्र धनु का, चंद्र मीन का तथा कन्या राशिस्थ शनि, मंगल, राहु हो तो जातक के सन्तान नहीं होती।

(३६) चंद्रमा, शनि, सूर्य आठवें भाव में हों तो अल्पायु योग होता है।

(३७) दिन का जन्म हो, मिथुन लग्न हो, चन्द्रमा मित्र के नवांश में हो तो धन-सुख मिलता है।

(३८) लग्नेश बुध पञ्चम भाव में तथा शुक्र लग्न में हो तो महाराज योग होता है।

(३९) बुध, गुरु, शुक्र क्रमश ४।७।१०वें स्थान में हों तथा अन्य ग्रह अन्यत्र तो जातक एम. पी. बनता है।

(४०) सभी ग्रह लग्न व त्रिकोणों में हों तो जातक सेनाध्यक्ष बनता है।

(४१) गुरु धनु का हो तथा शुक्र, मंगल कहीं भी एक साथ होने पर उस स्त्री को सन्तान नहीं होती।

(४२) लग्न से सप्तम भाव के मध्य सूर्य, मंगल, शनि हों तो जातक स्त्री को वैधव्य भोगना पड़ता है।

(४३) सप्तम स्थान में शनि, मंगल साथ हों तो स्त्री (जातक) के सन्तान होती ही नहीं।

(४४) स्त्री जातक के सप्तम भाव में सूर्य हो तो वह स्त्री दुष्टा होती है। पति से सदा अनबन रहती है तथा सन्तान गुणहीन होती है।

(४५) स्त्री की कुण्डली में मंगल सप्तम भाव में हो तो वह स्त्री पुरुष रत्त, कुकर्म तत्पर व सौभाग्यहीन होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४६) मिथुन का लग्न, कर्क का चंद्रमा एवं धनु का वृहस्पति सप्तम में हो तो वह स्त्री विश्वसुन्दरी का मुकुट धारण करती है।

(४७) बुध सातवें स्थान में शनि युक्त हो तो पति नपुंसक होता है।

(४८) मिथुन राशि का लग्न हो, बुध लाभ भवन में हो, उच्च के सूर्य के साथ जातक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ज्योतिषी होता है।

(४९) मिथुन लग्न हो, मंगल व लग्नेश दसवें भवन में हो, चंद्रमा व लग्नेश शनि द्वारा दृष्ट न हो तो जातक विदेश-यात्रा करता है।

(५०) शुक्र स्व का द्वादश भाव में लग्नेश के साथ हो तो जातक के नेत्र कमजोर होते हैं।

(५१) मिथुन लग्न हो, गुरु, चंद्र की युति कर्क में हो तो गज केशरी योग होता है। जातक विवेकी, सद्‌गुणी, नम्र, धनी होता है।

(५२) मिथुन लग्न हो, गुरु कर्क का, शनि तुला व सूर्य मेष राशि का होने से नृप योग होता है। जातक उच्च शासकीय पद प्राप्त करता है। उदाहरणार्थ मुरारजी देशाई की कुण्डली देखें।

(५३) मिथुन लग्न हो, शनि स्व (कुंभ) का त्रिकोण में पड़ा हो तथा दशमेश गुरु पच्चम भाव में बैठकर सुरपति योग बनाता है। ऐसा जातक अतुल ऐश्वर्य प्राप्त करता है।

(५४) नवमेश नवम में हो, लग्नेश लग्न में हो तो विदेश यात्रा का योग बनता है।

(५५) मिथुन लग्न हो तथा बुध, चंद्र ६ठे भाव में हों, केतु १०वें हो तो जातक को फुलबहरी (leucoderma) रोग होता है।

(५६) चंद्र, बुध का योग हो, केतु, मंगल की उन पर दृष्टि हो तथा दाएँ-बाएँ सूर्य, शनि हों तो जातक को निश्चय ही चर्म रोग होगा।

(५७) मिथुन लग्न हो, गुरु वृश्चिक का, राहु की दृष्टि हो, मंगल की भी दृष्टि हो तो मधुमेह वं संग्रहणी की बीमारी जातक को होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५८) मिथुन लग्न पर गुरु का दसम स्थान से पूर्ण प्रभाव हो, सूर्य मंगल की कन्या राशिस्थ होकर दृष्टि हो, केतु अष्टम् स्थान में हो शनि युक्त हो तो जातक अवश्य ही पागल होता है।

(५९) सूर्य, वुध सुख भवन में हों, शुक्र कन्या राशिस्थ हो, केतु १२वें भाव में हो, चंद्रमा सूर्य का हो तथा शनि से युति करे तो जातक को कुष्ठ का रोग होता हैं।

(६०) लग्नेश व एकादशेश का योग षष्टम भाव में होने तथा सूर्य व शनि के मध्यत्व में होने एवं द्वितीय भाव से राहु की दृष्टि होने से उन्माद योग होता है।

(६१) मिथुन लग्न हो तथा राहु ३रे भाव में हो, सूर्य १०वें भाव में मीन का हो तथा द्वितीय स्थान में मंगल हो तो जातक का भाग्योदय १३वें वर्ष होता है।

(६२) १०वें स्थान में राहु हो, दशमेश गुरु अपनी उच्च राशि कर्क में हो तथा उस पर शनि की दृष्टि हो तो जातक वहुत वड़ा व्यापारी होता है।

(६३) सूर्य मेष का हो तथा सिंह राशि में गुरु हो तथा शुक्र भाग्य स्थान में हो तो जातक का भाग्योदय १३वें वर्ष होता है।

(६४) नवमांश कुण्डली में पञ्चम् भाव में जो राशि हो, उस राशि का स्वामी लग्न कुण्डली में उच्च राशि में स्थित हो और लग्न से १०वें स्थान के स्वामी के साथ हो तो अंगुली योग द्वारा जातक का भाग्योदय १२ वर्ष की अवस्था में होता है।

(६५) सप्तमेश अपने मूल त्रिकोण में हो तथा धनेश के साथ हो और लग्नेश अपनी उच्च राशि में हो तो जातक का विवाह उच्च कुल में होता है तथा जातक का १८वें वर्ष भाग्योदय होता है।

(६६) यदि मंगल व शनि लग्न में हो, वुध के नवांश में हो तो वच्चा दाँत सहित जन्म लेता है।

(६७) यदि सूर्य-चन्द्र और शनि लग्न में हों तथा मंगल सप्तम में हो तो जातक की मृत्यु यन्त्र पीड़ा से होती है। मशीन में दवकर,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रेल, मोटर, ट्रक के नीचे आकर कुचल जाने से।

(६८) सप्तम में सूर्य, मंगल, चंद्र या शनि हो तो अन्य जाति की लड़की से विवाह होता है।

(६९) मंगल, शनि सप्तम में हो, शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा किसी राशि में पुरुष ग्रह व स्त्री ग्रह दोनों एक साथ बैठे हों तो वृद्धावस्था में अधिक उम्र की स्त्री प्राप्त होती है।

(७०) क्रूर ग्रह अष्टम में वैधव्य करता है, वह वैधव्य किस वय में होगा इसका निर्णय अष्टम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो उस नवांश स्वामी ग्रह की अवस्था में वैधव्य योग होता है।

कुछ विशिष्ट मिथुन लग्न की कुण्डलियाँ—

१. डॉ० जाकिर हुसैन—कर्क सिंह वृश्चिक मकर मीन मेष वृष
केतु गुरु शनि राहु, बुध, सूर्य शुक्र चं० मं०

२. श्री रंगराव—मिथुन कन्या तुला मीन मेष
गुरु केतु, सूर्य चं०, बुध, शुक्र, शनि राहु मंगल

३. मुरारजी देशीय—कर्क सिंह तुला मकर कुंभ
गुरु चन्द्रमा, केतु शनि मंगल सूर्य
बुध राहु
शुक्र

४. स्व० महाराजा मानसिंह—मिथुन सिंह कन्या तुल मेष
चन्द्रमा सूर्य बुध गुरु मंगल
शुक्र केतु शनि
राहु

५. महारानी वड़ौदा—मिथुन कर्क सिंह कन्या वृश्चिक वृष
चन्द्रमा बुध सूर्य शनि गुरु, केतु शुक्र, राहु
मंगल

६. जुगलकिशोर विड़ला—

मिथुन	तुला	धनु	मेष	वृष
गुरु	राहु	चन्द्रमा	मंगल, शुक्र केतु	शनि बुध सूर्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७. रामकृष्ण डालमिया—कन्या तुल धनु मीन मेष वृषभ
शनि केतु चन्द्रमा सूर्य गुरु मंगल
बुध राहु
शुक्र

८. नाथुराम गौड़से—मिथुन कन्या वृश्चिक मीन मेष वृष
मंगल चन्द्रमा केतु शुक्र शनि राहु
गुरु बुध
सूर्य

९. काका हाथरसी—मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला मकर कुंभ
गुरु राहु मंगल, बुध सूर्य शुक्र केतु शनि
चन्द्रमा

१०. संयुक्तराष्ट्र संघ—कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु वृष
गुरु शनि मंगल शुक्र बुध केतु
चन्द्र राहु सूर्य

११. श्री दलायीलामा—मिथुन कर्क कन्या तुल मकर कुंभ वृष
बुध शुक्र, केतु मंगल गुरु राहु शनि सूर्य
चन्द्रमा

१२. सम्राट कैसर जर्मनी—कर्क सिंह वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन वृष
शनि केतु चन्द्रमा बुध सूर्य राहु मं० गुरु
शुक्र

१३. मारिल एन्टोनिट—मिथुन कन्या तुल वृश्चिक मकर मीन
चन्द्रमा शनि गुरु मंगल शुक्र राहु
बुध सूर्य
केतु

१४. क्रिस्टाइन कीलर—मकर कुंभ वृष सिंह
बुध केतु चन्द्रमा राहु
शुक्र सूर्य मंगल
शनि गुरु

१५. जॉर्ज वाशिगटन—मियुन कन्या वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन
केतु गुरु मंगल चन्द्रमा बुध सूर्य शुक्र
राहु शनि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्क लग्न और योग

लग्न कर्क होने पर सूर्य द्वितीयेश व चन्द्रमा लग्नेश होंगे। क्रूर मंगल पंचमेश एवं दशम भाव के भी स्वामी होते हैं। वुध देव तृतीयेश-द्वादशेश तथा देव गुरु वृहस्पति शत्रु भवन के अधिपति होने के साथ ही साथ भाग्येश होते हैं। शुक्र सुखेश तथा एकादशेश तथा शनि भगवान स्त्री भवन एवं मृत्यु भवन के स्वामी होते हैं।

ध्रुव केन्द्र पति चन्द्रमा तथा केन्द्र के स्वामी शुक्र, शनि, मंगल एवं चन्द्रमा होते हैं। पणफर पति सूर्य, मंगल, शनि, शुक्र तथा आपोक्लिम भवन पति वुध, गुरु होते हैं। उपचय के स्वामी वुध, मंगल, शुक्र होते हैं। त्रिकेश गुरु, शनि व वुध एवं त्रिकोण के स्वामी मंगल-गुरु होते हैं।

अब मैं कर्क लग्न से सम्बन्धित होने वाले कुछ विशिष्ठ योग देने का प्रयत्न करूँगा!

(१) चन्द्रमा स्वगृही हो तथा शनि से युति एवं मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक जौहरी होता है।

(२) चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश ६।८।१२ न होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो या उच्च का (मीन) हो। चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो जातक को उच्च वाहन की प्राप्ति होती है।

(३) कर्क लग्न हो तथा लग्नेश मृत्यु भाव में हो, षष्ठेश गुरु पर शनि की दृष्टि हो तो जातक दमे का रोगी होता है।

(४) गुरु त्रिकोणपति होकर उच्च का लग्न में हो तो हंस योग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता है ऐसा व्यक्ति निष्पक्ष न्यायकर्त्ता, बात का धनी एवं चुम्बकीय आकर्षण रखने वाला होता है ।

(५) शुक्र स्वराशि का होकर या मूल त्रिकोण या उच्च राशि का होकर केन्द्र में स्थित हो तो मालव्य योग होता है। ऐसा व्यक्ति आकर्षक व सुन्दर होता है। पतले ओठ, लाल वर्ण, लम्बी नाक, सुन्दर कपोल व आकर्षक व्यक्तित्व लिए हुए होता है।

(६) शनि अपनी राशि का या मूल त्रिकोण या उच्च का होकर केन्द्र में हो तो शश योग होता है। ऐसा जातक राजनीति विषारद, नगर-पालिका अध्यक्ष या प्रसिद्ध नेता होता है। राजा तुल्य आनन्द भी भोगता है।

(७) नवमेश और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों तथा लग्नेश बलवान हो तो जातक शरीर से बलिष्ठ, वीर व दृढ़ चरित्र वाला होता है। मिलिट्री या सेना में उच्च पद प्राप्त करता है।

(८) चतुर्थ भाव का स्वामी अपने उच्च, नीच या स्व राशि पर हो एवं दशम भाव के स्वामी के साथ बैठा हो या देखा जाता हो तो जातक वीर व साहसी के साथ-साथ मूर्ख भी होता है और मूर्खता के कारण ही या स्वयं की असफल नीति के कारण पतन होता है।

(९) पंचम स्थान पर सूर्य व बुध की युति हो तो बुध आदित्य योग होता है। जातक अत्यन्त बुद्धिमान, चतुर, कठिनाइयों में भी अडिग रहने में समर्थ हो तथा वह अपने कार्यों से सर्वत्र विख्यात होता है।

✓ नोट—इस योग में बुध का १० अंशों से अधिक होना आवश्यक है।

(१०) लग्न में गुरु, चन्द्र हों एवं उन्हें दो पाप ग्रह देखते हों तो राजभंग योग होता है।

(११) कर्क लग्न हो, लग्न में शनि हो, चन्द्रमा उसे पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो गड्ढे या खाई में जन्म हो तथा जातक कुएँ, तालाब, बाग आदि के व्यापार से आजीविका उपार्जन करता है।

(१२) कर्क लग्न हो, सब क्रूर ग्रह चक्र के पूर्व भाग में हों और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दूसरे भाग में सौम्य ग्रह हों तो वालक की शीघ्र मृत्यु होती है।

(१३) लग्न में चन्द्रमा, ८वें मंगल, ९वें सूर्य, १२वें भाव में शनि हो तो भी वालक की शीघ्र ही मृत्यु होती है।

(१४) पंचम या नवम् में बुध हो और अन्य ग्रह निर्वल हों तो मुख, चरण, हस्त आदि दुगुने पर पेट १ ही होता है।

(१५) नवम से नवम अर्थात् लग्न से पंचम में वृहस्पति हो और उस स्थान का स्वामी शुभ ग्रह से युक्त हो और दशम में शनि हो तो जातक को ६३वें वर्ष प्रवल राजयोग होता है।

(१६) लग्न से नवम का स्वामी सप्तम से नवम अर्थात् लग्न से तृतीय स्थान में हो तथा वृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक का भाग्योदय ८वें वर्ष ही होता है।

(१७) नवांश कुण्डली में पंचमेश हो वह लग्न कुण्डली में उच्च राशि में स्थित हो और लग्न से १०वें राशि के स्वामी के साथ हो तो जातक का भाग्योदय १२वें वर्ष हो!

(१८) वुध कर्क राशिस्थ हो तथा सूर्य से युति हो, मंगल भी कर्क का हो। गुरु, सिंह का हो, केतु षष्ट भाव में हो तो फुलवहरी या (Leucoderma) होता है।

(१९) शुक्र एकादश से पंचम अर्थात् लग्न से तीसरे हो (नीच का) वुध चतुर्थ भाव में सूर्य शनि के साथ वुध हो तो वड़ी वहिन के पेट में कैंसर का रोग हो।

(२०) शुक्र द्वादश स्थान में एवं शनि मीन का हो, राहु भी १२वें हो तो वहिन को स्नायु रोग हो!

(२१) लग्न में सूर्य, मंगल क्रूर व वुध सौम्य ग्रह हो, चन्द्रमा त्रिकोण (५) में हो तो जातक २२ वर्ष से पूर्व ही रोगी हो।

(२२) सूर्य, वुध, राहु लग्न में हो तथा उन्हें कोई शुभ ग्रह न देखता हो तो स्वजन का शोक, धन विनाशक 'रिहा' योग होता है।

(२३) कर्क लग्न हो, पंचमेश और गुरु, वुध, चन्द्रमा ये कर्क राशि में हों नवम भाव में शुक्र हो तो 'तगी' योग होता है। इस योग से धर्म,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाग्य, यश, सन्तान-सुख आदि का लाभ मिलता है।

(२४) गुरु शत्रु भावस्थ हो तथा केतु से युति करे तो जातक बहु ऐश्वर्यवान, योग्य व राजनीति पटु होता है।

(२५) केन्द्र व त्रिकोण पति मंगल चन्द्रमा से योग करे धन स्था में तो जातक स्त्री विवाहोपरान्त लखपति बनेगी।

(२६) कर्क लग्न की कुण्डली में शुक्र १२वें या २रे भाव में हो तो जातक धनवान होता है।

(२७) कर्क लग्न हो। चन्द्रमा, पंचमेश व भाग्येश दूसरे भाव में हो तथा शुक्र, सूर्य, वृश्चिक राशिस्थ हों तो जातक भिक्षुक के घर में जन्म लेकर भी करोड़पति बनता है।

(२८) सूर्य स्व का हो, बुध गुरु के साथ तीसरे भाव में हो, मंगल ६ठे भावस्थ हो तो व्यक्ति अपने बाहुबल से श्रेष्ठ धन लाभ करता है।

(२९) बुध, शुक्र के साथ पंचम भाव में हो तो बुध अपनी दशा व अन्तर्दशा में अर्थ प्राप्ति करवाता है।

(३०) ११वें भाव में बुध, शुक्र, चन्द्र हो तथा १०वें भाव में, गुरु लग्न में हो तो जातक विश्व-विख्यात होता है।

(३१) ११वें भाव में बुध, शुक्र एवं चन्द्र हो तथा सूर्य दशम भाव में एवं गुरु लग्न में हो तो व्यक्ति विश्व-विख्यात कीर्तियुक्त होता है। इससे सूर्य व गुरु दोनों उच्च के तथा भाग्य भाव पर भाग्येश की दृष्टि एवं ११वें चन्द्र उच्च का व गुरु स्व का होगा।

(३२) कर्क लग्न एवं सूर्य, मंगल दशम भाव में होने से मंगल की दशा में जातक लखपति होगा पर गुरु की दशा मारकेश बनेगी।

(३३) सूर्य स्वराशिस्थ, बुध तीसरे भाव में स्व राशि में, गुरु भी तृतीय भाव में व मंगल धनु राशि में हो तो जातक अपने बाहुबल से श्रेष्ठ अर्थ प्राप्ति करता है।

(३४) बुध, शुक्र १२वें भाव में हों तो शुक्र की दशा में जातक ख्याति, यश एवं अर्थ लाभ करता है।

(३५) कर्क लग्न में चन्द्र व गुरु की ध्रुव केन्द्र में युति उत्तम राज-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योग करती है।

(३६) बुध का सम्बन्ध द्वितीयेश व लग्नेश से कहीं भी हो तो वह जातक साहित्यानुरागी होता है।

(३७) कर्क लग्न हो तथा कर्म भाव में सूर्य, मंगल, शनि कुर्मी-दरिद्र व दुष्ट सन्तान उत्पन्न करता है। लग्नेश १०वें में हो तो कीर्ति, शुक्र लक्ष्मी, बुध सौन्दर्य, गुरु शुभ कर्मी प्रदान करता है।

(३८) शनि सुख भाव में, गुरु लग्न में लग्नेश के साथ, सूर्य उच्च का तथा मंगल मकर का हो तो उत्तमातित्तम राजयोग होता है।

(३९) यदि बुध लग्न में हो तो धन कमाई का साधन दुर्लभता से हो। वदन में कुन्दन की झलक हो, क्रूर ग्रह अपना असर भी नहीं करते। सन्तान बहुत हो, पंडित हो। वैद्यक का अभ्यास हो परन्तु रोगियों का इलाज अच्छा न हो पाये।

(४०) मंगल १०वें घर में हो तो मोक्षाधिकारी होता है, सन्तोषी हो, मकान की चिन्ता बनी रहे, धनाभाव रहे, निम्न कुल का होकर भी सबको दवा लेता है।

(४१) धनेश यदि धनभाव या केन्द्र त्रिकोण में हो तो धन की वृद्धि व ६।८।१२ इन स्थानों में हो तो धन की हानि होती है।

(४२) धनेश केन्द्र में हो, उससे त्रिकोण में लाभेश या शुक्र, गुरु से दृष्ट हो तो पूर्ण धन लाभ होगा।

(४३) धनेश सूर्य व लाभेश शुक्र दोनों ही अस्त हों या पाप युक्त हों तो जन्म से ही जातक धनहीन होता है।

(४४) पंचम स्थान में मंगल, राहु हों, तो वह मनुष्य सन्तान होते हुए भी सन्तान-सुख प्राप्त नहीं कर पाता।

(४५) लग्नेश चन्द्रमा तथा सूर्य अष्टम स्थान में हो तो वह मनुष्य हमेशा बीमार, दुर्बल, पागल व चिड़चिड़े स्वभाव का होता है।

(४६) चन्द्रमा स्व का हो, शुक्र, बुध सुख भाव में हों एवं शत्रु भाव में गुरु होने पर एक विशिष्ट राजयोग होता है।

(४७) कर्क लग्न हो उस पर गुरु भी २० अंश का हो व ३ ग्रह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केन्द्र में हो तो जातक ब्रह्म पद को प्राप्त करता है।

(४८) चन्द्रमा व पंचमाधिपति मंगल का सप्तम भाव में योग या चंद्र, गुरु की युति अथवा लग्नेश, भाग्येश का योग राजयोग बनाता है।

(४६) कर्क लग्न हो, बुध पञ्चम भाव में, गुरु द्वादश भाव में, चंद्र व केतु तृतीय, मंगल दशम, शनि चतुर्थ, सूर्य-शुक्र षष्ट हों तो विपरीत राजयोग होता है।

(५०) लग्नेश षष्ठेश, द्वादशेश-षष्टमेश के नवांश में पड़ा हो और उसको कोई भी शुभ या अशुभ ग्रह न देख रहा हो तो राजकुल में उत्पन्न राजा के ऐश्वर्य को भी नाश करने वाला होता है।

(५१) तृतीय तथा द्वादश का स्वामी तृतीय से तृतीय तथा द्वादश से षष्ठ होकर तथा सूर्य शनि के पाप मध्यत्व में होकर तथा पापी मंगल से दृष्ट होकर अपनी अपूर्व निर्वलता के कारण विपरीत राजयोग होता है।

(५२) सूर्य, शुक्र षष्ठ स्थान में हों, गुरु मिथुन का हो, चंद्रमा तृतीय हो तो जातक करोड़पति होता है।

(५३) बुध, गुरु-सूर्य के साथ हों, शनि की पूर्ण दृष्टि हो, राहु भाग्य भवन में हो तो जातक करोड़पति बनता है।

(५४) सूर्य नीच का हो, शुक्र एवं मंगल केन्द्र में कहीं पड़े हों तो नीच भंग योग होता है।

(५५) चन्द्रमा वृश्चिक का नीच, सूर्य तुला का सुख भाव में नीच का चन्द्रमा से दशम में शुक्र, मंगल हो तो जातक अतुल धनवान, लक्ष्मीवान होता है।

(५६) कर्क का चन्द्रमा, कर्क लग्न, चन्द्रमा से शुक्र, बुध, गुरु, ६ठे, ७वें, ८वें हों एवं सूर्य मृत्यु भाव में हो तो जातक आजीवन ऐश्वर्य भोगता है।

(५७) चंद्रमा मकर का हो, गुरु वृष का हो तो जातक को पूर्ण ऐश्वर्य, यश, स्वास्थ्य, पदवी, कीर्ति आदि की प्राप्ति होती है।

(५८) गुरु पंचम, चंद्रमा सप्तम में, मंगल तुला का हो, सूर्य भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुरु के साथ हो तो जातक करोड़पति होता है।

(५६) चन्द्रमा स्व का हो, मंगल ३रे भाव में, बुध, शुक्र, गुरु की मेष पर दृष्टि हो तो जातक को अद्वितीय राज्य, ख्याति व पद प्राप्त होता है।

(६०) मंगल मीन का, गुरु, बुध धनु राशि में षष्टम भाव में हों व चन्द्रमा लग्नेश हो तो जातक अभिनेता बनता है।

(६१) कर्क लग्न हो, गुरु, केतु षष्टम स्थान में हों, सूर्य पञ्चम भाव में, मंगल की गुरु पर दृष्टि हो तो जातक सत्ताधारी होता है एवं जबरदस्त शत्रु से टक्कर लेता है।

(६२) कर्क लग्न हो, लग्न पर गुरु की पञ्चम व चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में हो, सूर्य, बुध शत्रु भाव में तथा शुक्र, मंगल की युति पंचम भाव में हो तो जातक खूब ऐश्वर्य भोगता है।

(६३) चन्द्रमा सप्तम भाव में हो, शुक्र १०वें, गुरु-शनि द्वितीय भाव मे बुध स्व का द्वादश में हो तो जातक कर्नल का पद पाता है।

(६४) गुरु लाभ भाव में हो तथा चन्द्रमा गुरु के साथ हो। सूर्य लग्न में हो, बुध, शुक्र की युति द्वितीय भाव में हो तो जातक को देव कृपा से अर्थ-लाभ होता है।

(६५) शुक्र मिथुन का हो द्वादश भाव में, लग्न में सूर्य, तृतीयेश एवं कर्मेश हो तो जातक साधारण अर्थोपार्जन कर आजीविका चलाता है।

(६६) गुरु मंगल के नवांश में हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो एवं मेष का सूर्य दशम भाव में स्थित हो तो जातक यशस्वी राजनीतिज्ञ होता है।

(६७) उच्च का गुरु केन्द्र में तथा शुक्र कर्म भाव में हो तो जातक राजनीति में पटु होता है।

(६८) वृश्चिक व मीन राशि में पाप ग्रह स्थित हों एवं किसी भी राशि के अंतिम अंशों में व वृष राशि में चन्द्र स्थित हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जीवन-भर के लिए मूक एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ५ वर्ष उपरान्त वालक वोलता है।

(६९) लग्नेश व धनेश चन्द्रमा व सूर्य ६।८।१२वें भाव में हों और चन्द्र-सूर्य सिंह राशि के लग्न में स्थित हों तथा शनि की दृष्टि हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तो नेत्र ज्योतिहीन होते हैं।

(७०) लग्न से गुरु केन्द्र में हो तथा केवल शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तथा अस्त, नीच या शत्रु राशि में न हो तो जातक मुख्यमंत्री बनता है।

अब मैं इन योगों पर आधारित कुछ विशिष्ट कुण्डलियाँ यहाँ देने का प्रयास कर रहा हूँ।

१. श्री रामचन्द्र जी—

मेष	वृष	कर्क	कन्या	तुल	मकर	मीन
सूर्य	बुध	चन्द्रमा गुरु	राहु	शनि	मंगल	केतु शुक्र

२. राजा विक्रम (उज्जैन)—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	धनु
सूर्य	बुध शुक्र	शनि केतु	गुरु	चन्द्रमा मंगल	राहु

३. आदि शंकराचार्य—

मेष	वृष	मिथुन	धनु	वृश्चिक	कुंभ	मीन
सूर्य बुध शुक्र	राहु	चन्द्रमा	शनि	केतु	गुरु	मंगल

४. त्याग राज—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	मकर
सूर्य बुध	शुक्र शनि	मंगल	चन्द्रमा केतु	गुरु	राहु

५. श्री शिवानन्द जी—

मेष	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	मकर
चन्द्रमा	शनि राहु	सूर्य मंगल	बुध शुक्र	गुरु	केतु

६. योगीराज अरविंद घोष—

वृष	कर्क	सिंह	वृश्चिक	धनु
राहु	मंगल गुरु	शुक्र बुध सूर्य	केतु	चन्द्रमा शनि

७. रामानुजाचार्य—

मेष	वृष	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	धनु
सूर्य बुध शुक्र	राहु	चन्द्रमा गुरु	मंगल	केतु	शनि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८. रणजीत सिंह—

मेष	वृष	कन्या	तुल	वृश्चिक
राहु	चन्द्रमा	मंगल	गुरु	वुध
		शुक्र	केतु	शनि
				सूर्य

रणजीत सिंह

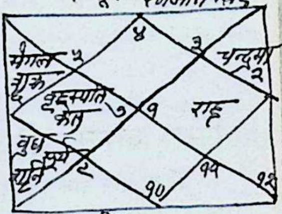

९. चंगेज खां— R.

मेष	कन्या	तुल
राहु	सूर्य	केतु
	मंगल	चन्द्रमा
	वुध	
	गुरु	
	शुक्र	
	शनि	

१०. ~~तिलक~~ लोकमान्य —

~~मिथुन~~	~~कर्क~~	~~तुल~~	~~कन्या~~	~~मीन~~
~~वुध~~	~~सूर्य~~	~~मंगल~~	~~केतु~~	~~चन्द्रमा~~
~~शनि~~	~~शुक्र~~			~~गुरु~~
	वुध·			~~राहु~~

११. नाथुराम मिर्धा—

वृष	सिंह	कन्या	तुल	मीन
चन्द्रमा	मंगल	गुरु	सूर्य	केतु
		शुक्र	वुध	
		शनि		
		राहु		

१२. मोतीलाल नेहरू—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	धनु	मीन
सूर्य	मंगल	केतु	गुरु	शनि	राहु	चन्द्रमा
वुध						
शुक्र						

१३. जवाहर नेहरू— R

मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चिक	धनु
राहु	चन्द्रमा	शनि	मंगल	वुध	सूर्य	गुरु
				शुक्र		केतु

१४. इंदिरा गांधी— R.

वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	वृश्चिक	धनु	मकर
गुरु	केतु	शनि	मंगल	सूर्य	शुक्र	चन्द्रमा
				वुध	राहु	

१५. कामराज—

मिथुन	सिंह	कन्या	मकर	कुंभ	मीन
सूर्य	शुक्र	मंगल	शनि	चन्द्रमा	गुरु
वुध		राहु			केतु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिंह लग्न और योग

सिंह लग्न होने पर भगवान सूर्य लग्नेश, चन्द्रमा द्वादशेश तथा मंगल भाग्येश व सुख स्थान के भी स्वामी होते हैं। बुध देव एकादशेश होकर द्वितीयेश होते हैं। गुरु प्रथम त्रिकोण तथा अष्टम् स्थान के अधिपति तथा कर्म स्थान व तृतीयेश शुक्र बन जाते हैं। शनि देव शत्रु भाव के स्वामी होकर कलत्रु (पत्नी) भाव के भी स्वामी होते हैं। ध्रुव केन्द्र पति सूर्य तथा अन्य केन्द्राधिपति मंगल, शुक्र, शनि होते हैं। त्रिकोणेश गुरु, मंगल तथा दुः स्थानों के स्वामी शनि, गुरु, चन्द्रमा होते हैं। पणफर स्थानपति बुध, गुरु एवं उपचयपति शुक्र, शनि, बुध होते हैं। आपोक्लिम भाव के स्वामी शुक्र शनि, मंगल व चन्द्रमा होता है। त्रिकेश शनि, गुरु व चन्द्रमा होते हैं।

अब मैं सिंह लग्न पर आधारित विभिन्न योग देने का प्रयत्न करूंगा।

(१) लग्नेश धन भवन में हो, गुरु १०वें भाव में हो तो जातक कपड़े का व्यवसाय सफलतापूर्वक करता है।

(२) गुरु सिंह लग्न में हो एवं पंचम भाव पर दृष्टि होने से जातक के पुत्र अधिक होते हैं।

(३) सिंह लग्न हो, शत्रु भवन का स्वामी एकादश स्थान में हो सूर्य अष्टम् भाव में हो तो जातक बहरा हो।

(४) सिंह लग्न हो, शनि तुला राशिस्थ हो तो जातक के बड़ा भाई होता ही नहीं। साहस, वीरता, शौर्य में ये अग्रगण्य रहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५) सिंह लग्न की कुण्डली में राहु तीसरे भवन में हो तो भाइयों की वृद्धि करता है।

(६) १०वें भाव में सूर्य हो, शुक्र व पत्नी भाव का स्वामी शनि ३रे स्थान में हो तो रवियोग होता है। ऐसा जातक नौकरी में उच्च पद प्राप्त करता है, सफल वैज्ञानिक होता है। जीवन में १५वें वर्ष के बाद प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

(७) लग्नेश व द्वितीयेश यदि तुला राशि में हों तो जातक को भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है और भाइयों द्वारा कमाया गया धन भोगता है। सूर्य र बुध

(८) शुक्र, मंगल की युति यदि आठवें भाव में हो तो जातक के भाइयों का नाश उसकी नजरों के सामने ही हो जाता है।

(९) जन्मकुण्डली में मंगल शत्रु भवन में उच्च का तथा नवांश में वृश्चिक या मेष का हो तो जातक युद्ध सम्बंधी कार्यों में प्रवीण होता है।

(१०) सूर्य व शनि वृश्चिक राशि में युति करते हों तो जातक को उच्च वाहन की प्राप्ति होती है।

(११) द्वादशेश, द्वितीयेश, अष्टमेश व दशमेश चारों केन्द्र में या चतुर्थ भाव में हों तो व्यक्ति हँसमुख, उच्च व्यक्तित्व वाला, धीर, गंभीर सर्वगुण सम्पन्न व सौभाग्यशाली होता है। चन्द्र, बुध, बृहस्पति शुक्र

(१२) सिंह लग्न हो तथा मंगल स्व का चतुर्थ भाव में हो तो रुचक योग होता है। व्यक्ति ऊंचा, लम्बा, दृढ़ शरीर, व्यापारी, सेना में उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है।

(१३) शुक्र बलवान होकर चतुर्थेश के साथ चतुर्थ भाव में हो तो जातक को आजीवन सुख प्राप्त होता है। शुक्र, मंगल.

(१४) शनि बलहीन होकर पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक शत्रुओं से युद्ध करते हुए अमर लोक को जाता है।

(१५) सप्तम भाव में मकर (कर्म) का गुरु हो तो उसे स्त्री का सुख अल्प ही मिलता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१६) अष्टम भाव में मीन राशि हो तो उसे निश्चय ही वृद्धावस्था में अतिसार रोग होता है। पित्त-ज्वर की अधिकता से भी मृत्यु संभव है। जलघात भी संभव है।

(१७) लाभेश नवम भाव में दशमेश से युक्त हो तो जातक I.A.S. आफीसर बनता है।

(१८) नवम भाव में चन्द्र, बुध हो तो जातक पंडित होता है।

(१९) नवम भाव में मंगल की राशि हो तो २८वें वर्ष में भाग्योदय होता है।

(२०) चन्द्रमा १०वें उच्च का हो तो जातक पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। लोकप्रियता अर्जित करता है।

(२१) शुक्र सूर्य के नवांश में हो तो जातक ऊन, दवा, घास, वान, सोना, मोती आदि के व्यापार से अर्थ उपार्जित करता है।

(२२) १२वें भाव में चन्द्रमा, शुक्र व गुरु हों तो जातक धनवान होता है।

(२३) लग्नेश, दशमेश सूर्य, शुक्र द्वादश भाव में हों तथा भाग्येश तीसरे भाव में हो तो शंख योग होता है। ऐसा जातक देश-विदेश में यशोपार्जन करता है।

(२४) चन्द्रमा, बुध, गुरु व शुक्र ९ या ११वें भाव में हो तथा सूर्य, मंगल, शनि तीनों क्रूर ग्रह शत्रु भाव तथा १०वें भावस्थ हों तो पूर्ण राज्य योग होता है।

(२५) चन्द्रमा लग्न में हो, गुरु चतुर्थ स्थान में, शुक्र १०वें स्थान में तथा शनि-देव स्व.का पञ्चम भाव में हो तो जातक अति उच्च पद प्राप्त करता है।

(२६) गुरु लग्न में हो, बुध केन्द्र स्थान में नवमेश या दशमेश से युक्त हो तो ऐश्वर्यवान जातक होता है।

(२७) शुक्र कन्या का द्वितीय भाव में हो व लग्नेश मेष का हो तो जातक गुणी, राज्य पूज्य व उच्च शासनाधिकारी होता है।

(२८) लग्नेश सूर्य भाग्य भवन में तथा शुक्र तुला या मीन का हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
इस पर अन्य किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो जातक ऐश्वर्य भोगता है। उच्च वाहन की प्राप्ति होती है।

(२९) मंगल लग्न में एवं शनि द्वारा दृष्ट हो तो देव योग होता है। जातक सभी सुख भोगता है, प्रसिद्धि प्राप्त करता है, शान्त चित्त होता है।

(३०) नवमेश जहाँ स्थित हो, उसका नवांशेश चौथे या ५वें भाव में हो तो रुद्र योग होता है। जातक उच्च पद की प्राप्ति करता है।

(३१) लग्न में गुरु, १०वें बुध या ४-७वें बुध एवं उसे नवमेश देखता हो तो जातक लक्ष्मीवान होता है।

(३२) राहु वृष राशि का हो, शनि लाभ भाव में तथा भाग्येश उसे देख रहा हो। लग्नेश नीचस्थ ग्रह से युत न हो तो जातक आनंदमय जीवन व्यतीत करता है। उसे आर्थिक चिन्ता कभी नहीं रहती।

(३३) सूर्य मेष का हो, चन्द्रमा द्वादश भाव में, मंगल वृश्चिक राशि का बुध स्व राशि में, शुक्र तृतीयेश या शनि शत्रु भाव में हो तो जातक पूर्ण भाग्यवान होता है।

(३४) मंगल मकर का व चन्द्रमा द्वादश भाव में हो तो दिव्य योग होता है, ऐसा जातक राजा के तुल्य आनन्दों का भोग करता है।

(३५) मंगल उच्च का हो उसे सूर्य, चन्द्र व गुरु देखते हों तो जातक को पूर्ण वाहन सुख, पारिवारिक एवं आर्थिक सुख मिलता है।

(३६) बुध, सूर्य जन्म के ११ भाव में हों तो जातक आजीवन आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है।

(३७) चन्द्रमा व शनि दशम भाव में हो या सुख स्थान में हो तो ब्रह्मांड योग होता है। जातक अतुल संपदा प्राप्त करता है।

(३८) चन्द्रमा मकर का तथा चन्द्रमा के साथ सूर्य हो, उसे शनि देखे तो जातक दुःखी, परेशान, चिन्तित व दरिद्र जीवन व्यतीत करता है।

(३९) शनि कहीं केन्द्र में हो, चन्द्रमा लग्न में तथा गुरु १२वें होने पर राजभंग योग होता है। जातक दीन-हीन-परेशान, दुःखी होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४०) गुरु मकर में तथा कर्क राशि में स्थित मंगल हो तो नीच भंग योग होता है। ऐसा जातक भी आजीवन दु:ख भोगता है।

(४१) गुरु ६ठे या १२वें भाव हो, सिंह राशि हो तो भिक्षुक योग होता है।

(४२) शनि स्व राशिस्थ सप्तम भाव में हो तथा मंगल व राहु नवम भाव में हो तो अंगहीन योग होता है।

(४३) चन्द्रमा, मंगल व शनि चौथे भाव में हो तथा सूर्य मकर राशि में हो तो जातक बहरा होता है।

(४४) लग्न में सूर्य व चन्द्रमा हो, उन्हें मंगल व शनि देखते हों तो जातक अन्धा होता है।

(४५) सूर्य व चन्द्रमा दोनों १२वें भाव में हों तो जातक अंधा होता है।

(४६) लग्न में मंगल हो तथा सातवें भाव में सूर्य, शनि हो तो जातक को अवश्य ही चेचक निकलती है।

(४७) शुक्र राहु के साथ लग्न में हो तो जातक को सर्प अवश्य काटता है तथा सर्पदंश से मृत्यु भी होती है।

(४८) गुरु-राहु या गुरु-केतु एक साथ हों तो चाण्डाल योग होता है। जातक मंदबुद्धि, भाग्यहीन, असंतुष्ट व शरीर पर घाव के चिह्न होते हैं।

(४९) शनि बुध व राहु के साथ लग्न में हो तो जातक का लिंग किसी वजनी चीज से कुचल जाता है या स्वयं लिंग को काट लेता है।

(५०) सूर्य स्वग्रही तथा मंगल सप्तम भाव में हो तो जातक को उन्माद का रोग होता है।

(५१) लग्नेश लग्न में हो तथा दशमेश चतुर्थ भाव में एवं चतुर्थ भाव का स्वामी दशम भाव में हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है।

(५२) गुरु से केन्द्र में शुक्र और लग्नेश हों और नवम भाव का स्वामी बलवान हो तो जातक दीर्घायु, धनी, गुणी, चतुर, रोग-भय से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
रहित, भूमि, सुन्दर स्त्री से युक्त, उच्च पद को प्राप्त करने वाला होता है।

(५३) गुरु कर्क का हो, गुरु का नवांशपति त्रिकोण में हो या उच्च का या स्वग्रही हो, बलवान हो और लग्नेश भी बली हो तो जातक राज्य में उन्नति करता है व दूसरों पर प्रभाव डालता है।

(५४) शनि दशम भाव में सप्तम भाव का होकर हो और दशमेश मीन राशि में स्थित हो तथा नवमेश मंगल उसके साथ हो तो जातक पूर्णतया धनवान, पारिवारिक जीवन सुखी, स्त्री प्रेमी व भाग्यवान होता है।

(५५) सूर्य, मंगल, बुध भी आय भवन में मिथुन राशि में स्थित हों तो जातक धनाढ्य होता है।

(५६) बुध पंचम भाव, एकादश भाव या दूसरे भाव में हो तथा सिंह लग्न हो तो जातक को यकायक अर्थ लाभ होता है।

(५७) सिंह लग्न हो, गुरु, चन्द्र ३,६,८, या १२वें भाव में हों तो जातक विदेश-यात्रा करता है।

(५८) सिंह लग्न हो तथा शुक्र, गुरु कहीं भी एक साथ बैठ जायें तो लखपति होने पर भी कंगाल बनना पड़ता है। यदि शुक्र, गुरु, बुध तीनों मेषस्थ हों तो कुबेर को भी कंगाल होना पड़ता है।

(५९) लग्न में सूर्य, मंगल व बुध हों तो बुध की दशा जातक को सर्वश्रेष्ठ होती है। जातक को अर्थ, श्री, यश, मान की प्राप्ति होती है।

(६०) बुध की दृष्टि नवम भाव पर हो, सूर्य बुध के साथ हो। राहु का प्रभाव सप्तम से बुध पर हो। चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो पिता को चर्म रोग होता है।

(६१) सिंह लग्न तथा लग्नेश चतुर्थ भाव में हो। सूर्य से एक ओर बुध व दूसरी ओर मंगल हो तो एक्सीडेंट हो या गिरने से हड्डियाँ टूटनी चाहिए।

(६२) अकेला चन्द्रमा नाश स्थान में पड़ा हो। इस पर किसी की भी दृष्टि न हो। ऐसा होने पर जातक को रक्तचाप की बीमारी हो।

(६३) सूर्य, बुध दोनों लग्न से नवम् भाव में हों। शुक्र भी कर्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४०) गुरु मकर में तथा कर्क राशि में स्थित मंगल हो तो नीच भंग योग होता है। ऐसा जातक भी आजीवन दुःख भोगता है।

(४१) गुरु ६ठे या १२वें भाव हो, सिंह राशि हो तो भिक्षुक योग होता है।

(४२) शनि स्व राशिस्थ सप्तम भाव में हो तथा मंगल व राहु नवम भाव में हो तो अंगहीन योग होता है।

(४३) चन्द्रमा, मंगल व शनि चौथे भाव में हो तथा सूर्य मकर राशि में हो तो जातक बहरा होता है।

(४४) लग्न में सूर्य व चन्द्रमा हो, उन्हें मंगल व शनि देखते हों तो जातक अन्धा होता है।

(४५) सूर्य व चन्द्रमा दोनों १२वें भाव में हों तो जातक अंधा होता है।

(४६) लग्न में मंगल हो तथा सातवें भाव में सूर्य, शनि हो तो जातक को अवश्य ही चेचक निकलती है।

(४७) शुक्र राहु के साथ लग्न में हो तो जातक को सर्प अवश्य काटता है तथा सर्पदंश से मृत्यु भी होती है।

(४८) गुरु-राहु या गुरु-केतु एक साथ हों तो चाण्डाल योग होता है। जातक मंदबुद्धि, भाग्यहीन, असंतुष्ट व शरीर पर घाव के चिह्न होते हैं।

(४९) शनि बुध व राहु के साथ लग्न में हो तो जातक का लिंग किसी वजनी चीज से कुचल जाता है या स्वयं लिंग को काट लेता है।

(५०) सूर्य स्वग्रही तथा मंगल सप्तम भाव में हो तो जातक को उन्माद का रोग होता है।

(५१) लग्नेश लग्न में हो तथा दशमेश चतुर्थ भाव में एवं चतुर्थ भाव का स्वामी दशम भाव में हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है।

(५२) गुरु से केन्द्र में शुक्र और लग्नेश हों और नवम भाव का स्वामी बलवान हो तो जातक दीर्घायु, धनी, गुणी, चतुर, रोग-भय से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहित, भूमि, सुन्दर स्त्री से युक्त, उच्च पद को प्राप्त करने वाला होता है।

(५३) गुरु कर्क का हो, गुरु का नवांशपति त्रिकोण में हो या उच्च का या स्वग्रही हो, बलवान हो और लग्नेश भी बली हो तो जातक राज्य में उन्नति करता है व दूसरों पर प्रभाव डालता है।

(५४) शनि दशम भाव में सप्तम भाव का होकर हो और दशमेश मीन राशि में स्थित हो तथा नवमेश मंगल उसके साथ हो तो जातक पूर्णतया धनवान, पारिवारिक जीवन सुखी, स्त्री प्रेमी व भाग्यवान होता है।

(५५) सूर्य, मंगल, बुध भी आय भवन में मिथुन राशि में स्थित हों तो जातक धनाढ्य होता है।

(५६) बुध पंचम भाव, एकादश भाव या दूसरे भाव में हो तथा सिंह लग्न हो तो जातक को यकायक अर्थ लाभ होता है।

(५७) सिंह लग्न हो, गुरु, चन्द्र ३,६,८, या १२वें भाव में हों तो जातक विदेश-यात्रा करता है।

(५८) सिंह लग्न हो तथा शुक्र, गुरु कहीं भी एक साथ बैठ जायें तो लखपति होने पर भी कंगाल बनना पड़ता है। यदि शुक्र, गुरु, बुध तीनों मेषस्थ हों तो कुबेर को भी कंगाल होना पड़ता है।

(५९) लग्न में सूर्य, मंगल व बुध हों तो बुध की दशा जातक को सर्वश्रेष्ठ होती है। जातक को अर्थ, श्री, यश, मान की प्राप्ति होती है।

(६०) बुध की दृष्टि नवम भाव पर हो, सूर्य बुध के साथ हो। राहु का प्रभाव सप्तम से बुध पर हो। चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो पिता को चर्म रोग होता है।

(६१) सिंह लग्न तथा लग्नेश चतुर्थ भाव में हो। सूर्य से एक ओर बुध व दूसरी ओर मंगल हो तो एक्सीडेंट हो या गिरने से हड्डियाँ टूटनी चाहिए।

(६२) अकेला चन्द्रमा नाश स्थान में पड़ा हो। इस पर किसी की भी दृष्टि न हो। ऐसा होने पर जातक को रक्तचाप की बीमारी हो।

(६३) सूर्य, बुध दोनों लग्न से नवम् भाव में हों। शुक्र भी कर्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाव से द्वादश स्थान में हो। शनि की तृतीय स्थान से बुध पर पूर्ण दृष्टि हो तो जातक को चेचक अवश्य निकलत है।

(६४) लग्नेश, अष्टनेश एक साथ हों। बुध गुरु के साथ चतुर्थ भाव में हो। शनि की इन पर पूर्ण दृष्टि हो। मंगल शत्रु भाव में हो तो जातक की मृत्यु गोली लगने से हो। बृहस्पति सूर्य

(६५) लाभेश परमोच्च होकर द्वितीय स्थान में हो और दशमेश से दृष्ट हो तो भेरियोग होता है। जातक के पास कई हाथी, घोड़े हों। सज्जन उसके आश्रित रहें तथा ३४वें वर्ष भाग्योदय होता है।

(६६) सभी ग्रह १।४।७।१० स्थानों को छोड़कर पणफर व आपोक्लिम स्थानों में हो तो जातक धन संग्रह में चतुर, सुखी, पुत्र-पौत्रादि से युक्त, कलाप्रिय व मण्डलाधिकारी होता है।

(६७) लग्न व नवम भाव में शुभ ग्रह, पंचम में शुभ व अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह और चतुर्थ, अष्टम में पाप ग्रह हों तो मत्स्य योग होता है।

(६८) अष्टमेश गुरु ४।५।६।१० स्थानों में हों और लग्नेश निर्बल हो तो जातक दिवालिया होता है।

(६९) लग्न में पाप ग्रह, चतुर्थ में चन्द्रमा, लग्नेश धनु राशि में पञ्चम भाव में हो तथा पञ्चमेश बलहीन हो तो जातक वंश विच्छेदक होता है।

√(७०) सप्तमेश शुभ ग्रह की राशि में हो तथा शुक्र अपनी उच्च की राशि में हो तो नौ वर्ष की अवस्था में विवाह होता है।

अब यहां नीचे कुछ विशिष्ठ कुण्डलियाँ सिंह लग्न वालों की दी जा रही हैं जिन पर ये योग घटित हुए हैं।

१. गुरु नानक—

वृष	मिथुन	कन्या	तुल	वृश्चिक	धनु
शनि	केतु	गुरु	शुक्र	सूर्य चन्द्र मंगल वुध	राहु

२. छत्रपति शिवाजी—

मेष	मिथुन	कन्या	तुला	धनु	कुंभ	मीन
शुक्र	राहु मंगल	चंद्रमा	शनि	केतु	सूर्य गुरु	वुध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus; Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३. मथुरादास माथुर—

मेष	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	मकर
गुरु	शुक्र	सूर्य	बुध	मंगल	चन्द्रमा	राहु
	शनि					
	केतु					

४. रूस—

वृष	कर्क	सिंह	तुला	धनु	मिथुन
गुरु	शनि	चंद्र	सूर्य	शुक्र	केतु
		मंगल	बुध	राहु	

५. अबीसीनिया का बादशाह—

वृष	कर्क	सिंह	कन्या	वृश्चिक	मकर
राहु	सूर्य	शुक्र	चंद्रमा	मंगल	गुरु
	बुध	शनि		केतु	

६. हेरोल्ड विल्सन—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	मकर	कुंभ	मीन
शुक्र	चन्द्रमा	शनि	केतु	राहु	सूर्य	गुरु
			मंगल		बुध	

७. मानेक शॉ—

मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कुंभ	मीन	मकर
शुक्र	शनि	चन्द्रमा	केतु	बुध	सूर्य	गुरु
		मंगल		राहु		

८. जगत गुरु कांची—

वृष	कन्या	वृश्चिक	मीन	कुंभ
सूर्य	शनि	चन्द्रमा	शुक्र	मंगल
बुध	केतु		राहु	
गुरु				

९. रिचार्ड निक्सन—

वृष	कन्या	धनु	मकर	कुंभ	मीन
शनि	केतु	सूर्य	चन्द्रमा	शुक्र	राहु
		मंगल			
		बुध			
		गुरु			

१०. श्री जौनसन—

मिथुन	सिंह	कन्या
शुक्र	सूर्य	केतु
राहु	चन्द्र	
	मंगल	
	बुध	
	गुरु	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

११. रूजवेल्ट—

मेष	वृष	मिथुन	वृश्चिक	मकर	कुंभ
गुरु	केतु	चन्द्रमा	राहु	शुक्र	वुध
शनि		मंगल		सूर्य	

१२. श्री कैलाश—

मेष	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
केतु	राहु	मंगल	वुध	सूर्य
	गुरु	शनि	चन्द्रमा	शुक्र

१३. व्यावसायिक कुण्डली—

वृष	सिंह	कन्या	तुल	मकर	कुंभ	मीन
गुरु	राहु	सूर्य	शुक्र	चंद्रमा	केतु	मंगल
शनि			वुध			

१४. लोकमान्य तिलक—

मेष	कर्क	कन्या	तुला	मीन
चन्द्रमा	सूर्य	केतु	मंगल	राहु
गुरु	वुध			
	शुक्र			
	शनि			

१५. एक विशेष कुण्डली—

कन्या	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मिथुन
शुक्र	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	शनि	केतु
	गुरु	राहु			
	वुध				

१६ महाप्रतापी अ-
कवर बादशाह

सिंह	कन्या	तुला	धन	मकर	कुंभ
केतु	गुरु	सूर्य	मंगल	चन्द्र	राहु
	शुक्र	वुध			
		शनि			

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कन्या लग्न और विशिष्ट योग

कन्या लग्न होने पर लग्नेश तथा कर्मेश वुध तथा सुख भाव व सप्तम भाव के स्वामी गुरु महाराज होते हैं। भाग्येश व धनेश शुक्र तथा मृत्यु भाव तथा तृतीयेश मंगल होते हैं। क्रूर शनिदेव त्रिकोणेश व शत्रु घर के अधिष्ठाता होते हैं। द्वादश स्थान के स्वामी सूर्य देव व एकादशेश चन्द्रमा होते हैं।

ध्रुव केन्द्र के स्वामी वुध तथा केन्द्र पति वुध व गुरु होते हैं। दुःस्थान के स्वामी शनि, मंगल व सूर्य तीनों क्रूर ग्रह होते हैं। पणफर स्थानों के स्वामी शुक्र, शनि, मंगल व चन्द्रमा, आपोक्लिम स्थानों के अधिपति मंगल, शनि, शुक्र व सूर्य करते हैं। उपचय स्थानपति मंगल, शनि, वुध, चन्द्रमा तथा त्रिक स्थान के स्वामी शनि, मंगल व सूर्य होते हैं। त्रिकोणेश कन्या लग्न की कुण्डली में शनि व शुक्र होते हैं।

अब मैं कन्या लग्न की कुण्डली पर घटित होने वाले कुछ विशिष्ट योग देने का प्रयास करूंगा।

(१) लग्नेश उच्च का होकर लग्न में हो, लग्न व लग्नेश गुरु से दृष्ट हो, अष्टमेश केन्द्र में हो और गुरु से दृष्ट हो। मृत्यु कारक ग्रह शनि द्वितीय भाव में उच्च का हो तो जातक की दीर्घ आयु होती है।

(२) लग्नेश वुध, आयेश चन्द्र तथा पंचमेश तीनों अष्टम भाव में हों सप्तम भाव में मीन का शुक्र हो अर्थात् उच्च का व केन्द्र में। ऐसे जातक का भाग्य ससुराल से वनता है तथा धन भी मिलता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) नवम भाव में वृष का वुध हो, जातक चतुर, विनम्र एवं हर आपत्ति में भी मुस्कराने वाला होता है। ऐसे जातक का भाग्योदय १७ वर्ष के बाद ही हो जाता है। उच्च कोटि का वाहन इनके पास होता है।

(४) कन्या लग्न हो तथा चन्द्रमा द्वादश भाव में हो तो जातक की प्रसिद्धि विपक्षियों में खूब होती है। दाम्पत्य जीवन सुखी एवं आय के अनेक स्रोत होते हैं। यात्राएँ खूब करता है।

(५) कन्या लग्न हो तथा चन्द्रमा से १२ भाव में शनि हो तो जातक भाग्यवान होता है, प्रसिद्ध कुल में जन्म लेता है, उसके शब्दों का प्रभाव होता है। प्रसिद्ध वक्ता एवं जनमानस को अपने पक्ष में करने में समर्थ होता है।

(६) ध्रुव लग्न में शुक्र कन्या राशि का हो, ५वें भाव में हो मंगल एकादश स्थान में तथा चन्द्रमा ३रे भाव में हो तो भिक्षुक योग होता है।

(७) राज्येश वुध सप्तम भाव (केन्द्र) में हो तो वुध की शुभता ½ नष्ट होती है पर यही वुध १०वें होता तो तीव्र गति से राज्य पक्ष में उन्नति हो।

(८) शुक्र व केतु दूसरे भाव में हो तो व्यक्ति धनाढ्य होता है तथा आकस्मिक ढंग से अर्थ की प्राप्ति होती है।

(९) कन्या लग्न की कुण्डली में मंगल जितना निर्बल होगा जातक को उतना ही शुभ फल प्राप्त होगा।

(१०) गुरु सप्तम भाव में हो तो वह अपनी दशा में धन, वाहन, ऐश्वर्य व सुख की प्राप्ति होती है।

(११) कन्या लग्न एवं ११वें स्थान में शनि हो तो जातक के लड़कियाँ अधिक होती हैं। पुत्र-सुख में वाधा उत्पन्न होती है।

(१२) कहीं भी सूर्य-शुक्र या सूर्य-चन्द्र साथ बैठे हों तो सूर्य की दशा में विशेष धन लाभ, सम्मान एवं ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

(१३) कन्या लग्न हो तथा चन्द्र-शुक्र सप्तम भाव हो, गुरु ११वें भाव में, सूर्य अष्टम भाव में हो तो व्यक्ति को श्रेष्ठतम ससुराल से अर्थ प्राप्ति व सुयोग्य पत्नी प्राप्त होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१४) राहु यदि नवम भाव में हो तो व्यक्ति जीवन में कई एक तीर्थ-यात्राएँ करता है।

(१५) कन्या लग्न हो तथा शुक्र-बुध यदि नवम भाव में या १०वें भाव में हो या दशमेश नवम भाव में व नवमेश १०वें भाव में या नवमेश नवम व दशम भाव में हो तो, चारों अवस्थाओं में उत्तर राजयोग होता है।

(१६) पंचमेश व दशमेश या तो पंचम स्थान में हो या दशम स्थान में अथवा परस्पर स्थान परिवर्तन हो या दोनों स्वग्रही हो तो भी उत्तम राजयोग होता है।

(१७) यदि चतुर्थ और दशम स्थानों के स्वामी एक दूसरे के स्थान में हों अर्थात् चतुर्थेश गुरु दशम में और दशमेश बुध धनु राशि में तथा लग्नेश शक्ति युक्त हो तो जातक सेनानी होता है।

(१८) दशमेश बुध जिस राशि में हो उसका स्वामी अपनी उच्च राशि में हो तो जातक भाग्यशाली होता है।

(१९) लग्न से नवम् स्थान में गुरु हो तथा उससे ग्यारहवें भाव अर्थात् लग्न से सप्तम स्थान में नवमेश शुभ चन्द्र से युक्त हो तो जातक विद्यावान, धनवान, सुखी, अभिमानी होता है तथा उसका भाग्योदय २१वें वर्ष होता है।

(२०) लग्न से नवम स्थान का स्वामी शुक्र यदि चन्द्रमा से नवम स्थान पर हो पर कन्या लग्न की कुण्डली में शुक्र वृष में ही हो तो जातक का भाग्योदय ५ वर्ष की अवस्था में ही होता है।

(२१) लग्नेश जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी यदि अपनी उच्च राशि में स्थित होकर चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो 'महाकाल' योग होता है। ऐसा जातक महा सुख भोगता है।

(२२) लाभेश यदि परमोच्च हो तथा शुक्र के साथ हो तथा लाभेश व शुक्र जिस राशि में हो उसका स्वामी लग्न से १।४।७।१०वें घर में हो तो जातक का भाग्योदय ४० वर्ष की अवस्था के बाद होता है।

शुक्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) नवम भाव में वृष का वुध हो, जातक चतुर, विनम्र एवं हर आपत्ति में भी मुस्कराने वाला होता है। ऐसे जातक का भाग्योदय १७ वर्ष के बाद ही हो जाता है। उच्च कोटि का वाहन इनके पास होता है।

(४) कन्या लग्न हो तथा चन्द्रमा द्वादश भाव में हो तो जातक की प्रसिद्धि विपक्षियों में खूब होती है। दाम्पत्य जीवन सुखी एवं आय के अनेक स्रोत होते हैं। यात्राएँ खूब करता है।

(५) कन्या लग्न हो तथा चन्द्रमा से १२ भाव में शनि हो तो जातक भाग्यवान होता है, प्रसिद्ध कुल में जन्म लेता है, उसके शब्दों का प्रभाव होता है। प्रसिद्ध वक्ता एवं जनमानस को अपने पक्ष में करने में समर्थ होता है।

(६) ध्रुव लग्न में शुक्र कन्या राशि का हो, ५वें भाव में हो मंगल एकादश स्थान में तथा चन्द्रमा ३रे भाव में हो तो भिक्षुक योग होता है।

(७) राज्येश बुध सप्तम भाव (केन्द्र) में हो तो बुध की शुभता ½ नष्ट होती है पर यही बुध १०वें होता तो तीव्र गति से राज्य पक्ष में उन्नति हो।

(८) शुक्र व केतु दूसरे भाव में हो तो व्यक्ति धनाढ्य होता है तथा आकस्मिक ढंग से अर्थ की प्राप्ति होती है।

(९) कन्या लग्न की कुण्डली में मंगल जितना निर्बल होगा जातक को उतना ही शुभ फल प्राप्त होगा।

(१०) गुरु सप्तम भाव में हो तो वह अपनी दशा में धन, वाहन, ऐश्वर्य व सुख की प्राप्ति होती है।

(११) कन्या लग्न एवं ११वें स्थान में शनि हो तो जातक के लड़कियाँ अधिक होती हैं। पुत्र-सुख में बाधा उत्पन्न होती है।

(१२) कहीं भी सूर्य-शुक्र या सूर्य-चन्द्र साथ बैठे हों तो सूर्य की दशा में विशेष धन लाभ, सम्मान एवं ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

(१३) कन्या लग्न हो तथा चन्द्र-शुक्र सप्तम भाव हो, गुरु ११वें भाव में, सूर्य अष्टम भाव में हो तो व्यक्ति को श्रेष्ठतम ससुराल से अर्थ प्राप्ति व सुयोग्य पत्नी प्राप्त होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१४) राहु यदि नवम भाव में हो तो व्यक्ति जीवन में कई एक तीर्थ-यात्राएँ करता है।

(१५) कन्या लग्न हो तथा शुक्र-बुध यदि नवम भाव में या १०वें भाव में हो या दशमेश नवम भाव में व नवमेश १०वें भाव में या नवमेश नवम व दशम भाव में हो तो, चारों अवस्थाओं में उत्तर राजयोग होता है।

(१६) पंचमेश व दशमेश या तो पंचम स्थान में हो या दशम स्थान में अथवा परस्पर स्थान परिवर्तन हो या दोनों स्वग्रही हो तो भी उत्तम राजयोग होता है।

(१७) यदि चतुर्थ और दशम स्थानों के स्वामी एक दूसरे के स्थान में हों अर्थात् चतुर्थेश गुरु दशम में और दशमेश बुध धनु राशि में तथा लग्नेश शक्ति युक्त हो तो जातक सेनानी होता है।

(१८) दशमेश बुध जिस राशि में हो उसका स्वामी अपनी उच्च राशि में हो तो जातक भाग्यशाली होता है।

(१९) लग्न से नवम् स्थान में गुरु हो तथा उससे ग्यारहवें भाव अर्थात् लग्न से सप्तम स्थान में नवमेश शुभ चन्द्र से युक्त हो तो जातक विद्यावान, धनवान, सुखी, अभिमानी होता है तथा उसका भाग्योदय २१वें वर्ष होता है।

(२०) लग्न से नवम स्थान का स्वामी शुक्र यदि चन्द्रमा से नवम स्थान पर हो पर कन्या लग्न की कुण्डली में शुक्र वृष में ही हो तो जातक का भाग्योदय ५ वर्ष की अवस्था में ही होता है।

(२१) लग्नेश जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी यदि अपनी उच्च राशि में स्थित होकर चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो 'महाकाल' योग होता है। ऐसा जातक महा सुख भोगता है।

(२२) लाभेश यदि परमोच्च हो तथा शुक्र के साथ हो तथा लाभेश व शुक्र जिस राशि में हो उसका स्वामी लग्न से १।४।७।१०वें घर में हो तो जातक का भाग्योदय ४० वर्ष की अवस्था के बाद होता है।

शुक्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२३) गुरु कर्क राशि में हो और चन्द्रमा मिथुन राशि में स्थित हो एवं लग्नेश बुध नवम राशि अर्थात् धनु राशि में हो तो चाकर योग होता है। जातक का पूर्ण भाग्योदय ५५ वर्ष की अवस्था के बाद होता है।

(२४) दशमेश दशम भाव में हो, सूर्य उच्च का हो तथा ६वें भाव में गुरु हो, मीन राशि का चन्द्रमा हो तो पूर्ण राजयोग होता है।

(२५) चन्द्रमा मकर राशि में हो तथा शनि ११वें घर में हो तथा गुरु-चन्द्रमा की युति हो तो जातक का भाग्योदय विधु योग के कारण २२ वर्ष के बाद होता है।

(२६) कन्या लग्न हो, लग्न से दूसरे स्थान में चन्द्रमा, गुरु और शुक्र हों और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक का भाग्योदय २५वें वर्ष के बाद होता है।

(२७) राहु १०वें स्थान में हो, दशमेश तृतीय स्थान में शनि के साथ बैठा हो तो चण्ड योग के कारण भाग्योदय ५३वें वर्ष में होता है।

(२८) भाग्येश पञ्चम स्थान में हो तथा पंचमेश द्वितीय भाव में उच्च का हो और द्वितीयेश शुक्र अपनी उच्च राशि मीन में सप्तम स्थान में हो तो जातक गुणी होता है तथा उच्च पदाधिकारी होता है।

(२९) चंद्रमा व शुक्र की युति ११वें भाव में हो तथा लग्नेश ५वें स्थान पर बैठकर पूर्ण दृष्टि से उन्हें देखे तो प्रबल राजयोग होता है। जातक का भाग्योदय ३० वर्ष की अवस्था में होता है।

(३०) सूर्य यदि अपनी उच्च राशि मेष का परमोच्च अंश में हो और शुक्र १२वें स्थान में हो तथा उस पर शुभ स्थान के स्वामी की दृष्टि हो तो जातक का भाग्योदय वृद्धावस्था में होता है।

(३१) चन्द्रमा १०वें स्थान में मिथुन राशि का हो, दशमेश बुध लग्न में हो तथा भाग्येश शुक्र द्वितीय स्थान में हो तो जातक धनवान, भाग्यवान व उच्च पदाधिकारी होता है।

(३२) नवमेश चतुर्थेश के साथ लग्न में हो और तृतीयेश मंगल अपनी उच्च राशि मकर में हो तो लावण्य योग होता है। जातक का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाग्योदय ३२वें वर्ष होता है।

(३३) पूर्ण चन्द्रमा हो (पूर्णिमा का) तथा यह चन्द्रमा स्व-राशिस्थ (कर्क) हो बुध लग्न में हो, चतुर्थ में गुरु हो तो नौका या जहाज में जन्म हो।

(३४) कन्या का पूर्वार्द्ध लग्न हो, लग्न में शनि हो और उसे सूर्य देखता हो तो राज भवन, देवालय या गोशाला में जन्म होता है।

(३५) चंद्रमा के अतिरिक्त समस्त ग्रह भाग्य भवन में हों तथा चंद्रमा व लग्न को न देखे तो जातक का जन्म निर्जन स्थान में हो।

(३६) लग्नाधिप लग्न में हो या नवांशपति लग्न नवांश में हो या वक्री ग्रह लग्न में हो तो जातक पैरों से पैदा हुआ समझना चाहिए।

(३७) मंगल व शनि दोनों कहीं भी एक साथ हों और उस स्थान से चंद्रमा ५।७ या ९वें स्थान में हो तो बालक का उसकी माँ त्याग कर देती है।

(३८) सूर्य, शनि लग्न में बैठे हों तथा उनकी चन्द्रमा पर दृष्टि हो और लग्न से सप्तम मंगल हो तो बालक अपनी माता से व्यक्त होता है और स्वयं भी मृत्यु को प्राप्त होता है।

(३९) लग्न में चन्द्रमा, अष्टम् में मंगल, ९वें में सूर्य, १२वें भाव में शनि हो तथा इन पर गुरु की दृष्टि न हो तो बालक शीघ्र ही मर जाता है।

(४०) लग्न से द्वितीय शनि, षष्टम् भाव में राहु, अष्टम में सूर्य व द्वादश भाव में मंगल हो तो जातक अन्धा होता है।

(४१) चन्द्रमा ८वें भाव में हो तथा मंगल सप्तम भाव में एवं शनि नवम् भाव में स्थित हो तो जातक की मृत्यु अग्नि द्वारा होती है।

(४२) दूसरे भवन में शनि, चतुर्थ में चन्द्रमा, दशम में मंगल हो तो शरीर में कृमि हो या सेप्टिक से मृत्यु हो।

(४३) कन्या हो, उच्च का बुध, मंगल, शनि ५वें भाव में हो चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा, गुरु व शुक्र हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है।

(४४) लग्नेश उच्च का लग्न में, गुरु, शुक्र चतुर्थ भाव में अन्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२३) गुरु कर्क राशि में हो और चन्द्रमा मिथुन राशि में स्थित हो एवं लग्नेश बुध नवम राशि अर्थात् धनु राशि में हो तो चाकर योग होता है। जातक का पूर्ण भाग्योदय ५५ वर्ष की अवस्था के बाद होता है।

(२४) दशमेश दशम भाव में हो, सूर्य उच्च का हो तथा ९वें भाव में गुरु हो, मीन राशि का चन्द्रमा हो तो पूर्ण राजयोग होता है।

(२५) चन्द्रमा मकर राशि में हो तथा शनि ११वें घर में हो तथा गुरु-चन्द्रमा की युति हो तो जातक का भाग्योदय विधु योग के कारण २२ वर्ष के बाद होता है।

(२६) कन्या लग्न हो, लग्न से दूसरे स्थान में चन्द्रमा, गुरु और शुक्र हों और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक का भाग्योदय २५वें वर्ष के बाद होता है।

(२७) राहु १०वें स्थान में हो, दशमेश तृतीय स्थान में शनि के साथ बैठा हो तो चण्ड योग के कारण भाग्योदय ५३वें वर्ष में होता है।

(२८) भाग्येश पञ्चम स्थान में हो तथा पंचमेश द्वितीय भाव में उच्च का हो और द्वितीयेश शुक्र अपनी उच्च राशि मीन में सप्तम स्थान में हो तो जातक गुणी होता है तथा उच्च पदाधिकारी होता है।

(२९) चंद्रमा व शुक्र की युति ११वें भाव में हो तथा लग्नेश ५वें स्थान पर बैठकर पूर्ण दृष्टि से उन्हें देखे तो प्रबल राजयोग होता है। जातक का भाग्योदय ३० वर्ष की अवस्था में होता है।

(३०) सूर्य यदि अपनी उच्च राशि मेष का परमोच्च अंश में हो और शुक्र १२वें स्थान में हो तथा उस पर शुभ स्थान के स्वामी की दृष्टि हो तो जातक का भाग्योदय वृद्धावस्था में होता है।

(३१) चन्द्रमा १०वें स्थान में मिथुन राशि का हो, दशमेश बुध लग्न में हो तथा भाग्येश शुक्र द्वितीय स्थान में हो तो जातक धनवान, भाग्यवान व उच्च पदाधिकारी होता है।

(३२) नवमेश चतुर्थेश के साथ लग्न में हो और तृतीयेश मंगल अपनी उच्च राशि मकर में हो तो लावण्य योग होता है। जातक का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाग्योदय ३२वें वर्ष होता है।

(३३) पूर्ण चन्द्रमा हो (पूर्णिमा का) तथा यह चन्द्रमा स्वराशिस्थ (कर्क) हो बुध लग्न में हो, चतुर्थ में गुरु हो तो नौका या जहाज में जन्म हो।

(३४) कन्या का पूर्वार्द्ध लग्न हो, लग्न में शनि हो और उसे सूर्य देखता हो तो राज भवन, देवालय या गोशाला में जन्म होता है।

(३५) चंद्रमा के अतिरिक्त समस्त ग्रह भाग्य भवन में हों तथा चंद्रमा व लग्न को न देखे तो जातक का जन्म निर्जन स्थान में हो।

(३६) लग्नाधिप लग्न में हो या नवांशपति लग्न नवांश में हो या वक्री ग्रह लग्न में हो तो जातक पैरों से पैदा हुआ समझना चाहिए।

(३७) मंगल व शनि दोनों कहीं भी एक साथ हों और उस स्थान से चंद्रमा ५।७ या ९वें स्थान में हो तो बालक का उसकी माँ त्याग कर देती है।

(३८) सूर्य, शनि लग्न में बैठे हों तथा उनकी चन्द्रमा पर दृष्टि हो और लग्न से सप्तम मंगल हो तो बालक अपनी माता से व्यक्त होता है और स्वयं भी मृत्यु को प्राप्त होता है।

(३९) लग्न में चन्द्रमा, अष्टम् में मंगल, ९वें में सूर्य, १२वें भाव में शनि हो तथा इन पर गुरु की दृष्टि न हो तो बालक शीघ्र ही मर जाता है।

(४०) लग्न से द्वितीय शनि, षष्टम् भाव में राहु, अष्टम में सूर्य व द्वादश भाव में मंगल हो तो जातक अन्धा होता है।

(४१) चन्द्रमा ८वें भाव में हो तथा मंगल सप्तम भाव में एवं शनि नवम् भाव में स्थित हो तो जातक की मृत्यु अग्नि द्वारा होती है।

(४२) दूसरे भवन में शनि, चतुर्थ में चन्द्रमा, दशम में मंगल हो तो शरीर में कृमि हो या सेप्टिक से मृत्यु हो।

(४३) कन्या हो, उच्च का बुध, मंगल, शनि ५वें भाव में हो चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा, गुरु व शुक्र हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है।

(४४) लग्नेश उच्च का लग्न में, गुरु, शुक्र चतुर्थ भाव में अन्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह लग्न से द्वितीय, नवम् या उपचय (३,६,१०,११) में हो तो उत्तम राजयोग होता है।

(४५) कन्या लग्न में बुध हो, शुक्र दशम में, सप्तम में बृहस्पति तथा चन्द्रमा हो। लग्न से पंचम मंगल हो और शनि से युक्त हो तो राजयोग होता है।

(४६) लग्न में गुरु हो, दशम में सूर्य, सप्तम में शनि हो तो भाग्यशाली होता है।

(४७) कन्या राशि का सूर्य लग्न में हो, सप्तम (मीन) शनि हो तो जातक की पत्नी का मरण हो।

(४८) शुक्र सुख स्थान में हो तथा सप्तम भाव में शनि एवं एकादश स्थान में मंगल हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु अग्नि से होती है।

(४९) सूर्य और चन्द्रमा लग्न से ६।१२वें हों। ६ठे सूर्य, १२वें चन्द्रमा या १२वें भाव में सूर्य व ६ठे भाव में चंद्रमा हो तो पत्नी पति दोनों काने हों तथा १ ही पुत्र होता है।

(५०) यदि सप्तम में चंद्रमा व शनि हो तो जातक की पत्नी पर-प्रिया होती है।

(५१) कन्या लग्न हो, सप्तम में मीन का मंगल हो और मंगल शनि की युति हो तो जातक स्त्रीहीन, पुत्रहीन होता है।

(५२) चन्द्रमा १०वें भाव में हो, मंगल सप्तम में हो तथा सूर्य से द्वितीय राशि में शनि हो तो जातक किसी अंग से हीन होता है।

(५३) चंद्रमा पंचम भाव में शनि, मंगल से युक्त हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित हो।

(५४) लग्न से २।६।८।१२वें सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, शनि हों चारों में से कोई अष्टम, कोई षष्ट, कोई द्वादश, कोई धन (२) में हो, तो जातक अन्धा होता है।

(५५) उपरोक्त ग्रह किसी क्रम से लग्न से ३।५।६।११ स्थानों में हों तो जातक बहरा होता है।

(५६) कन्या लग्न हो, राहु, सूर्य लग्न में हों और त्रिकोण में मंगल तथा शनि हो तो जातक अंधा होता है।

(५७) शुक्र मीन का सप्तम स्थान में हो, यह शुक्र, मंगल या शनि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के षड्वर्ग में हो, या शनि मंगल से दृष्ट हो, तो जातक परस्त्रीगामी होता है।

(५८) ७वें भाव में चन्द्रमा, मंगल और शनि एक साथ हों और शुक्र-शनि मंगल के वर्ग में बैठकर उनको देखता हो तो जातक तथा उनकी पत्नी दोनों अन्य गामी होते हैं।

(५९) स्त्री की कुण्डली हो तथा कन्या लग्न हो लग्न या चंद्रमा से सप्तम स्थान में कोई ग्रह न हो और यह स्थान दुर्बल बन जाय तो स्त्री का पति कापुरुष अर्थात् भीरु होता है।

✓ (६०) स्त्री की कुण्डली में (कन्या लग्न) सप्तम भाव में मंगल हो तो वैवव्य योग होता है। सूर्य हो तो पति द्वारा त्याज्य, शनि हो और पाप ग्रह की दृष्टि हो तो विवाह देर से हो अन्य पाप ग्रह भी वैवव्य योग बनाते हैं!

(६२) चंद्रमा वृष, सिंह कन्या या वृश्चिक राशि का हो तो सन्तान कम होती हैं।

(६३) नवम भाव में शनि हो, सूर्य, शुक्र पञ्चम भाव में हों। दशम स्थान में हो, गुरु नीच का हो, बुध सूर्य के साथ हो। चंद्रमा धनु राशि का हो तो शरीर का नवम भाग व्याधिग्रस्त हो।

(६४) राहु शत्रु भाव (६) में हो, शुक्र द्वितीय भाव में स्व का हो, मंगल द्वादश भाव में हो, सूर्य तृतीय भाव में हो तो जातक की आँख भेंगी हो।

(६५) मंगल नीच का हो, चंद्रमा राहु युक्त सुख भाव में हो। गुरु तृतीय भाव में शनि द्वारा दृष्ट हो तो जातक को T. B. हो।

(६६) मंगल ६ठे स्थान में हो लग्न के पञ्चमेश, सूर्य लग्न के पंचमेश शुक्र, चंद्र लग्न का पंचमेश गुरु सभी मंगल पर प्रभावी हों अर्थात् शनि १२वें भाव में, चंद्रमा ३रे, गुरु मिथुन में हो तो जातक पेट के रोग से मरे।

(६७) चन्द्र-मंगल मेष राशि के अष्टम भाव में हों, इन पर शनि की पूर्ण दृष्टि (७वीं) हो|सूर्य, केतु पंचम भाव में हों तो जातक को T. B. of the Punge हो।

(६८) सप्तमेश सप्तम में बुध युक्त हो, राहु लग्न में तथा शनि स्व का मकर राशि का हो तो जातक नपुंसक या पुरुषत्वहीन हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६६) पितृ भवन (६) में मंगल हो, गुरु पर मंगल की पूर्ण दृष्टि हो राहु, शनि अष्टम भाव पर हों तो जातक के पिता की मृत्यु सान्निपात से हो।

(७०) गुरु-शनि परस्पर षष्ट-सप्तम भाव में स्थान परिवर्तन करते हों। राहु का शनि पर केन्द्रिय प्रभाव हो, गुरु पर केतु की ५वीं दृष्टि हो शुक्र सिंह राशिस्थ हो तो जातक की स्त्री को दीर्घकाल तक हड्डियों का रोग रहे।

अब मैं कन्या लग्न से सम्बन्धित कुछेक विशिष्ट कुण्डलियाँ दूंगा जिनके आधार पर उपरोक्त योगायोग समझने में सुविधा रहे।

१. गणेशजी—वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृ. तु. म. कु. मीन
चंद्रमा × गुरु सूर्य बुध शुक्र × × मं. राहु ×
शनि केतु

२. बलवन्त रामचन्द्र गोठवले—वृष सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर
चंद्रमा शनि बुध शुक्र मंगल गुरु
राहु सूर्य केतु

३. महात्मा गौतम—वृष वृश्चिक धनु कुंभ मीन
केतु शुक्र सूर्य मंगल चंद्र
राहु बुध शनि गुरु

४. सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन्—कर्क सिंह कन्या वृश्चिक मकर
राहु सूर्य बुध मंगल केतु
शनि चंद्र शुक्र गुरु

५. श्री सी. डी. देशमुख—कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ
गुरु राहु शनि शुक्र मंगल चन्द्रमा राहु
सूर्य
बुध

६. परशराम मदेरणा—कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर
राहु शुक्र बुध शनि गुरु चंद्रमा मंगल
सूर्य केतु

७. सु श्री सूरज बाला—वृष, कन्या तुला वृश्चिक कुंभ
केतु चंद्रमा सूर्य शनि मंगल
बुध राहु
गुरु
शुक्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८. वादशाह शाहजहाँ—

मिथुन	कर्क	कन्या	धनु	कुंभ	मीन
केतु	शुक्र	शनि	राहु	चंद्रमा	मंगल
गुरु		वुध			
		सूर्य			

९. हेरी ट्रूमेन—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	तुला
सूर्य	शनि	शुक्र	मंगल	राहु
केतु	वुध		गुरु	चन्द्रमा

१०. जोजफ केनेडी—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	धनु
मंगल	गुरु	केतु	शनि	चन्द्रमा	राहु
बुध	शुक्र				
	सूर्य				

११. डडले सेना नायक—
(लंका)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	तुला	कुंभ	मीन
शनि	वुध	सूर्य	शुक्र	गुरु	चंद्रमा	मंगल
राहु				केतु		

१२. ख्याति प्राप्त वकील—

कन्या	तुला	वृश्चिक	मकर	मीन
गुरु	मंगल	चंद्रमा	सूर्य	केतु
शनि			वुध	
राहु			शुक्र	

१३. ईरान की मलिका सुरैया—

वृष	मिथुन	कर्क	मकर
मंगल	सूर्य	गुरु	शनि
	वुध		चंद्रमा
	शुक्र		

१४. जन्मरोगी स्त्री की कुण्डली—

मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धनु	कुं.	मी.
मंगल	केतु	शुक्र	वुध	राहु	गुरु	शनि
			सूर्य	चंद्रमा		

१५. नपुंसक व्यक्ति की कुण्डली—

मेष	कन्या	तुला	मकर	कुंभ	मीन
मंगल	राहु	चंद्रमा	शनि	शुक्र	सूर्य
					वुध
					केतु
					गुरु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुला लग्न और योग

तुला लग्न होने पर सूर्य भगवान एकादशेश, चन्द्रमा दशमेश, मंगल देव पत्नी भाव व द्वितीयेश, बुध भाग्येश व द्वादशेश गुरु महाराज तृतीयेश व षष्टेश शुक्र मृत्यु भवन व लग्नेश, क्रूर शनि चतुर्थेश, पंचमेश होते हैं। ध्रुव केन्द्र पति शुक्र व अन्य केन्द्र पति शुक्र, चंद्र, शनि, मंगल होते हैं। त्रिकोण पति बुध व शनि एवं दुःस्थानों के स्वामी मंगल, गुरु, शुक्र व बुध होते हैं। त्रिक पति गुरु, शुक्र व बुध तथा पणफर स्वामी मंगल-शनि, शुक्र, सूर्य होते हैं। आपोक्लिम स्थानों के स्वामी गुरु, बुध तथा उपचयेश गुरु, चन्द्रमा सूर्य होते हैं।

अब नीचे तुला लग्न पर आधारित कुछ विशिष्ट योग देने का प्रयास करूँगा।

(१) तुला लग्न हो, सप्तम भाव में शनि, सूर्य व राहु तीनों ग्रह स्थित हों तो जातक को शय्या पर सोते हुए सर्पदंश हो।

(२) चन्द्रमा व राहु कहीं हो एवं पाप ग्रह युक्त गुरु की ७।५।९वीं दृष्टि हो तो महापातक योग के परिणामस्वरूप महा पापी होता है।

(३) चन्द्रमा सुख भाव में हो तथा शनि १०वें स्थान में हो, लग्न स्थान में सूर्य हो तथा सूर्य, शुक्र की युति हो तथा उन्हें कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो जातक को अवश्य कर्णच्छेद होता है।

(४) चन्द्रमा सिंह राशिस्थ हो तथा गुरु स्वराशि(९।१२) में हो तथा सभी पाप व शुभ ग्रह १।४।७।१० स्थानों में हों तो जातक ५ सन्तान को नाश करने वाला होता है।

(५) गुरु तीसरे स्थान में हो, शुक्र ८वें स्थान में हो शेष सभी ग्रह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुरु, शुक्र के मध्य हों तो यह एक उत्तम राज योग होता है।

(६) शुक्र, मंगल धन भाव में हों, गुरु मीन राशि में हों, तुला में बुध, शनि व चन्द्रमा नीच के क्रमशः मेष व वृश्चिक में बैठे हों, तो यह निश्चित राजयोग होता है।

(७) गुरु धनु राशि का हो, बुध भाग्य भवन में तथा शनि स्वग्रही हो तो जातक अतुल धनवान होता है।

(८) जातक की कुण्डली में यदि गुरु, शुक्र और चन्द्रमा तीनों मीन राशि में हों तो उसकी पत्नी के पुत्र अधिक होते हैं।

(९) १।१२।७वें भाव में पाप ग्रह हो और धन भाव में शुभ ग्रह हो, उस जातक का सारा परिवार नष्ट हो जाता है।

(१०) जन्म का लग्न तुला हो तथा राहु, शुक्र, मंगल, शनि १२वें भाव में यानी कन्या राशि में हों तो जातक कुबेर से भी अधिक धनवान होता है।

(११) लग्न में शनि हो तथा चंद्रमा हो, ८वें भवन में शुक्र हो, वह राज्य-मान्य, अतिकामी व पत्नी को भोगने वाला होता है।

(१२) तुला लग्न हो एवं बृहस्पति व मंगल परस्पर अपने घर बदल कर बैठे हों तो निश्चय ही जातक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१३) मंगल व शनि युति युक्त धन स्थान में हों तो बालक की आयु १ वर्ष की हो।

(१४) राहु चतुर्थ स्थान में मकर राशि में स्थित हो, चन्द्रमा ६ या ८वें घर में हो तो ईश्वर रक्षक होने पर भी बालक मर जाता है।

(१५) यदि तुला लग्न की कुण्डली में कन्या राशि में सूर्य हो तो जातक अन्धा होता है तथा यदि चन्द्रमा हो तो वह जातक अवश्य ही काना होता है।

(१६) लग्न में गुरु हो, चतुर्थ भाव में शुक्र हो, सप्तम भाव में बुध हो और १०वें स्थान में मंगल हो तो जातक जीवन में सभी अभिष्ट प्राप्त करता है।

(१७) तुला लग्न हो तथा १०वें स्थान में बुध या गुरु हो या केन्द्र १।४।७।१० में हो या सूर्य, मंगल हो तो बालक के ६ अंगुली हों।

(१८) कन्या राशि में, द्वादश भाव में मंगल हो तो जातक की बायीं आँख तथा १२वें सूर्य, राहु हो तो दाहिनी आँख का नाश होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१९) चंद्रमा ५वें स्थान में हो और त्रिकोण में गुरु हो, ५।९।१० में मंगल हो तो शतायु होता है। अर्थात् व्यक्ति की १०० वर्ष की आयु हो।

(२०) कर्क, वृश्चिक और मीन राशि में गए हुए बुध पर यदि अमावस्या के चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक गूंगा होता है।

(२१) शुक्र धनु का तीसरे भाव में हो तथा मंगल अष्टम भाव में हो तो नेत्र रोगी होता है।

(२२) चंद्रमा व मंगल का योग ६।८।१२वें स्थान में हो तो गिरने से जातक अन्धा होता है। गुरु, चंद्रमा का योग ६।८।१२वें भाव में हो तो जातक ३० वर्ष की आयु के बाद अन्धा होता है।

(२३) व्ययेश बुध १।२।४।५।९।१० भावों में से किसी भाव में हो तो उत्तम नौकरी का योग होता है। बुधको दशांश में जागीर

(२४) लग्नेश व जन्म राशि का अधिपति केन्द्र में हो तथा शुभ व मित्र ग्रहों से दृष्ट हों, शत्रु और पाप ग्रहों की दृष्टि न हो तथा जन्म राशि के स्वामी से चंद्रमा ९वें भाव में हो तो वह जातक एम. पी. या एम. एल. ए. होता है। शुक्र, चन्द्र

(२५) गुरु, बुध और शुक्र तीनों स्व राशि में हों तथा क्रमशः सूर्य, शनि व मंगल इनके साथ हों तथा चंद्रमा वृष का (उच्च) हो तो जातक इन्जीनियर होता है।

(२६) लग्नेश शुक्र पर मित्रों की दृष्टि हो तथा लग्न में शुभ ग्रह हो तो जातक न्यायाधीश बनता है।

(२७) जन्म समय में सभी ग्रह योग कारक हों तो जातक राष्ट्रपति होता है। दो-तीन ग्रहों के योग कारक होने से राज्यपाल होने का योग बनता है यदि एक ग्रह भी अपने पंचमांश में हो तो एम. एल. ए. योग होता है।

(२८) तुला लग्न हो तथा गुरु उच्च, त्रिकोण या स्वराशि में स्थित होकर चंद्रमा को सम्पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो जातक को निश्चय ही मंत्री पद प्राप्त होता है।

(२९) यदि गुरु, बुध, चन्द्रमा २।५।११वें भाव में हों, दो ग्रह षष्ट भाव में, शेष दो ग्रह सप्तम भाव में हों तो व्यक्ति राजदूत का पद प्राप्त करता है।

(३०) लग्न में गुरु हो तो व्यक्ति को उत्तम सवारी प्राप्त होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३१) लग्न में मंगल, १०वें भाव में शनि, रवि, सप्तम भाव में गुरु, ६ में शुक्र, ११वें भाव में बुध और चतुर्थ भाव में चन्द्रमा हो तो जातक यशस्वी शासक होता है।

(३२) लग्नेश व चन्द्रमा दोनों जिस-जिस राशि में बैठे हों उनके स्वामी एक साथ केन्द्र में हों और किसी मित्र के घर में हों और लग्न पर किसी बलवान ग्रह की दृष्टि हो तो जातक प्रसिद्ध, धनी, उत्तम आभूषण व वस्त्रों से युक्त, श्रेष्ठ पद पाने वाला होता है।

यदि ८वें स्थान में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की दृष्टि हो और अष्टमेश स्व राशिस्थ हो, उच्च का (मीन) हों, अस्तगत न हो, ऐसा व्यक्ति कुकर्मी, स्वार्थी, दरिद्री, चुगलखोर व नीचवृत्ति वाला होता है।

(३४) अष्टमेश यदि किसी भी दुःस्थान में स्थित हो (६, ८, १२) तो वह जातक दृढ़ मति, दीर्घायु, निर्भय, लक्ष्मीवान, विद्या, पुत्र, धन से युक्त विख्यात व शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है।

(३५) बुध द्वादशेश यदि दुःस्थान में अशुभ ग्रहों से दीक्षित हो तो व्यक्ति कम खर्च वाला, धन संग्रह करने वाला, सुखी, उत्तम कार्य-कर्त्ता होता है।

(३६) यदि लग्न में सर्वोत्तम नवांश हो और चन्द्रमा भी वर्गोत्तम नवांश हो और लग्न को चन्द्रमा के अतिरिक्त ४ अन्य ग्रह देखते हों, ऐसा जातक अधम से अधम घर में जन्म लेकर भी उत्तम शुभ सुख भोगता है, लक्ष्मीवान होता है।

(३७) गुरु व चन्द्रमा केन्द्र में १।४।७।१० हो, कोई ग्रह नीच का न हो तथा गुरु-चन्द्रमा पर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक बलवान होता है।

(३८) तुला लग्न हो, तुला का चन्द्रमा हो तो जातक देवताओं व ब्राह्मणों का भक्त होता है परन्तु चंचल और कृशकाय भी होता है लम्बा, खरीद-फरोख्त में होशियार, धैर्यवान, इन्साफ पसन्द होता है।

(३९) यदि २।७।१२वें के स्वामी त्रिकोण ५।९ केन्द्र में हो और गुरु द्वारा दृष्ट हों, सप्तमेश जहाँ हो, उससे २।७।११वें स्थान में सौम्य ग्रह हों तो जातक सुखी पुत्रवान, कलत्रवान होता है।

(४०) यदि स्त्री की कुण्डली में लग्नेश, सप्तमेश, नवमेश और चन्द्र स्थित राशि उन सबके स्वामी शुभ ग्रहों के उत्तम स्थानों में स्थित हों पर अस्त न हों तो स्त्री भाग्यशालिनी, सुन्दरी, बन्धुओं में पूज्य और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुण्य कर्म करने में कुशल होती है।

(४१) तुला लग्न हो, पंचम भाव में शनि बैठा हो तो जातक का पुत्र गोद जाता है।

(४२) यदि लग्नेश और अष्टमेश दोनों चर राशि में हों या एक स्थिर राशि में, दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(४३) शुक्र यदि केतु सहित द्वितीय भाव में हो तो जातक को निश्चय ही लक्ष्याधिपति बना देता है।

(४४) तुला लग्न हो तथा शुक्र बली तथा शुभ प्रभाव में हो तो जातक दूसरों की रक्षा करने में सख्त रहता है।

(४५) तुला लग्न हो तथा शुक्र द्वादश भाव में हो, शनि शत्रु भवन में हो सूर्य-चन्द्र लग्न में हों तो जातक खूब धन प्राप्त करता है तथा कुशल-नीतिज्ञ मंत्री होता है।

(४६) षष्टापति का तथा लग्नाधिपति का व्यत्यय (Exchange) हो तो जातक ऋण ग्रस्त रहता है।

(४७) सूर्य-शुक्र मकर राशि में चतुर्थ भाव में तथा चन्द्र-शनि दशम भाव में हों परस्पर दृष्टि डाल रहे होने से जातक को उत्तम धन योग व राजयोग होता है।

(४८) शुक्र-शनि की युति धनु राशि में हो तथा गुरु की भाग्य भवन से दृष्टि हो, मंगल कर्क का हो तथा सूर्य व बुध चतुर्थ भावस्थ हों तो जातक अतुल धनवान होता है।

(४९) सूर्य लग्न में नीच का हो, शुक्र-मंगल द्वितीय भाव में हों तथा चन्द्रमा द्वादश भाव में हो। ऐसा जातक विद्या विशारद होकर भी सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

(५०) सूर्य मेष का सप्तम भाव में एवं चन्द्रमा द्वादश भाव में हो बुध शत्रु भाव में स्थित हो, गुरु की ५वीं दृष्टि चन्द्रमा पर हो तो जातक मंत्री बनता है तथा खूब धनोपार्जन करता है।

(५१) शनि १ प्रथम भाव में, मंगल उच्च का, सूर्य उच्च का ७वें भाव में हो तो जातक राज्य में उच्चातिउच्च पद प्राप्त करता है यथा मंत्री होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५२) शनिसप्तम भाव में नीच का हो पर वक्री व बलवान हो उस पर शुक्र की दृष्टि हो, सूर्य-चन्द्र लग्न में हों तो असाधारण राजयोग बनता है।

(५३) गुरु-केतु ३रे भाव में हों तथा सूर्य, मंगल, बुध शुक्र मेष राशि में हों तो जातक महा पराक्रमी होता है (यथा हिटलर)

(५४) लग्न की राशि तुला हो, चन्द्र व शनि तथा शुक्र केन्द्र स्थानों में हों लग्नेश मकर राशि का हो, गुरु अष्टम भाव में हो, सूर्य व शुक्र की युति हो तो जातक राज्य में उच्च स्थान प्राप्त करता है।

(५५) तुला लग्न हो तथा मंगल यदि बलवान हो तो स्त्री पक्ष से अर्थ की प्राप्ति होती है।

(५६) तुला लग्न हो, शुक्र बली हो तो स्त्री संचित धन द्वारा सहायता करे।

(५७) पंचम स्थान में चन्द्रमा हो उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक को लाटरी इत्यादि से यकायक धन मिलता है।

(५८) मिथुन राशि के चन्द्र को सूर्य देखता हो तो निर्धन हो, चतुर हो श्रेष्ठ शील वाला निरन्तर क्लेश रहित संपूर्ण उत्सव को प्राप्त होता है।

(५९) शुक्र के नवमांश में शनि और शनि के नवमांश में शुक्र हों दोनों में परस्पर दृष्टि हो तो वह स्त्री कामातुर होकर पुरुष की आकृति बनाती हुई, अपनी सहेली आदि स्त्री के द्वारा मैथुन क्रिया से कामाग्नि को शान्त कराती है।

(६०) लग्नेश धन भाव में हो तथा धनेश अष्टमस्थ हो तो भूमि से धन प्राप्ति होती है।

(६१) लग्न से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्ठि हो, राहु सप्तम भाव पर हो, शुक्र एकादश स्थान पर, चन्द्रमा मिथुन राशिस्थ हो तो जातक की आँख में दोष हो।

(६२) लग्न पर राहु की दृष्टि ५वें हो, शुक्र सूर्य का साथ सिंह राशि में हो, इन पर शनि की दृष्टि हो, द्वादशेश एकादश स्थान में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो तो जातक के पुत्र नहीं होता ।

(६३) राहु नवम भाव में हो, बुध पंचम स्थान में मकर का हो तो जातक चेतना खो बैठता है ।

(६४) मंगल द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशि हो, शुक्र भी वृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक स्त्री आत्महत्या करती है ।

(६५) लग्न में सूर्य-चन्द्र स्थित हों । अष्टमेश व तृतीयेश परस्पर स्थान बदलते हों तो जातक जल द्वारा आत्महत्या करेगा ।

(६६) पंचमेश-दशमेश परस्पर स्थान परिवर्तन करें, चन्द्रमा ५वें भाव में स्थित हो, शनि (५ का स्वामी) पर राहु की दृष्टि हो तथा बुध का प्रभाव हो तो जातक की सन्तान रोग ग्रस्त हो ।

(६७) गुरु यदि नवम भाव में हो तो व्यक्ति तृतीय अवस्था में वैराग्य अवश्य धारण करता है ।

(६८) १२वें भाव में सूर्य, बुध, शनि हो अथवा सूर्य, बुध हो व शनि की दृष्टि हो तो जातक का पिता परम भाग्यवान होता है ।

(६९) सूर्य, बुध, मंगल व शनि एक साथ १०वें, ५वें या ९वें भाव में हों तो जातक लक्ष्याधिपति होता है ।

(७०) चन्द्रमा स्व का १०वें भवन में हो, चन्द्रमा से केन्द्र १।४।७।१० में मंगल हो तथा ११वें भाव में (चन्द्रमा से) शुक्र व ९वें भाव में (चंद्र से) गुरु हो तो जातक का भाग्योदय ३९ वर्ष की अवस्था में होता है ।

अब मैं तुला लग्न वाले गण्यमानों की कुछेक जन्म कुण्डलियाँ दूँगा जिनमें उक्त योग घटित हुए हैं :—

१. हैदरअली—	मिथुन	वृश्चिक	धनु	मकर
८	राहु	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल बुध, गुरु, शनि	केतु	शुक्र

२. चेतन्य महाप्रभु—	मेष	सिंह	वृश्चिक	धनु	मकर	कूंभ	मीन
५	शुक्र	चन्द्रमा केतु	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य राहु	बुध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३. नरसिंह भारती

मेष	कर्क	वृश्चिक	मकर	कुंभ	मीन	सिंह
गुरु	शनि	मंगल	चन्द्र	वुध	सूर्य	केतु
				राहु	शुक्र	

४. रमण महर्षि—

मेष	मिथुन	वृश्चिक	धनु	कुंभ	मीन
मंगल	केतु	वुध	सूर्य	गुरु	शनि
	चन्द्रमा	शुक्र	राहु		

५. संत तुलसीदास—

वृष	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	कुंभ
केतु	मंगल	सूर्य	शनि	चंद्र	राहु	गुरु
		वुध				
		शुक्र				

६. महात्मा ईसा—

वृष	मिथुन	तुला	धनु	मकर	मीन
चंद्रमा	केतु	गुरु	राहु	शुक्र	मंगल
	शनि		वुध		
			सूर्य		

७. महात्मा गांधी—

वृष	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	मकर
गुरु	राहु	चन्द्रमा	सूर्य	मंगल	शनि	केतु
				वुध		
				शुक्र		

८. झांसी की रानी लक्ष्मीवाई—

वृष	कर्क	तुला	वृश्चिक	धनु
गुरु	मंगल	वुध	सूर्य	शुक्र
राहु		शनि	केतु	
		चन्द्रमा		

९. सर सी. पी. रमन्—

मेष	मिथुन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	कुंभ	मीन
मंगल	केतु	शुक्र	सूर्य	वुध	राहु	गुरु	शनि
			चन्द्रमा				

१०. महाराजा माधो सिंह—

मिथुन	कर्क	कन्या	तुला	मकर
चंद्रमा	केतु	शनि	शुक्र	राहु
		वुध		
		मंगल		
		सूर्य		
		गुरु		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

११. ओ० पी० नैय्यर— 10	कर्क राहु	वृश्चिक शनि मंगल	धनु बुध	मकर गुरु केतु सूर्य चन्द्र	कुंभ शुक्र		
१२. अकबर— 3	मिथुन चन्द्रमा	सिंह केतु	तुला गुरु शुक्र शनि	वृश्चिक सूर्य	धनु बुध	मकर मंगल	कुंभ राहु
१३. जहांगीर— 7	मेष चन्द्रमा	कर्क मंगल	सिंह सूर्य बुध राहु	कन्या शुक्र शनि	धनु गुरु	मीन केतु	
१४. जोजफ स्टालिन 'रूस'— 92.	मेष मं०	मिथुन केतु	तुला शुक्र	वृ० बुध	धनु सूर्य राहु	कुंभ गुरु	मीन चं० शनि
१५. ख्रुश्चेव 'रूस'— 8	मेष सूर्य	वृष गुरु	कन्या केतु चन्द्रमा	तुला शनि	मकर मंगल	कुंभ शुक्र	मीन राहु बुध
१६. हिटलर— 8	मेष सूर्य. बुध. शुक्र. मंगल.	मिथुन राहु.	कर्कट शनि.	धन. गुरु. चन्द्र. केतु.			
१७. विस्टन चर्चिल (प्रेसिडेन्ट ब्रिटेन)	मेष राहु	सिंह चन्द्र	कन्या मंगल	तुला गुरु बुध केतु	वृश्चि सूर्य	धन शुक्र	मक शनि

ही

१८ लोकेन्द्र बहादुर चन्द.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृश्चिक लग्न और योग

वृश्चिक लग्न होने पर क्रूर देव मंगल लग्नेश-प्रथमेश-षष्ठेश व ध्रुव केन्द्र के स्वामी होते हैं। द्वितीयेश-पंचमेश व प्रथम त्रिकोणेश गुरु महाराज होते हैं। तृतीयेश-सुखेश व केन्द्र के स्वामी शनि हो जाते हैं। शुक्र कलत्र भवन के स्वामी व द्वादशेश हो जाते हैं एवं केन्द्र के (७) अधिपति तो होते ही हैं। मृत्यु भवन एवं एकादशेश बुध तथा चंद्र-सूर्य क्रमशः भाग्येश-कर्मेश होते हैं।

पणफर स्वामी गुरु-बुध तथा उपचय स्थान के अधिष्ठाता शनि, मंगल, सूर्य, बुध होते हैं। आपोक्लिम-भवन के स्वामी शनि, मंगल, चंद्रमा व शुक्र होते हैं। त्रिकेश मंगल, बुध व शुक्र होते हैं।

अब मैं वृश्चिक लग्न पर आधारित कुछ विशिष्ट योग दे रहा हूँ जिन्हें पढ़कर प्रत्येक व्यक्ति स्वयं की कुण्डली का अध्ययन कर सकता है।

(१) षष्ठेश स्व का हो, लग्न में मंगल की राशि हो तो वह व्यक्ति शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा कोर्ट में भी सफलता प्राप्त करता है।

(२) प्रथम भाव में शनि हो तथा मंगल मेष का हो, लग्नेश दुःस्थान में हो तो जातक को मोतीझरे की बीमारी होती है।

(३) चन्द्रमा तृतीय भाव में हो, सूर्य व गुरु क्रमशः भाग्य भवन में व एकादश स्थान में हो, मंगल १०वें भाव में केन्द्र स्थान में हो तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जातक करोड़पति होता है तथा व्यवसाय में विश्व में प्रसिद्ध होता है।

(४) शनि लग्न में हो तथा सूर्य तीसरे भाव में हो तो जातक को हृदय का रोग होता है।

(५) लग्न में १०वें स्थान में शुक्र हो अथवा चन्द्रमा से १०वें स्थान पर शुभ ग्रह बैठा हो तो जातक प्रसिद्ध, गुणवान, ख्याति प्राप्त, चरित्रवान एवं धनवान होता है।

(६) भाग्येश चंद्रमा अपनी उच्चराशि वृष में सप्तम भाव में हो अथवा मूल त्रिकोण या स्वराशि का केन्द्र में (असंभव) हो एवं लग्नेश भी सप्तम भाव में शनि सहित हो तो जातक धनवान होता है। भाषण कला में पारंगत होता है।

(७) ४।७।१०वें भाव में भाग्येश व द्वितीयेश कहीं भी हो तो जातक शासक बनता है तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व लिए हुए होता है।

(८) गुरु लग्न में वृश्चिक राशि का हो, बुध कहीं केन्द्र में हो तथा नवमेश अथवा एकादशेश से युक्त हो तो जातक धनवान होता है।

(९) चन्द्रमा, शनि या मंगल से युक्त कर्क, मकर या मीन राशि में स्थित हो तो कुष्ठ रोग से जातक पीड़ित होता है।

(१०) षष्टम् भाव में मंगल व शनि हो तथा उन्हें सूर्य व राहु द्वादश भाव से देखते हों तो जातक को जलोदर का रोग होता है।

(११) चंद्रमा व शनि या मंगल राहु से युक्त तुला राशि में स्थित हो या ५वें या ८वें भाव में हो तो जीवन-भर कलह रहता है।

(१२) लग्न में शनि हो। ७।५ या ९वें भाव में भौम स्थित हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।

(१३) तृतीयेश व अष्टमेश लग्न में विराजमान हों तो जातक को गले का रोग होता है।

(१४) कुण्डली में लग्न में राहु हो तथा राहु से केतु के मध्य ही सारे ग्रह हों तो जातक को जीवन में सर्प अवश्य ही डसता है।

(१५) चन्द्रमा मेश का, सूर्य मिथुन राशि का, शनि तुला राशि में स्थित हो और मंगल २रे भाव में हो तो जातक अंधा होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१६) चन्द्रमा सिंह राशि में स्थित हो, वृश्चिक लग्न हो, मंगल स्त्री के घर में बैठा हो तथा सूर्य धनु राशि का हो तो जातक को अंग-भंग का योग होता है।

(१७) लग्न में शनि, मंगल हो तथा गुरु साथ में हो या बुध हो तो भिक्षुक योग अवश्यमेव होता है।

(१८) गुरु का संबंध षष्ठेश-अष्टमेश या द्वादशेश के साथ हो तो जातक महा दरिद्री होता है।

(१९) चंद्रमा दूसरे घर में स्थित हो, लग्नेश षष्टम भवन में तथा छठे घर का स्वामी लग्न में हो तो दरिद्र योग होता है।

(२०) सूर्य, बुध तथा शुक्र तीनों सप्तम स्थान में वृष राशि में स्थित हों तो बुध की महादशा जातक के जीवन की श्रेष्ठतम दशा होगी तथा इस समय उसे यश, ख्याति, सम्मान व कीर्ति प्राप्त होगी।

(२१) गुरु व बुध पंचम स्थान में हों तथा चंद्रमा ११वें भावस्थ हो तो जातक करोड़पति होता है।

(२२) चन्द्रमा, गुरु, केतु नवम भाव में हों तो विशेष भाग्योदय होता है। चंद्रमा भाग्येश है, गुरु के साथ स्थित हो गज केशरी योग बनाता है, गुरु अपनी उच्च राशि में भी होता है जो कि धनेश है।

(२३) बुध १०वें स्थान में तथा बृहस्पति चौथे भाव में बैठकर परस्पर दृष्टि डाल रहे हों तथा भाग्येश उच्च का सप्तम भाव में विराजमान हो तो जातक की ससुराल प्रबल व धनाढ्य होता है।

(२४) गुरु, शुक्र दोनों मकर राशि में तृतीय स्थान में हो तो उस जातक के संचित धन को कुपुत्र उड़ा देते हैं तथा उसे संतान सुख प्राप्त नहीं होता।

(२५) चतुर्थ भाव में अकेला शनि हो तो घर में पत्नी का शासन चलता है तथा जातक के वीर्य में न्यूनता रहती है।

(२६) गुरु दशम भाव में तथा शनि चतुर्थ भाव में हो तो जातक को भूमि से अत्यधिक लाभ होता है।

(२७) छठे भाव में शनि व मंगल की युति हो तो चौर्य कला में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जातक निपुणता प्राप्त करता है।

(२८) सप्तम भाव में शुक्र, शनि व राहु की युति व्यक्ति को धूर्त, लंपट व निश्चय ही पर स्त्री गामी या पर पुरुषगामी, बना देती है।

(२९) पंचम भाव में अकेला बुध हो तथा उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक शीघ्र ही विदेश यात्रा करता है।

(३०) ६ठे भाव में बुध हो तो जातक रोगी एवं लक्ष्याधिपति दोनों साथ-साथ होता है।

(३१) बुध-शनि दोनों ६ठे भवन में हों, चन्द्रमा मेष राशि का हो सूर्य पंचम भाव में मीन राशि का हो, मंगल, राहु ७वें भाव में स्थित हों तो जातक अवश्य ही पागल होता है।

(३२) लग्नेश दशम भाव में स्थित हो, अष्ठमेश लाभ भवन में सूर्य, चंद्र से युक्त हो, लग्नाधिपति के साथ म्लेच्छ ग्रह राहु भी हो, बुध ६ठे भाव से ६ठे हो तो हृदय गति के रुक जाने से तथा अचानक मृत्यु हो।

(३३) मंगल सप्तम स्थान में हो, सूर्य, गुरु द्वादश तथा शुक्र, बुध लग्न भाव में स्थित हों तो दिमागी रोग होता है।

(३४) १०वें स्थान में राहु हो, दशमेश लग्न में हो, लग्नेश नवम में हो तो जातक सेनानी या उच्च पदासीन होता है।

(३५) लग्नेश जहां बैठा हो, उस राशि का स्वामी यदि स्वग्रही या ५।६ भवन में या अपने मूल त्रिकोण अथवा केन्द्र में बैठा हो तो ४५ वर्ष में जातक का भाग्योदय होता है तथा वह भू संपत्ति प्राप्त करता है।

(३६) चंद्रमा व सूर्य दोनों एक स्थान पर हों तथा केन्द्र में हों उन पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक ६४वें वर्ष में उच्च अधिकार पद को प्राप्त करता है।

(३७) लाभेष, नवमेश व द्वितीयेश में से कोई भी ग्रह चंद्रमा से केन्द्र में हो और बृहस्पति द्वितीय, नवम या लाभेश हो तो जातक का १६वें वर्ष प्रबल भाग्योदय होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३८) नवमेश जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी गुरु युक्त यदि घन स्थान में हो तथा चतुर्थ स्थान में चंद्रमा हो तो एक विशेष भाग्योदय होता है।

(३९) गुरु भाग्य स्थान में हो, सूर्य मीन राशि में हो तथा वुध कर्क राशि में स्थित हो तो जातक अत्यन्त पराक्रमी व वैभवशाली होता है।

(४०) भाग्येश जिस नवांश में हो उसका स्वामी यदि उच्च राशि में पंचमेश के साथ भाग्य स्थान में हो तो लक्ष्मीवान, पुत्रवान व जातक समृद्धिशाली होता है।

(४१) दशमेश लग्न में शुक्र के साथ हो और वुध उच्च का लाभ भवन में हो तो जातक का भाग्योदय २८वें वर्ष में होता है।

(४२) गुरु सप्तम स्थान में हो, भाग्य भवन में शुक्र हो, प्रथम त्रिकोण (५) में चन्द्रमा हो तथा सूर्य चतुर्थ भाव में विराजमान हो तो जातक का ३० वर्ष की आयु में भाग्योदय होता है।

(४३) वृश्चिक लग्न के २ अंश हों, द्रेष्कोण कुण्डली में लग्न द्रेशकोण का स्वामी जन्म लग्नेश हो और नवांश कुण्डली में नवांश कुण्डली का स्वामी कुण्डली का भाग्येश हो तो ३२वें वर्ष में उत्तम भाग्योदय होता है।

(४४) लग्न में शनि हो, चन्द्रमा उसको पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो गड्ढे या खाई में जन्म हो।

(४५) वृश्चिक लग्न हो, समस्त क्रूर ग्रह चक्र के पूर्व भाग में हों और अन्य भागों में समस्त सौम्य ग्रह हों तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है।

नोट—पूर्व भाग का क्या अर्थ है ?—यदि वृश्चिक के १५ अंश उदित हों तो धनु, मकर, कुंभ के १५ अंश तक तथा सिंह के १५ अंश से आरम्भ कर कन्या, तुला वृश्चिक यह १८० अंश पूर्व भाग हुआ। बाकी का कुंभ के १५ अंश से आरम्भ कर मीन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के १५ अंश तक दूसरा भाग।

(४६) सूर्य मकर में हो और चन्द्रमा, मंगल तथा शनि इन दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो दमा, प्लीहा, गुल्म का रोग होता है।

(४७) बलवान चन्द्रमा शुक्र की राशि (२,६) में हो और मंगल के त्रिशांश में हो तो पर पुरुषगामिनी स्त्री हो, शनि के त्रिशांश में हो तो रखैल, गुरु के त्रिशांश में चतुर बुध के त्रिशांश में इष्टा और शुक्र के त्रिशांश में धनिक हो।

विषम राशियों में ० अंश से ५ अंश तक मंगल का त्रिशांश, ५ से १० अंश तक शनि का त्रिशांश, ११ से १८ अंश तक गुरु का त्रिशांश, १८ से २५ अंश तक बुध का त्रिशांश और उसके बाद ३० अंश तक शुक्र का त्रिशांश होता है। सम राशियों में क्रम उल्टा है। ० से ५ अंश तक शुक्र का त्रिशांश, उसके बाद १२ अंश तक बुध का त्रिशांश, १२ के बाद २० अंश तक गुरु का त्रिशांश और २५ के बाद ३० अंश तक मंगल का त्रिशांश होता है।

(४८) लग्न में वृश्चिक राशि हो, लग्न में चन्द्रमा हो, शुक्र वृश्चिक राशि का हो और उसे पाप ग्रह देखते हों तो जातक स्त्री पर पुरुषगामिनी होती है।

(४९) पंचमेश अकेला या बुध-गुरु के साथ ६।८।१२वें दुःस्थानों में से कहीं हो, मंगल व चन्द्र लग्न में बुध की दृष्टि में हों और चन्द्र व लग्नेश को मंगल देखता हो तो जातक मूर्ख होता है।

(५०) पंचमेश गुरु स्वगृही हो या केन्द्र व नवम स्थान में हो, ५वें भाव का स्वामी लग्न या चतुर्थ भाव में हो और बुध ४ या ९ भाव में अथवा लग्नेश के साथ हो तो जातक अवश्यमेव विद्वान होता है।

(५१) शनि, सूर्य, मंगल कोई भी वृश्चिक राशिस्थ ध्रुव केन्द्र में हो या बृहस्पति की दृष्टि १२वें भवन पर पड़े और नवमेश चन्द्रमा स्वगृही, उच्च का, शुभ दृष्टि में हो तो जातक विक्रम-सा दानी हो।

(५२) ५।७ में कहीं बिना दृष्टि के शनि-मंगल हों, शनि चन्द्र के साथ या चन्द्रमा शनि की दृष्टि में हो तो बालक गोद जाता है। ५वें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थान पर लग्नेश हो या लग्न में ५वें घर का स्वामी जाए। १।५।६।८। १२वें पर शुभ दृष्टि हो, ५वें को शनि-चन्द्र पूर्ण दृष्टि से देखें तो गोद अवश्य लेना पड़ता है।

(५३) १२वें व ६ठे घर में पापी ग्रह हों और उनके साथ न तो शुभ ग्रह हों और न कोई शुभ दृष्टि हो तो माता की मृत्यु होती है और धनु राशि में सूर्य के साथ राहु, बुध, शुक्र, शनि हों तो माता की पुत्र के साथ ही मृत्यु हो।

(५४) ४।१०।१२वें घर में पाप ग्रह हों तो मां-बाप दोनों मरें, मंगल, शनि, राहु नवम या ११वें हों तो पिता मरे और दूसरे भाव में सूर्य, मंगल, बुध, शनि मिल जायें व गुरु प्रथम स्थान में हो तो पिता पुत्र के विवाह में ही मर जाए।

(५५) लग्नेश धन भाव गत हो या धनेश-लाभेश गुरु, बुध एवं लग्नेश मंगल के साथ लाभस्थ हो तो गुप्त धन की प्राप्ति होती है।

(५६) द्वितीय एवं तृतीय भाव में जितने ग्रह हों उतने छोटे भाई एवं ११।१२ भाव में जितने ग्रह हों उतने ही बड़े भाई होते हैं।

(५७) चतुर्थेश केन्द्र में हो तथा उस केन्द्र भाव का अधिपति लग्नस्थ हो तो जातक के पास निजी वाहन होता है।

(५८) यदि शुक्र एवं चन्द्रमा में परस्पर दृष्टि सम्बन्ध हो अथवा शुक्र-चन्द्र में से एक ग्रह एक से दूसरा तृतीय में हो तो जातक वाहन युक्त होता है।

(५९) चतुर्थ भाव में कुंभ राशि हो तो जातक भाई बन्धुओं से विभाजन द्वारा अपना भाग प्राप्त करता है।

(६०) नवम स्थान में राहु हो तो महावीर की पूजा करनी चाहिए। रवि चन्द्र के योग होने पर शंकर की आराधना, मंगल-बुध का योग हो और मंगल पुरुष राशि में हो तो गजानन की पूजा, स्त्री का मंगल हो तो माताजी की पूजा, नवम भाव में गुरु हो तो दत्तात्रेय की पूजा। शुक्र पुरुष राशि का हो तो श्री कृष्ण व विष्णु की पूजा, स्त्री राशि का शुक्र हो तो दुर्गा की उपासना करनी चाहिए। शनि व राहु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नवम स्थान में हों तो ब्रह्म की उपासना करना उत्तम रहता है।

(६१) सूर्य लग्न, चन्द्र लग्न, लग्नेश तथा शुभ द्वितीय, पंचमेश, गुरु सब की परस्पर युति या दृष्टि हो तथा जातक धनवान एवं उच्च पदाधिकारी होता है।

(६२) चन्द्रमा केन्द्र में हो, चन्द्रमा उच्च का हो, सूर्य वृश्चिक का लग्न में हो, शुक्र तुला का स्वगृही द्वादश भावस्थ हो, गुरु ध्रुव केन्द्र में हो, बुध चन्द्र से ८वें पड़ा हो तो जातक की मासिक आय कई सहस्र होती है।

(६३) मंगल एकादश स्थान में हो, वृश्चिक राशि लग्न में हो, मंगल पर गुरु की ५वीं दृष्टि हो, शनि की दृष्टि कर्क से मकर पर हो, चन्द्रमा चतुर्थ भाव में हो तो जातक महान व्यक्ति ही बनता है।

(६४) मंगल उच्च का ३रे भवन में हो तथा गुरु भी उच्च का हो तो जातक महान बनता है।

(६५) मंगल व सूर्य लग्न जन्म को देखता हो, गुरु-शुक्र जन्म के लग्न को न देखते हों तो बैल के द्वारा जातक की मृत्यु होती है।

(६६) ६ठे स्थान में शुक्र हो तथा लग्न में मंगल हो तो जातक का नाक अवश्य छेदा जाता है।

(६७) ११वें स्थान में चन्द्रमा हो और कर्क का सूर्य भाग्य भवन में हो तो उस जातक का हठ द्वारा मरण होता है।

(६८) शुक्र, शनि या शुक्र, गुरु की जन्म कुण्डली में कहीं युति हो तो एवं उन पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो जातक लंगड़ा होता है।

(६९) पाप ग्रहों से रहित गुरु केन्द्र स्थान में हो वह जातक सम्मान पाने वाला, दान तथा गुण पात्रों से परीक्षित, कलाओं की खान गान विद्या एवं नृत्य कुशल, मंत्रियों का अधिपति और राजसभा के विचारों को जानने वाला होता है।

अब मैं उक्त वृश्चिक लग्न से सम्बन्धित कुछेक कुण्डलियां दे रहा हूँ, जिनके आधार पर उक्त योग भली प्रकार समझे जा सकते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१. बाबा रामदेव भक्त—
१२

मेष	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन
केतु	शनि	राहु	शुक्र	चन्द्रमा
	मंगल		बुध	
			गुरु	
			सूर्य	

२. चितरंजन दास—
१२

मिथुन	सिंह	तुला	धनु	मीन
गुरु	मंगल	सूर्य	शनि	चन्द्रमा
राहु		बुध	केतु	
		शुक्र		

३. चक्र राजगोपालाचार्य—
२

वृष	कर्क	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	मीन
चन्द्रमा	केतु	मं०	सूर्य	बुध	राहु	शनि
			शुक्र		गुरु	

४. महाराजा भवानीसिंह—
११

कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	कुंभ	मीन
गुरु	केतु	शुक्र	मंगल	शनि	चंद्र	राहु
		सूर्य				
		बुध				

५. सी. आर. दास—
१

मेष	मिथुन	कर्क	सिंह	तुला	वृश्चिक	धनु	मीन
चंद्र	गुरु	राहु	मं०	शुक्र	सूर्य	शनि	केतु
				बुध			

६. श्री के. जे. शाह—
३

मिथुन	कर्क	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ
राहु	गुरु	सूर्य	बुध	केतु	मंगल	शनि
चन्द्रमा		शुक्र				

७. डाकू मानसिंह—
४

मेष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	कुम्भ
राहु	मंगल	चंद्र	शुक्र	सूर्य	गुरु	शनि
			बुध	केतु		

८. मुसोलिनी—
२

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	तुला
केतु	चंद्रमा	गुरु	शुक्र	राहु
	मंगल		सूर्य	
	शनि		बुध	

९. श्री नासिर 'अरब'—
११

वृषभ	मिथुन	कर्क	धनु	मकर	कुम्भ
गुरु	केतु	शनि	मं०	बुध	शुक्र
			राहु	सूर्य	चंद्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०. कोसीगिन—'रूस'

वृष	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	मीन
गुरु	चंद्र	केतु	शनि	मंगल बुध	सूर्य	शुक्र	राहु

११. अय्यूब खाँ—'पाकिस्तान'

मेष	तुला	वृश्चिक	धनु
केतु	राहु सूर्य गुरु, बुध	मंगल शुक्र	चंद्रमा गुरु शनि

१२. राज ज्योतिष अनु. केन्द्र—

मेष	सिंह	कन्या	तुला	धनु	कुंभ	मीन
राहु गुरु	शुक्र	सूर्य	बुध केतु	मं०	चंद्र	शनि

१३. पोप पाल (१२वें)—

मेष	वृष	कन्या	वृश्चिक	कुंभ	मीन
मंगल	सूर्य बुध	केतु शनि	चंद्रमा	मंगल	राहु शुक्र

१४. हेनरी फोर्ड—

वृष	कर्क	सिंह	कन्या	वृश्चिक	मकर
केतु	सूर्य बुध	मंगल	गुरु शुक्र, शनि	राहु	चंद्रमा

१५. जान मिल्टन—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	वृश्चिक	मीन
सूर्य चन्द्रमा	शुक्र राहु	मंगल	गुरु शुक्र	केतु	बुध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धनु लग्न और योग

धनु योग होने पर सूर्य भाग्येश, चन्द्रमा मृत्यु भवन के अधिष्ठाता बुध सप्तमेश व दशमेश तथा गुरु लग्नेश व सुखेश एवं शुक्र शत्रु भवन के स्वामी तथा एकादशेश होते हैं। क्रूर व नपुंसक शनि द्वितीयेश-तृतीयेश हुआ करते हैं। ध्रुव केन्द्र के स्वामी गुरु तथा अन्य केन्द्राधिपति बुध व त्रिकोणेश मंगल-सूर्य होते हैं।

दुःस्थानों के स्वामी शुक्र, चंद्रमा एवं मंगल, पणफर पति शनि, मंगल, चन्द्रमा, शुक्र और उपचयेश शनि, शुक्र, बुध होते हैं। आपोक्लिम स्थानों के अधिष्ठाता होते हैं। शनि, शुक्र, सूर्य व मंगल, त्रिकेश शुक्र, चंद्रमा तथा मंगल होते हैं।

अब मैं धनु लग्न से सम्बन्धित कुछ योग देने का प्रयास कर रहा हूँ। इनकी सहायता लेकर साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी अपने ऊपर घटित योगों का निरूपण कर सकता है।

(१) लग्नेश व धनेश प्रथम भवन अर्थात लग्न में हो तो स्वयं श्रम करके अर्थोपार्जन करता है। द्वितीय भाव में हो तो यकायक अर्थ प्राप्ति हो, तृतीय में भाई से, सुख स्थान में होने पर माता से अर्थोपार्जन हो, त्रिकोण में होने पर पुत्र से, सप्तम भावस्थ लग्नेश-धनेश हो तो ससुराल द्वारा भाग्य भाव में होने पर भाग्य व कर्म से १०वें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राज्य से, एकादश स्थान में होने पर व्यापार से धन प्राप्त हो। किन्तु ये दोनों ग्रह छठे हों तो शत्रु द्वारा धन नाश ८वें हो तो जीवन पर्यन्त निर्धन व १२ में हो तो खूब खर्च कर धन हीन हो।

(२) केन्द्र में चार पाप ग्रह सूर्य, मंगल, शनि, राहु हों, धन भवन में पाप ग्रह हो, सूर्य, शुक्र, शनि साथ हो अथवा धन भवन में शनि-सूर्य और शनि-मंगल साथ हों तो जातक दरिद्री ही होता है।

(३) गुरु लग्न में, शुक्र ११वें भाव में तथा बुध दशम भाव में हो तो जातक कुलीन, कुशल व्यापारी, महादानी व सुखी होता है।

(४) सप्तम स्थान में सूर्य-मंगल हों तो वह द्विभार्या योग बनाता है अर्थात दो विवाह होते हैं। मंगल १।४।७।८।१२ हों तो वह अर्थात जातक की स्त्री जीवे नहीं।

(५) चंद्रमा ९वें भाव में हो तथा १० व ८वें भाव में कोई ग्रह न हो तो जातक दरिद्री होता है।

(६) सूर्य एकादश स्थान में हो तथा द्वादश व दशम भाव में कोई ग्रह न हो तो जातक दरिद्री होता है।

(७) बुध, सूर्य ५वें भवन में पड़ा हो तो जातक धनवान होता है।

√ (८) लग्नेश पञ्चम भाव में हो या ११वें हो तो देह से पुष्ट व दीर्घायु होता है। शुक्र ११वें भाव में हो और द्वादश या सप्तम भाव में गुरु हो, राहु छठे हो तो जातक अतुल संपत्ति प्राप्त करता है।

(९) चन्द्रमा से १।८।७।४।१२ इन स्थानों में राहु तथा मंगल व शनि हो तो उस पुरुष की स्त्री का नाश होता है।

(१०) चन्द्रमा भाग्य भवन हो तथा दशम स्थान में शनि, मंगल हों तो जातक उत्तम रति करने वाला धन संचय करने में दक्ष, व्यसनी बहुत क्रोधी, चुगलखोर व शत्रुओं से युक्त होता है।

(११) चन्द्रमा से द्वादश स्थान में बुध, शनि की युति हो, धनु लग्न हो तो जातक अनेक देशों में भ्रमण करने वाला धन के वशीभूत नहीं रहने वाला, अनेक विद्याओं को जानने वाला, स्वजनों से विरोध करने वाला होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१२) चन्द्रमा को छोड़कर बुध, सूर्य से १२वें भाव में हो तो जातक दूसरों की दृष्टि में दरिद्र, कोमल या निर्बल व निर्लज्ज होता है और यदि बुध के स्थान पर मंगल हो तो मातृ घातक व परोपकारी होता है।

(१३) धनु लग्न हो, शुक्र कुंभ राशिस्थ हो, मंगल मेष राशिस्थ हो, गुरु स्वराशि (धनु, मीन) का हो तो जातक का यश दिग्दिगन्त में व्याप्त होता है।

(१४) सूर्य से द्वितीय स्थान में गुरु हो, लग्न अपने नवांश में हो और १।४।६।१० स्थानों में बुध, शुक्र, चंद्रादि हों उसके घर सदैव लक्ष्मी निवास करती है।

(१५) गुरु, बुध लग्न में, सूर्य, शुक्र द्वितीय भाव में मंगल, राहु षष्ठम् भाव में तथा शेष ३ ग्रह अलग-अलग कहीं भी हों तो जातक आजीवन सुख भोगता है।

(१६) चंद्रमा ८वें भाव में हो, कर्क राशि में सूर्य, शुक्र, शनि स्थित हों तो विख्यात, शिल्पादि कलाओं का जानकार पतला पर दृढ़ शरीर से युक्त अनेक सन्तानों से युक्त व निरन्तर संपत्तिवान रहता है।

(१७) लग्न स्थान में मंगल स्थित हो और राहु, शनि व सूर्य सप्तम भाव में हों तो जातक चाहे इन्द्र के समान भी पराक्रमी क्यों न हो उसे स्थान तो छोड़ना ही पड़ेगा।

(१८) चन्द्रमा सूर्य को देखता हो तथा चन्द्रमा बुध द्वारा देखा जाता हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य भोगता है।

(१९) चाहे ग्रह कितनी भी बुरी स्थिति में विराजमान हो पर यदि बृहस्पति १।४।७।१०, ९।५ या ११वें भाव में विराजमान हो तो सारे दोषों की निवृत्ति हो जाती है।

(२०) धनु लग्न में १०वें स्थान में शनि हो तो जातक धनवान, विद्वान, शूरवीर, उच्च पदासीन नेता व प्रधान पद प्राप्त करता है।

(२१) धनु लग्न हो, केतु लग्न में हो, पंचम भाव में मंगल स्थित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो केतु का प्रभाव सिंह स्थित सूर्य पर हो, केतु पर शनि अपनी दृष्टि डाल रहा हो अर्थात् शनि तुला राशि में स्थित हो तो जातक को हृदय की गति रुक जाने का रोग हो।

(२२) नीच का मंगल हो और राहु की पंचम दृष्टि मंगल पर हो, शुक्र मकर राशिस्थ द्वितीय भाव में हो, सूर्य तृतीय व शनि लग्न में हो तो जातक रोगी हो।

(२३) शनि तुला राशि में हो जिस पर राहु, सूर्य दोनों की दृष्टि हो चन्द्रमा मकर राशि में स्थित हो तो जातक को सर्प दशन अवश्य होता है।

(२४) धनु लग्न हो, पंचम भाव में मंगल स्थित हो, गुरु द्वितीय भावस्थ हो, बुध की पूर्ण दृष्टि हो, केतु लग्न में हो। सूर्य, शुक्र, शनि द्वादश भावस्थ हों तो गर्भ गिरता है।

(२५) शनि, मंगल सुख भाव में एवं मीन राशि में स्थित हों गुरु, बुध १०वें भाव में विराजमान हों, शुक्र लग्न में हो तो जातक को मधुमेह का रोग अवश्य हो।

(२६) मंगल कन्या राशि में तथा बुध सूर्य लग्न में हो, केतु प्रथम त्रिकोण (पंचम भाव) में हो, गुरु, चन्द्र की युति मृत्यु भाव में हो तो अंग-भंग होता है।

(२७) शनि लग्न में धनु राशिस्थ हो तो जातक का दाहिना हाथ या दाहिना कान खराब होता है।

(२८) लग्न में स्थित शनि पर मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक को ब्लड-प्रेशर का रोग होता है।

(२९) लग्न व अष्टम भाव का परस्पर सम्बन्ध हो अथवा लग्न भाव से शनि का संबंध हो, मंगल से शनि संबंधित हो तो कुण्डली में जेल जाने का योग होता है।

(३०) दशम भाव में शुभ राशि कन्या हो, दशमेश त्रिकोण में हो अर्थात् बुध की स्थिति ५।९वें भाव में हो अथवा वह उच्च का हो, सूर्य १०वें भाव में हो तो उत्तम राजयोग होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३१) दशम भाव में कन्या राशि हो, भाग्येश, दशमेश सुख भाव में हो, बृहस्पति लग्न में स्वगृही हो तो जातक न्यायाधीश बनता है।

(३२) पूर्ण चन्द्रमा हो उस पर समस्त ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक उच्च शासनाधिकारी होता है।

(३३) पूर्ण चन्द्रमा अपनी उच्च राशि वृष पर हो तथा उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है।

(३४) गुरु कर्क राशि में तथा चंद्रमा वृष राशि में हो अर्थात् गुरु, चंद्र दोनों उच्च के हों तो जातक नेता होता है।

(३५) लग्न में शनि हो, गुरु ७वें भाव में हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो व्यक्ति राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है।

(३६) नवमेश सूर्य तथा शुक्र एकादशेश साथ-साथ बैठे हों तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।

(३७) धनु लग्न की कुण्डली में सूर्य, चन्द्र कहीं साथ-साथ बैठे हों तो दरिद्र योग होता है।

(३८) भाग्य भवन में मंगल, शनि हों तो जातक अवश्य ही गोद जाता है।

(३९) शनि, गुरु, नवम, पंचम का संबंध करता हो तो जातक अवश्य ही प्रोफेसर होता है।

(४०) शनि एकादश भाव में उच्च का तुला में हो तो पत्नी दीर्घायु होती है तथा पूर्णतः Self Made man होता है एवं उपार्जित धन से ऊँचा उठता है।

(४१) सप्तम भाव में मिथुन का मंगल हो तो व्यक्ति शौकीन परस्त्रीगामी व कामान्ध होता है।

(४२) नवम भाव में मंगल हो तो उसका धन पुत्रों द्वारा नष्ट हो जाता है नवम भाव में अर्थात् सिंह राशिस्थ राहु-मंगल हों तो पुत्र को घोर कष्ट पहुँचता है।

(४३) मिथुन राशि में सप्तम स्थान में मंगल-शुक्र हों तो उस जातक की स्त्री की मृत्यु जलने से या घावों के सड़ने से होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो केतु का प्रभाव सिंह स्थित सूर्य पर हो, केतु पर शनि अपनी दृष्टि डाल रहा हो अर्थात् शनि तुला राशि में स्थित हो तो जातक को हृदय की गति रुक जाने का रोग हो।

(२२) नीच का मंगल हो और राहु की पंचम दृष्टि मंगल पर हो, शुक्र मकर राशिस्थ द्वितीय भाव में हो, सूर्य तृतीय व शनि लग्न में हो तो जातक रोगी हो।

(२३) शनि तुला राशि में हो जिस पर राहु, सूर्य दोनों की दृष्टि हो चन्द्रमा मकर राशि में स्थित हो तो जातक को सर्प दशन अवश्य होता है।

(२४) धनु लग्न हो, पंचम भाव में मंगल स्थित हो, गुरु द्वितीय भावस्थ हो, बुध की पूर्ण दृष्टि हो, केतु लग्न में हो। सूर्य, शुक्र, शनि द्वादश भावस्थ हों तो गर्भ गिरता है।

(२५) शनि, मंगल सुख भाव में एवं मीन राशि में स्थित हों गुरु, बुध १०वें भाव में विराजमान हों, शुक्र लग्न में हो तो जातक को मधुमेह का रोग अवश्य हो।

(२६) मंगल कन्या राशि में तथा बुध सूर्य लग्न में हो, केतु प्रथम त्रिकोण (पंचम भाव) में हो, गुरु, चन्द्र को युति मृत्यु भाव में हो तो अंग-भंग होता है।

(२७) शनि लग्न में धनु राशिस्थ हो तो जातक का दाहिना हाथ या दाहिना कान खराब होता है।

(२८) लग्न में स्थित शनि पर मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक को ब्लड-प्रेशर का रोग होता है।

(२९) लग्न व अष्टम भाव का परस्पर सम्बन्ध हो अथवा लग्न भाव से शनि का संबंध हो, मंगल से शनि संबंधित हो तो कुण्डली में जेल जाने का योग होता है।

(३०) दशम भाव में शुभ राशि कन्या हो, दशमेश त्रिकोण में हो अर्थात् बुध की स्थिति ५।९वें भाव में हो अथवा वह उच्च का हो, सूर्य १०वें भाव में हो तो उत्तम राजयोग होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३१) दशम भाव में कन्या राशि हो, भाग्येश, दशमेश सुख भाव में हो, बृहस्पति लग्न में स्वगृही हो तो जातक न्यायाधीश बनता है।

(३२) पूर्ण चन्द्रमा हो उस पर समस्त ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक उच्च शासनाधिकारी होता है।

(३३) पूर्ण चन्द्रमा अपनी उच्च राशि वृष पर हो तथा उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है।

(३४) गुरु कर्क राशि में तथा चंद्रमा वृष राशि में हो अर्थात् गुरु, चंद्र दोनों उच्च के हों तो जातक नेता होता है।

(३५) लग्न में शनि हो, गुरु ७वें भाव में हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो व्यक्ति राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है।

(३६) नवमेश सूर्य तथा शुक्र एकादशेश साथ-साथ बैठे हों तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।

(३७) धनु लग्न की कुण्डली में सूर्य, चन्द्र कहीं साथ-साथ बैठे हों तो दरिद्र योग होता है।

(३८) भाग्य भवन में मंगल, शनि हों तो जातक अवश्य ही गोद जाता है।

(३९) शनि, गुरु, नवम, पंचम का संबंध करता हो तो जातक अवश्य ही प्रोफेसर होता है।

(४०) शनि एकादश भाव में उच्च का तुला में हो तो पत्नी दीर्घायु होती है तथा पूर्णतः Self Made man होता है एवं उपार्जित धन से ऊँचा उठता है।

(४१) सप्तम भाव में मिथुन का मंगल हो तो व्यक्ति शौकीन परस्त्रीगामी व कामान्ध होता है।

(४२) नवम भाव में मंगल हो तो उसका धन पुत्रों द्वारा नष्ट हो जाता है नवम भाव में अर्थात् सिंह राशिस्थ राहु-मंगल हों तो पुत्र को घोर कष्ट पहुँचता है।

(४३) मिथुन राशि में सप्तम स्थान में मंगल-शुक्र हों तो उस जातक की स्त्री की मृत्यु जलने से या घावों के सड़ने से होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४४) दशम भाव में बुध हो तथा सुख स्थान में राहु या शनि अथवा राहु-मंगल हों तो जातक राज्य सेवा में उच्च पद पाकर पतनोन्मुख होता है।

(४५) शनि पंचम भाव में हो तो वह अपनी दशा में जातक को धनाढ्य यशस्वी एवं सुखी बनाता है।

(४६) चन्द्रमा वृष का शत्रु घर में तथा बृहस्पति भाग्य भवन में हो अर्थात् गुरु चंद्रमा से केन्द्र में हो तो जातक अनेक मित्रों, प्रशंसकों एवं संबंधियों से घिरा रहता है एवं उनके द्वारा सराहा जाता है।

(४७) बुध अपनी राशि का होकर या मूल त्रिकोण अथवा उच्च राशि का होकर केन्द्र में स्थित हो तो जातक सिंह सदृश्य पराक्रमी और शत्रुओं का विनाश करने वाला होता है। विशाल वक्षस्थल प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व, उन्नति की निरन्तर चाह रखने वाला होता है। विलक्षण बौद्धिक प्रतिभा एवं सहज कार्य क्षमता होती है।

(४८) लग्नेश गुरु केन्द्र में हो तथा शुक्र देखता हो अथवा सप्तम भाव में दो शुभ ग्रह हों तो जातक उच्च प्रतिष्ठित एवं राज्य मान व्यक्तियों द्वारा पूजा जाता है। स्वयं विद्वान होता है। वेद आदि शास्त्रों का ज्ञाता होता एवं पूर्णायु होता है।

पंचमेश ६।८।१२ में से किसी भाव के साथ हो तो दरिद्री योग होता है।

(५०) धनु लग्न में जन्म लेने वाले जातक अधिकांशतः दार्शनिक विचारों के होते हैं, ईश्वर में दृढ़ आस्था तथा दूसरों पर शीघ्र विश्वास कर लेते हैं। सुन्दर व सजीले, गोल व आकर्षक चेहरा, पैनी नजर व मोहक मुस्कान व शारीरिक रूप से साधारणतः स्थूल होते हैं।

(५१) सूर्य तृतीय स्थान में हो तथा उस पर पाप ग्रह शनि-मंगल की दृष्टि हो तो बड़े भाई का नाश हो।

(५२) धनु लग्न हो तथा मंगल ६।८वें स्थान में हो तो जातक बुद्धिहीन होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५३) पंचमेश बुध व गुरु से युक्त होकर केन्द्र १।४।७।१० या त्रिकोण ५।९वें भाव में हो तो जातक तीक्ष्ण बुद्धि वाला समझदार होता ह ।

(५४) राहु व केतु केन्द्र में हों और त्रिकोणपति से सम्बन्ध करे या राहु, केतु त्रिकोण में हों और केन्द्रेश से सम्बन्ध करे तो उत्तमोत्तम राजयोग होता है ।

(५५) लग्नेश गुरु, कर्मेश बुध व अष्टमेश चंद्रमा केन्द्र ११ भाव या त्रिकोण में स्थित हो तो दीर्घायु योग बनता है। तृतीय या चतुर्थ स्थान में पापग्रह हों या पणफर में कोई ग्रह हो तो मध्यायु ही होती है ।

√(५६) राहु १०वें भाव में विराजमान हो, बुध मेष राशि में स्थित हो और मंगल उच्च का होकर द्वितीय भाव में बैठा हो तथा नवमेश सूर्य सप्तम भाव में स्थित हो तो जातक के पास निजी भूमि खूब हो ।

(५७) दशमेश नवमेश के नवमांश में हो तथा दशमेश व नवमेश द्वितीय स्थान में हो तो विष्णु भक्त एवं लक्ष्मीवान होता है ।

(५८) पंचमेश भाग्य भवन में हो तथा एकादशेश चंद्र युक्त लग्न से द्वितीय हो तो भाग्य योग व प्रबल धन योग बनता है ।

(५९) लग्नेश गुरु दशम स्थान में हो, सप्तमेश चंद्रमा से दूसरे स्थान में हो एवं लग्न में शुभ ग्रह हो तो जातक का भाग्योदय १२वें वर्ष होता है ।

(६०) राहु स्थित राशिपति जहाँ बैठा हो, उस भाव से नवम या पंचम अर्थात् त्रिकोण में मंगल के साथ सूर्य बैठा हो तो जातक का भाग्योदय १३वें वर्ष में होता है ।

(६१) राहु कन्या राशि में स्थित हो तथा कन्यापति बुध अपने में उच्च का विराजमान हो तथा शनि चतुर्थ भावस्थ होकर बुध को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो वह जातक बड़ा व्यापारी होता है ।

(६२) लग्न में राहुयुक्त सूर्य हो और त्रिकोण व अष्टम भाव में पापग्रह हों तो बालक का विनाश शीघ्र ही हो जाता है ।

(६३) चन्द्रमा नवम भाव में हो तथा दशम भाव में व अष्टम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाव में पापग्रह हों तो गिरने या अग्नि से मृत्यु होती है।

(६४) यदि सूर्य, मंगल सप्तम में हो, शनि अष्टम में हो, चतुर्थ में चन्द्रमा हो तो जातक की मृत्यु वायु दुर्घटना से होती है।

(६५) लग्न में सूर्य हो, पंचम में मंगल हो, अष्टम भाव में शनि हो और नवम भाव में चंद्रमा हो तो पर्वत आदि से गिर कर मृत्यु हो।

(६६) सूर्य और चंद्रमा मिथुन राशि (द्वि स्वभाव राशि ३, ६, ९, १२) में हो तो जातक की मृत्यु जल से अवश्य होती है।

(६७) लग्न में शनि हो, दशम में सूर्य हो और सूर्य के साथ अष्टमेश की युति हो, सुख भवन में गुरु हो तो विशिष्ट राजयोग होता है।

(६८) भाग्येश भाग्य स्थान में व पंचमेश पंचम स्थान में हो तो वह जातक धनवान होता है।

(६९) लग्न में चंद्रमा और शुक्र यदि शनि या मंगल से युक्त हो तथा पंचम भाव पर पापग्रह की दृष्टि हो तो वह स्त्री वन्ध्या होती है।

(७०) सप्तम में राहु से युक्त सूर्य अथवा अष्टम भाव में राहु से युक्त गुरु और शुक्र हो, पंचम भाव पापयुक्त हो तो वह स्त्री निश्चय ही मृत्वत्सा होती है।

अब मैं उक्त योगों से संबंधित विशेष जनों की कुण्डलियाँ दूंगा जिनके आधार पर इन योगों को भली प्रकार समझा जा सके।

१. टीपू सुल्तान—

मेष	वृषभ	तुला	वृश्चिक	कुंभ
चंद्रमा	केतु	शुक्र	सूर्य	मंगल
	गुरु		बुध	
			शनि	
			राहु	

२. ~~स्वामी विवेकानन्द~~—

मेष	वृषभ	कन्या	तुला	वृश्चिक	मकर
मं०	केतु	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
		चंद्रमा			बुध
					सूर्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३. मणिक महाप्रभु—

मेष	वृष	मिथुन	वृश्चिक	धनु	कुंभ
राहु	मंगल	चन्द्रमा	शुक्र केतु	सूर्य बुध गुरु	शनि

४. चौधरी चरण सिंह—

कन्या	धनु	मकर	मीन
चन्द्रमा मंगल राहु	सूर्य बुध शुक्र	गुरु शनि	केतु

५. ईश्वरचंद्र विद्यासागर—

वृष	कर्क	कन्या	तुला	कुंभ	मीन
चं०	शुक्र	केतु सूर्य बुध	मंगल	गुरु	शनि राहु

६. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद— ठीक

वृषभ	मि०	सिंह	कन्या	तुला	वृ०	धनु	मीन
चं०	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	मं० बुध	केतु

७. ~~नेताजी सुभाष चंद्र बोस~~—

वृषभ	कर्क	सिंह	कन्या	वृ०	मकर	कुंभ
मंगल	केतु	गुरु	चंद्रमा	शनि	बुध राहु सूर्य	शुक्र

८. लालबहादुर शास्त्री— ठीक

मेष	सिंह	कन्या	तुला	मकर	कुंभ
गुरु	राहु मंगल	सूर्य चंद्रमा बुध	शुक्र	शनि	केतु

९. रामकिशोर व्यास—

वृष	मिथुन	कर्क	धनु	कुंभ	मीन
बुध सूर्य	मंगल शुक्र राहु	गुरु	केतु	चं०	शनि

१०. मोहनलाल सुखाड़िया—

मेष	कर्क	मिथुन	सिंह	कन्या	मकर
गुरु	सूर्य बुध केतु	शुक्र शनि	चंद्रमा	मंगल	राहु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

११. दीनदयाल उपाध्याय—

मेष	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	मकर
गुरु	शुक्र	चं०	सूर्य	मंगल	राहु
	शनि		वुध		
	केतु				

१२. वी० के० मेनन—

मेष	वृष	कर्क	सिंह	तुला	मकर	कुंभ
सूर्य	वुध	गुरु	केतु	शनि	चंद्रमा	मंगल
शुक्र						राहु

१३. गायक बाल गन्धर्व –

मिथुन	कर्क	कन्या	वृश्चिक	मकर
सूर्य	राहु	मंगल	गुरु	चन्द्रमा
वुध	शनि			केतु
शुक्र				

१४. रोम सम्राट नीटो—

कर्क	सिंह	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
केतु	चं०	शनि	गुरु	सूर्य	राहु
				वुध	शुक्र
					मंगल

१५. महारानी एलीजाबेथ—

मेष	मि०	कर्क	वृ०	ध०	मकर	कुं०	मीन
सूर्य	राहु	चं०	श०	के०	मं०	शु०	वुध
					गुरु		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मकर लग्न और योग

मकर लग्न होने पर भगवान भाष्कर अष्टमाधिपति तथा चन्द्रमा सप्तमेश होते हैं। षष्ठेश भाग्येश बुध तथा द्वादशेश-तृतीयेश बृहस्पति हो जाते हैं। पंचमाधिपति एवं कर्माधिपति शुक्र एवं लग्नेश द्वितीयेश क्रूर शनि होते हैं। मंगल सुखेश के साथ-साथ एकादशेश भी होते हैं।

केन्द्राधिपति शनि, मंगल, चन्द्रमा तथा शुक्र और ध्रुव केन्द्र के अधिष्ठाता शनि, त्रिकोणेश शुक्र, बुध और दुःस्थानों के अधिपति बुध-सूर्य व गुरु होते हैं। त्रिकपति-बुध, सूर्य एवं गुरु, उपचयेश गुरु, बुध, शुक्र, पणफर शनि, शुक्र, सूर्य, मंगल, आपोक्लिम गुरु, बुध, होते हैं।

अब मैं तत्सम्बन्धी विशेष लग्न यहाँ दे रहा हूं जो मकर लग्न होने पर विशेष रूप से घटित होते हैं।

(१) तीसरे शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो और दशवें सूर्य या मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(२) छःवें स्थान में सूर्य-मंगल हो तथा चन्द्रमा मिथुन राशिस्थ हो युति करे तो जातक बालक ६ माह जीए।

(३) ६।८।१ राहु हो तो चौथे वर्ष में बालक की मृत्यु निश्चय ही होती है।

(४) लग्न में शुक्र-बुध तथा केन्द्र में १।४।७।१० भाव में गुरु हो तथा मंगल हो तो बालक अपने कुल में दीपक होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५) लग्न में शनि, ६वें चन्द्रमा, ७वें भावस्थ मंगल हो तो पिता किसी प्रकार नहीं जीता है।

(६) जन्म के समय राहु सुख भवन में स्थित हो तथा चन्द्रमा ६।८ भाव में हो तो वालक की तत्काल मृत्यु समझी जानी चाहिए।

(७) मकर लग्न हो, वृष राशि में स्थित चन्द्रमा, त्रिकोण में गुरु (५।६ में) हो, ५।६।१० में मंगल विराजमान हो तो जातक की आयु १०० वर्ष की होती है।

(८) स्व का द्वितीय भाव में शनि कुंभ राशिस्थ हो, राहु व मंगल की युति शनि के साथ हो। पत्नी भाव में शुक्र-गुरु हो और ८वें भाव में अर्थात् सिंह राशि में सूर्य-चन्द्रमा हो तो वह जातक निश्चय ही वेश्यागामी होता है।

✓(९) कन्या की जन्म-कुण्डली हो तथा सप्तम भाव में अर्थात् कर्क राशि में सूर्य-मंगल हो तो वैधव्य भोगना पड़ता है।

(१०) स्त्री की जन्म-कुण्डली हो तथा मकर लग्न हो और लग्न में सूर्य-मंगल हो तो वह स्त्री विधवा होती है। राहु या केतु हो तो सन्तान का नाश, शनि हो तो दरिद्री होती है।

(११) मकर लग्न की स्त्री कुण्डली में सप्तम भाव में सूर्य हो तो वह पति को त्याग देती है, यदि मंगल सप्तम भाव में हो तो जातक स्त्री अवश्य विधवा हो, यदि शनि सप्तम भाव में हो तो वड़ी होने पर विवाह होता है, चन्द्रमा अपूर्व सौंदर्य व बुध रहे तो अतुल सौभाग्य प्राप्त होता है, गुरु सर्व-सुख प्रदान करता है तथा शुक्र भोग-लालसा में वृद्धि करता है।

(१२) १।४।७।६ स्थानों में यदि सूर्य, मंगल, राहु, शनि बैठे हों तो अन्न-धन का नाश होता है।

(१३) लग्न को गुरु तथा शुक्र नहीं देखते हों, मंगल-सूर्य-चन्द्रमा को न देखता हो अथवा चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त सूर्य के साथ हो, वह दूसरे का जन्मा बालक होता है।

(१४) लग्न में सूर्य हो, दशवें-७वें क्रमशः शनि-मंगल तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुख भाव में राहु हो तो वह व उसका परिवार भी पूर्ण दरिद्री होता है।

(१५) सूर्य केन्द्र में हो और चन्द्रमा अपने मित्र के नवमांश में हो तथा चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो जातक धनवान व गुणवान होता है।

(१६) द्वितीय त्रिकोण अर्थात् कन्या राशि में राहु-शुक्र-मंगल-शनि हो तो जातक कुबेर से भी अधिक धनवान होता है।

(१७) यदि मीन राशि अर्थात् तृतीय भाव या सहज भाव में सूर्य हो तो उसके बड़े भाई या बहन का नाश होता है। यदि शनि मंगल हो तो छोटे भाई-बहिन की मृत्यु होती है, यदि राहु हो तो छोटे-बड़े दोनों का नाश, यदि केतु हो तो उपरोक्त सभी दोष मिट जाते हैं।

(१८) धन स्थान में पाप ग्रह हों, सहज भाव में शनि के साथ मंगल राहु हो तो उसका भाई नहीं जीता है।

(१९) सभी ग्रह २।६।१०वें स्थान अथवा ३।७।११वें स्थान अथवा ४।८।१२वें स्थान में हों तो जातक बहुभक्षी, दरिद्र, दुःखी, कृषक व भाई-बहिनों से युक्त होता है।

(२०) राहु, सूर्य, मंगल, शनि चौथे व दसवें भाव में स्थित हैं तो जातक बाल्यकाल व वार्धक्यावस्था में सुखी, शूरवीर, सुन्दर, भाग्य से मंद, पुलिस व सेना में नौकरी करने वाला तथा खल प्रकृति का होता है।

(२१) समस्त शुभ ग्रह ४।१० तथा शुभ ग्रह १।७वें भाव में स्थित हों तो जातक व्रतादि में तत्पर, मध्यावस्था में सुखी, धन-पुत्रादि से युक्त दाता, स्थिर बुद्धि तथा २४ वर्ष की अवस्था में भाग्योदय होता है।

(२२) लग्न भाव, द्वितीय, तृतीय एवं सुख स्थान के मध्य में समस्त ग्रह हों तो जातक आत्मज्ञानी, यज्ञकर्त्ता, स्त्री से सुखी, बलवान्, व्रतादि का पालन करने वाला, पंचायती करने वाला व सफल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
व्यक्ति होता है।

(२३) प्रथम त्रिकोण, शत्रु भाव, सप्तमभाव तथा मृत्यु भाव के मध्य प्रायः समस्त ग्रह हों तो जातक जेल का निरीक्षक, शिकारी, कुत्सित कर्म करने वाला, पुलिस अधिकारी एवं नीच कर्मरत, दुराचारी होता है।

(२४) अष्टम, भाग्य भवन, कर्म भाव तथा एकादश स्थान के मध्य में समस्त ग्रह हों तो जातक धनहीन, निष्फल, दुःखी, आलसी, दीर्घायु, दीर्घसूत्री, निर्दय एवं छोटा व्यापारी होता है। ऐसा व्यक्ति तस्करी का कार्य अवश्य करता है।

(२५) दशम, एकादश, द्वादश व लग्न के मध्य सभी ग्रह हों तो वह जातक दुःखी, पीड़ित, निर्धन व नीच कर्मी होता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में कभी सफलता प्राप्त नहीं होती।

(२६) लग्न से स्त्री भाव के मध्य समस्त ग्रह स्थित हों तो जातक नौसैनिक, स्टीमर या जलयान का चालक कप्तान, पनडुब्बी में प्रवीण तथा मोती, सीपादि निकालने में प्रवीण होता है। धनिक होता है पर कंजूस प्रकृति का होने से वदनाम भी होता है।

(२७) सप्तम से लग्न तक सभी ग्रह हों तो जातक जेल का कर्मचारी, धनहीन, शठ, मूर्ख, क्रूर, पुल या भवन निर्माण कला में प्रवीण होता है।

(२८) लग्न अथवा चन्द्र लग्न से गुरु यदि केन्द्र में हो उस पर मात्र शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, गुरु अस्त, नीच, शत्रु राशि में न हो तो जातक मुख्य मन्त्री वनता है।

(२९) नवमेश बुध नवम भाव व त्रिकोण में उच्च का हो एवं अन्य समस्त ग्रह १।२।७।१२वें भाव में हों, भाग्येश बली होने, गुरु, शुक्र, लग्नेश १।४।७।१० भाव में कहीं हों तो वह जातक सुखी, उन्नतिशील, कीर्तिवान्, गुणी, आचारवान् एवं समस्त अभ्युदयों को प्राप्त करने वाला होता है।

(३०) शनि दशम भाव में उच्च का हो, बुध, गुरु, शुक्र व सूर्य,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रादि १।४।७।१०वें केन्द्रस्थ भावों में हो तो व्यक्ति उच्च शासनाधिकारी होता है।

(३१) शुक्र, वृष राशि में अर्थात् दशमेश प्रथम त्रिकोण भाव में हो, बुध पत्नी भाव में हो, सूर्य अष्टम भाव में स्व राशिस्थ हो अथवा चन्द्रमा से ९वें भाव में गुरु हो या बुध हो एवं मंगल एकादश भाव में स्वगृही हो तो जातक धनवान, स्त्री-पुत्रादि से युक्त, सुखी, विद्वान्, राजमान्य व धर्मात्मा होता है।

(३२) द्वादश भाव, चन्द्रमा से द्वितीय भाव या चन्द्र के साथ कोई ग्रह न हो और लग्न से केन्द्र में सूर्य को छोड़कर अन्य कोई ग्रह न हो तो वह जातक दरिद्री व निन्दित होता है।

(३३) लग्नेश पंचम में व पंचमेश लग्न में हो, आत्मकारक व पुत्रकारक दोनों लग्न या पंचम में हो, अपने उच्च, राशि या नवांश में तथा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक राज्यपाल या मुख्यमन्त्री अवश्य होता है।

(३४) पंचमेश, लग्नेश, तृतीयेश, चतुर्थेश, षष्ठेश, सप्तमेश, नवमेश व द्वादशेश के साथ हो तो जातक व्यापारी भी और जमींदार भी होता है अर्थात् उच्च पदाधिकारी भी।

(३५) सप्तमेश, नवमेश व शुक्र साथ हों तो ससुराल से अर्थ की प्राप्ति होती है।

(३६) तृतीय भाव में गए हुए नवांश (ग्रह की) की जो संख्या हो उतने ही भाई-बहिन होते हैं।

(३७) चतुर्थेश तथा चंद्रमा ६।८।१२वें दुःस्थान में पड़े हों, शुभ ग्रह उनके न तो साथ हों तथा न उन पर दृष्टि ही हो अपितु वे पाप ग्रहों के मध्य हों, पाप युक्त या पाप दृष्टि हो तो माता की शीघ्र मृत्यु हो जाती है।

(३८) नवम में सूर्य, चतुर्थ में चन्द्रमा, तृतीय भाव में मंगल, ५वें भाव में गुरु, सप्तम भाव में शुक्र और अष्टम भाव में शनि हों तो वे उस भाव सम्बन्धी क्लेश देते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३९) शनि नवमेश होकर चर राशि में बैठे और शुभ दृष्ट या ग्रह से (शुभ) दृष्ट न हो और सूर्य दुःस्थान में हो तो जातक को उसके पिता के अतिरिक्त कोई पालता है।

(४०) यदि सूर्य और चंद्रमा, शनि और मंगल से त्रिकोण (५।९) में हो तो बालक के माता-पिता उन्हें छोड़ देंगे किन्तु उन पर (सूर्य-चंद्र पर) बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक चिरायु व सुखी होता है।

(४१) गुरु ६ठे हो, शुक्र ८वें, मंगल, चंद्र लाभ स्थान में हों तथा नवम भाव में कन्या राशि का शनि हो तो उत्कृष्ट भाग्योदय होता है।

(४२) शनि लग्नेश होकर नीच का पड़ा हो तथा नीच राशि का स्वामी भी मंगल लग्न अथवा चन्द्र से केन्द्र में न हो और न तुला राशि का स्वामी शुक्र लग्न या चन्द्रलग्न से केन्द्र में हो तो शनि अत्यन्त शुभ फलदायी हो जाता है।

(४३) शनि मेष राशि में, शनि पर बृहस्पति की ७वीं दृष्टि हो, सूर्य, बुध भाग्य भाव में हो, चन्द्रमा षष्टम भवन में हो तो जातक परम भाग्यशाली व विख्यात होता है।

(४४) बुध स्व का उच्च का नवम भाव में हो, केतु व बुध की युति हो। गुरु की बुध-केतु पर पूर्ण दृष्टि हो तो जातक उच्च पदाधिकारी होता है।

(४५) चन्द्रमा मेष राशि में स्थित हो और गुरु द्वारा दृष्ट हो तो वह व्यक्ति अनेक नौकर-चाकरों से युक्त, धनाढ्य, व मंत्री अथवा सेनापति होता है।

(४६) मकर लग्न हो और शनि बलवान हो तो जातक को माता से लाभ रहता है।

(४७) मंगल उच्च का लग्न भवन में अर्थात् मकर राशि में हो तथा मकर राशि का स्वामी शनि पुनः केन्द्र में तुला राशि में उच्च का हो, गुरु भी पुनः उच्च का हो तो भाग्य, धन व ऐश्वर्य में जातक अद्वितीय होता है।

(४८) लग्नेश, दशमेश एक राशि में हो और एक मंद गति ग्रह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केन्द्र में हो तो जातक को स्थायी पद की प्राप्ति होती है पर यदि मंद गति ग्रह वक्री हो तो या चतुर्थ में हो तो पदच्युति हो जाती है।

(४९) शनि राहु के साथ चन्द्रमा लगनस्थ तथा मंगल मृत्यु भाव में सिंह राशिस्थ हो तो माता एवं पुत्र दोनों ही को मृत्यु अथवा अरिष्ट कारक होता है।

(५०) गुरु व चन्द्रमा की युति यदि ४।५।९।११वें भाव में से कहीं भी हो तो जातक को यकायक अर्थ प्राप्ति होती है।

(५१) चन्द्रमा व मंगल एक साथ १।४।७।१० केन्द्र भावस्थ ५।९ त्रिकोण में अथवा २।११ भाव में कहीं हो तो जातक धनाढ्य होता है।

(५२) धनेश तुला राशि में एवं लाभेश मंगल मकर राशिगत अर्थात् लग्न में हो तो जातक धनवान होता है।

(५३) बुध पंचम भावस्थ हो तथा चन्द्र, मंगल की युति लाभ भाव में हो तो जातक को यकायक अर्थ लाभ होता है।

(५४) चतुर्थेश मंगल व सप्तमेश चन्द्रमा सप्तम भाव में ही स्थित हो तो जातक को ससुराल से अर्थ प्राप्ति होती है।

(५५) सप्तमेश चन्द्रमा धन भाव में यदि हो तो खोई हुई सम्पत्ति पुनः प्राप्त होती है अथवा विवाहोपरान्त आर्थिक दशा और अधिक सुदृढ़ होती है।

(५६) अष्टमेश पाप ग्रह से युक्त होकर दशम भावस्थ हो तो राज्य पुरस्कार प्राप्त करता है अथवा दत्तक जाता है।

(५७) सूर्य मीन राशिगत हो तथा उसे चंद्रमा देखता हो तो वह अत्यन्त सुन्दर, शोभायवान वदनवाला, पुत्र सुख सहित वाणी विलास में कुशल होता है।

(५८) लग्नेश निर्बल होकर पापी ग्रहों के मध्य हो। कन्या या मिथुन का ६ठे स्थान में शुक्र हो तो स्वांस रोग होता है।

(५९) अष्टम भाव में पापी ग्रह के साथ बृहस्पति हो और लग्न में मंगल हो तो वेहोशी हो, चक्कर आये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६०) अष्टम स्थान में गुरु व शुक्र हो, सप्तम में कर्क राशि में बुध हो, सूर्य लग्न से सप्तम, चन्द्रमा लग्न से पंचम और शनि लग्न से ११वें स्थान में हो तो जातक गुण सम्पन्न एवं उच्च पदाधिकारी होता है।

(६१) चर लग्न हो, रात्रि में जन्म हो, शनि तुला राशि में (उच्च का) चंद्रमा के साथ दशम में हो तो जातक का भाग्योदय ३०वें वर्ष में होता है।

(६२) तृतीयेश गुरु उच्च का सप्तम भाव में हो, शुक्र की गुरु पर पूर्ण दृष्टि हो तो जातक का भाग्योदय १३वें वर्ष होता है।

(६३) तृतीय स्थान में मीन का चंद्रमा हो, ६ठे मंगल, ९ भाव में बुध व द्वादश भाव में गुरु हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है।

(६४) लग्न में शनि हो, ४।७।८।९।१० के स्वामी उन-उन भावों में स्वगृही हों अर्थात् मेष का मंगल, कर्क का चंद्रमा, सिंह का सूर्य, कन्या का बुध व तुला का शुक्र तो उत्तम राजयोग बनता है।

(६५) शुक्र व वृष राशि तथा शनि व कुंभ राशि पर राहु व शनि का प्रभाव हो अर्थात् राहु मेष राशि में, शनि द्वादश भाव में व शुक्र ५वें भाव में हो, मंगल अष्टम भाव में हो तो जातक को गले का कैंसर होता है।

(६६) सूर्य द्वितीय भाव में स्थित हो, मंगल व केतु की दृष्टि हो चंद्रमा भाग्य स्थान में हो, शनि दशम भाव में हो, शुक्र मीन राशिस्थ हो तो १०-१२ वर्ष की अवस्था में जातक अन्धा हो।

(६७) अष्टम भवन में सूर्य, मंगल, राहु हो, शनि पंचम भाव में हो तो जातक आत्महत्या करता है।

(६८) शनि द्वितीय भावस्थ होकर मृत्यु भाव को देखता हो, सूर्य, मंगल चतुर्थ स्थान में हो तो जातक आत्महत्या करता है।

(६९) सूर्य व राहु शत्रु भवन में तथा शनि तुला राशि में स्थित हो, गुरु द्वितीय भाव में स्थित हो, चंद्रमा कन्या राशि में स्थित हो तो नींद न आने का रोग होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(७०) मंगल मिथुन राशिस्थ हो व षष्ठेश चतुर्थ भाव में हो, शनि की दृष्टि चतुर्थ भाव पर हो, बुध मेषस्थ हो तो जातक की रुग्ण अवस्था रहती है।

(७१) गुरु लग्न में हो व शुक्र तुला राशि में स्वगृही हो तथा लग्नेश शुक्र की युति हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है तथा धनाढ्य होता है।

अब मैं कुंभ राशि से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट कुण्डलियाँ दे रहा हूँ जिनके आधार पर इन योगों को भली प्रकार समझा जा सकता है।

१. भगवान महावीर—

मेष	वृष	कर्क	तुला	मकर	कन्या
सूर्य	शुक्र	गुरु	शनि	मंगल	चंद्रमा
बुध		राहु		केतु	

२. महिर बाबा—

वृष	कन्या	तुला	धनु	कुंभ	मीन
गुरु	राहु	चंद्रमा	मंगल	सूर्य	बुध
		शनि		शुक्र	केतु

३. महाराणा प्रताप—

वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	कुंभ
सूर्य	चंद्रमा	गुरु	केतु	मंगल	राहु
	बुध			शनि	
	शुक्र				

४. श्री सावरकर—

मेष	वृष	मिथुन	तुला	कुंभ
मंगल	शनि	बुध	राहु	चन्द्रमा
शुक्र	सूर्य	गुरु		
केतु				

५. श्री गोलवलकर—

वृष	कर्क	धनु	मकर	कुंभ	मीन
गुरु	राहु	चन्द्रमा	केतु	शुक्र	मंगल
				शनि	
				सूर्य	
				बुध	

६. चीन—

कर्क	सिंह	कन्या	तुला	मकर	मीन
मंगल	शनि	केतु	शुक्र	चंद्रमा	राहु
		बुध		गुरु	
		सूर्य			

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७. अभिनेता अशोक कुमार—मेष वृषभ मिथुन कन्या तुला सिंह
शनि मंगल चंद्रमा सूर्य केतु शुक्र
राहु बुध गुरु

८. जार्ज पंचम का पुत्र—वृष मिथुन कन्या मकर कुंभ मीन
गुरु सूर्य शनि चंद्रमा बुध राहु
शुक्र केतु मंगल

९. एच०जी० वेल्स—मिथुन सिंह कन्या तुला मकर कुंभ मीन
(प्रसिद्ध लेखक) मंगल बुध सूर्य शुक्र गुरु चन्द्रमा केतु
राहु शनि

१०. स्वामी विवेकानन्द—मेष वृष कन्या तुला वृश्चिक मकर
मंगल केतु चन्द्रमा गुरु राहु सूर्य
शनि बुध
शुक्र

११. माओत्से तुंग—वृष सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर मीन
वृहस्पति चंद्रमा केतु शनि मंगल सूर्य शुक्र राहु
बुध

१२. एक प्रशासकीय—मेष वृष मिथुन कर्क कन्या वृश्चिक धनु
महिला अधिकारी मंगल शुक्र राहु गुरु सूर्य चन्द्रमा केतु
शनि बुध

१३. प्रसिद्ध व्यापारी—वृष मिथुन कर्क सिंह मकर कुंभ
सूर्य बुध चंद्रमा केतु चंद्रमा गुरु
शुक्र राहु
शनि

१४. एक आत्महन्ता वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या मकर कुंभ
की कुंडली—शनि गुरु शुक्र सूर्य बुध चंद्रमा केतु
मंगल
राहु

१५. एक विशिष्ट सिंह कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन
कुंडली— राहु चंद्रमा शनि मंगल बुध केतु शुक्र
वृह० सूर्य

१६. जयप्रकाश मकर मेष कर्क सिंह कन्या तुला ध.
नारायण गुरु केतु चन्द्र मंगल बुध सूर्य रा.
शुक्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुंभ लग्न और योग

कुंभ लग्न होने पर भगवान शनि लग्नेश एवं द्वादशेश, द्वितीयेश व एकादशेश भगवान गुरु, तृतीयेश एवं कर्मेश क्रूर देव मंगल, सुखेश भाग्येश शुक्र, सन्तान, भवन एवं अष्टमेश बुध तथा शत्रु, भवन व स्त्री भवन के स्वामी क्रमशः चन्द्र-सूर्य होते हैं।

त्रिकोणेश बुध, शुक्र, केन्द्राधिपति शनि, शुक्र, सूर्य एवं मंगल ... केन्द्राधिपति शनि एवं दुःस्थान के स्वामी चन्द्रमा, बुध व शनि, ...र घर के अधिष्ठाता गुरु, बुध, त्रिकेश चन्द्रमा, बुध व शनिश्चर, व्ययाधीश मंगल, चन्द्रमा, गुरु एवं आपोक्लिम पति मंगल, चन्द्रमा, शु... व शनि होते हैं।

अब मैं कुंभ लग्न से सम्बन्धित होने वाले कुछ विशिष्ट योग देने प्रयास करूंगा।

(१) केन्द्र में बुध, सूर्य, राहु, शनि आदि हों तथा २ ग्रह त्रिकोण स्थान में हों तो जातक परम भाग्यशाली, प्रभावी, धनवान, शक्ति-सम्पन्न होता है।

(२) १०वें भाव में अर्थात् वृश्चिक राशि में चन्द्र-शनि का योग हो तो वह जातक कुबेर तुल्य ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

(३) कुंभ लग्न हो, शनि लग्न में स्व का स्थित हो, मंगल की ८वीं दृष्टि शनि पर हो तो राजराजेश्वर योग होने से जातक पूर्ण-...ग सम्पन्न, सुखी, धनवान, दीर्घायु होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) नवमेश शुक्र व लग्नेश शनि परस्पर स्थान परिव... करते हों तो जातक अवश्य ही विदेश यात्रा करता है।

(५) मंगल व बुध के साथ यदि लग्नेश शनि चतुर्थ, द्वादश भ... में हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।

(६) शनि ६ठे भाव में स्थित हो तथा चन्द्रमा स्व राशिस्थ हो तो जातक को कुष्ठ रोग होता है।

(७) नवमांश पति दशम भाव में दशमेश के साथ हो तो गौरी योग होने के फलस्वरूप जातक सामाजिक होता है। भूमिपति होता है, कृषि कार्यों में रुचि रखता है तथा देवभीरु होता है।

(८) ६।८।१२ भाव में सूर्य, मंगल, शनि हों तथा गुरु, शुक्र पाप-ग्रहों के मध्य में हों तो बालक के जन्म के कुछ ही समय बाद उसकी माता की मृत्यु हो जाती है।

(९) चन्द्रमा ५वें स्थान में हो, मंगल अष्टम भाव में कन्या राशि का हो, मंगल से सप्तम भाव में शनि से सप्तम भाव में शुक्र हो और शुक्र से ७वें भाव मे गुरु हो तो जातक प्रसिद्ध वीर, रणनीतिज्ञ, यश प्राप्त करने वाला तथा आनन्दमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(१०) भाग्य भाव में शुक्र हो, पंचम भाव में गुरु हो, तुल... राशि मे चंद्रमा हो तथा तृतीय स्थान में सूर्य हो तो जातक बात... करने की कला में दक्ष, विशाल हृदय, सहायतार्थ तत्पर रहने ... सम्पन्न, सुखी, स्थूलकाय व सफल व्यापारी होता है।

(११) द्वितीय भाव में गुरु तथा ११वें भाव में शुक्र हो ... कंगाल के घर में जन्म लेकर भी लक्ष्याधिपति बनता है।

(१२) गुरु नवम भाव में तथा शुक्र दशम भावस्थ ... शुक्र पर शनि की दृष्टि हो तो जातक लखपति बनता है।

(१३) मंगल तीसरे भाव में हो तो उसके कई छोटे भा... हैं पर यदि मंगल ... भाव में हो या दूसरे भाव में हो तो भाइ... का अभाव रहता ...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१४) १२वें भाव में शुक्र हो तो व्यक्ति भाग्यहीन होता है और साधारणतः जीवन-जीवन नहीं होता।

(१५) लग्न में सूर्य, शुक्र हो तथा दशम भाव में राहु हो तो राहु तथा गुरु की दशा में अत्युत्तम लाभ प्राप्त होता है। प्रधानतः गुरु की दशा श्रेष्ठ जाती है।

(१६) यदि सूर्य और मंगल अष्टम भाव में अर्थात् कन्या राशि में हों तो दोनों ही दशाएं घोर कष्ट देती हैं। लक्ष्याधिपति भी दरिद्र जीवन व्यतीत करता है।

(१७) सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक की स्त्री साहसी, लड़ाकू एवं दृढ़ विचारों वाली होती है।

(१८) दूसरे भाव में बुध हो तो व्यक्ति जन्म स्थान से दूर रहता है तथा सन्तान की ओर से घोर कष्ट पाता है।

(१९) दशम भाव में शनि अकेला हो तो व्यक्ति निश्चय ही करोड़पति होता है।

(२०) शनि व मंगल क्रमशः दशम भाव व सप्तम भाव में हो तथा सप्तमेश षष्टम भाव में हो तो जातक व्यवसाय करता है।

(२१) शनि, मंगल, सूर्य सप्तम भाव में हो, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो जातक को दमें की बीमारी होती है।

(२२) बलवान द्वितीयेश अष्टम हो, पाप युक्त भ्रातृकारक ग्रह तृतीय व चतुर्थ भाव के कारक से भी मुक्त हो तो उसको सौतेली माता से उत्पन्न भाई हो।

(२३) चतुर्थेश और तृतीयेश दोनों चौथे भाव में हों तो जातक भाइयों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

(२४) तृतीयेश केन्द्र में हो तथा गुरु त्रिकोण में बैठकर तृतीयेश ज्ञता हो तो जातक के कुल १२ भाई बहिन होते हैं।

(२५) द्वादशेश शनि व कर्मेश मंगल साथ बैठे हों तथा चंद्रमा व गुरु तृतीय भाव में हों तथा इन पर शुक्र [illegible]ष्ट हो तो उस जातक को सात भाइयों का सुख प्राप्त होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२६) दूसरे अथवा चौथे भाव में चन्द्रमा बैठा हो तो जातक को साधारण वाहन का सुख प्राप्त होता है।

(२७) शुक्र स्व राशिस्थ चतुर्थ भाव में बैठा हो तो वह जातक तीव्र मस्तिष्क वाला तथा उच्च पद को प्राप्त करने में सफल होता है।

(२८) कुंभ लग्न की कुण्डली में सप्तमेश सूर्य यदि पंचम भाव में अर्थात् मिथुन राशि में हो तो जातक पुत्र-रहित या स्त्री-रहित होता है।

(२९) पंचम मिथुन राशि हो, केन्द्रेश अर्थात् लग्नेश शनि हो तो उस जातक के दत्तक पुत्र होता है।

(३०) अष्टम भाव में शनि-मंगल व चन्द्रमा हो तो जातक को बवासीर का रोग होता है।

(३१) लग्न में चन्द्रमा हो तथा चन्द्रमा से अष्टम में नीच ग्रह की स्थिति है उस नीच ग्रह (शुक्र) पर राहु की पंचम दृष्टि हो, मंगल १२ वीं राशि में स्थित होकर भी अष्टम भाव पर दृष्टिपात करे। बुध स्वराशिस्थ उच्च का अष्टम भावस्थ हो तो अण्डकोष सम्बन्धी रोग होता है।

(३२) चंद्रमा लग्न में हो तथा शनि पर राहु की सप्तम व मंगल की पंचम दृष्टि हो। लग्न व लग्नेश पर कोई शुभ दृष्टि न हो तो जातक को पांव सम्बन्धी केन्सर होता है।

(३३) गुरु भाग्य भवन में, लग्नेश ११वें भाव में, लग्न में सूर्य तथा कर्म भाव में चन्द्रमा हो, राहु बृहस्पति की युति हो, बुध द्वितीय भाव में हो तो मुंह पर रोग हो।

(३४) अष्टम भाव में शनि हो तथा शनि पर मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो जलोदर रोग होता है।

(३५) अष्टम भाव में सूर्य, मंगल, शनि हो तो जातक को निश्चय ही गुप्त रोग होता है।

(३६) शनि की एवं गुरु की युति कुंभ लग्न की कुण्डली में हो तो पागल कुत्ते के काटने की पूर्ण सम्भावना रहती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३७) लग्न में शत्रु भवन का स्वामी चन्द्रमा हो तथा शनि मंगल द्वितीय एवं द्वादश भाव में हो तथा सूर्य स्वगृही हो तो वह व्यक्ति कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

(३८) सूर्य लग्न में हो तो जातक आजीवन दाद से पीड़ित रहता है।

(३९) कुंभ लग्न हो तथा शुक्र व बुध का सम्बन्ध हो तो वह एक उत्कृष्ट योग होता है।

(४०) यदि लग्न से ३।६।९ या १२ भाव में बृहस्पति हो और लाभ स्थान से केन्द्र में अर्थात् लग्न से ११।२।५।८ स्थान में शुक्र हो और शुक्र की राशि में गुरु और ९।१२ की राशि में शुक्र हो तो वह व्यक्ति लोकमान्य, राज-सत्कृत, विजयी एवं दीर्घायु भी होता है।

(४१) दशमेश जिस नवांश में हो, उसका स्वामी अपनी उच्च राशि में स्थित होकर लग्नेश के साथ लग्न से १०वें भाव अर्थात् कर्म स्थान में हो तो जातक का प्रबल भाग्योदय ४७वें वर्ष में होता है।

(४२) ग्यारहवें स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उसका स्वामी अपनी उच्च राशि में स्थित होकर नवमेश के साथ यदि ११वें भाव में हो तो जातक धार्मिक, श्रद्धालु, भाग्यवान, भोगी एवं समृद्ध होता है।

(४३) लग्न से द्वितीय भाव में चन्द्रमा और बृहस्पति हों तथा द्वितीय स्थान का स्वामी (धनेश) ११वें स्थान में हो और लग्नेश ९।१२ की राशि में हो तो जातक का भाग्योदय ३२वें वर्ष में होता है।

(४४) यदि नवमेश शुक्र लग्न से तृतीय स्थान में मेष राशिस्थ हो तथा शुक्र पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक का भाग्योदय ८वें वर्ष ही हो जाता है।

(४५) यदि दशम में सूर्य, और चतुर्थ में मंगल हो तो रथ, घोड़े, सवारी आदि से गिरकर मृत्यु होती है।

(४६) सूर्य उच्च का होकर तीसरे भाव में बैठा हो, नवमेश-दशमेश उच्च राशि में स्थित हो, गुरु चन्द्र सप्तम भाव में स्थित हो तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वनवासी होना पड़ता है।

(४७) बृहस्पति धन भाव अथवा धनेश केन्द्र, त्रिकोण या ११वें भाव में हो तो जातक धनवान होता है।

(४८) बृहस्पति धनेश होकर कहीं भी मंगल के साथ हो तो वह जातक धनवान होता है।

(४९) दशमेश व धनेश केन्द्र भाव अथवा त्रिकोण ५।९वें भाव में हो तो जातक को अनायास अर्थलाभ होता है।

(५०) लग्नेश गुरु अष्टम भाव में तथा अष्टमेश बुध लाभस्थान में हो तो भूमि द्वारा धन लाभ होता है।

(५१) शुक्र, सप्तमेश सूर्य तथा भाग्येश एक साथ हों तो जातक को ससुराल से धन प्राप्त होता है।

(५२) शनि, राहु अथवा केतु धन भावस्थ हो तो कभी धन प्राप्त हो जाता है कभी नहीं।

(५३) यदि तृतीयेश पंचमस्थ पंचमेश से युक्त हो तो जातक का भाई उच्च पद पर होता है अथवा स्वयं सत्ता प्राप्त व्यक्ति होता है अथवा ईश्वर कृपा से सम्पत्तिवान् होता है।

(५४) जन्म अथवा चन्द्र से दशम भावस्थ गुरु धनवान भ्राता से आर्थिक लाभ का द्योतक है।

(५५) लग्नेश व तृतीयेश अर्थात् शनि-मंगल बलहीन एवं परस्पर शत्रु ग्रह तथा दुःस्थानस्थ ६।८।१२ हों तो भाइयों में परस्पर शत्रुता रहती है।

(५६) चतुर्थेश दशम भाव गत एवं दशमेश मंगल वृष राशि में चतुर्थ स्थान में हो अथवा चतुर्थेश द्वितीय अथवा लाभस्थ हो तो जातक को जमीन, काफी जायदाद एवं कृषि योग्य भूमि का भरपूर सुख होता है।

(५७) जन्म लग्न, चन्द्र लग्न तथा बृहस्पति से पंचमेश पर यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक विश्व-विद्यालय का स्नातक होता है।

(५८) लग्नेश शनि यदि १।२।३।५।७।९।११वें भाव में हो तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रथम पुत्र एवं ४।६।८।१०।१२वें भाव में हो तो प्रथम सन्तान कन्या होती है।

(५९) पति-पत्नी दोनों की कुण्डली में तुला राशिस्थ शनि हो तो सन्तान-सुख नहीं होता।

(६०) यदि षष्ठेश से दृष्ट नवमेश षष्ठस्थ हो तथा षष्ठेश शनि एवं मंगल से युक्त हो तो चोरी के द्वारा धन राशि हो।

(६१) जन्म लग्न में मंगल हो और अष्टम भाव में गुरु हो तो जातक की मृत्यु १२ वर्ष की अवस्था में हो जाती है।

(६२) मंगल के क्षेत्र में गुरु हो और ६।८ स्थान में चन्द्रमा हो तो वह बालक ८ वर्ष में भारी कष्ट सहे। हाँ, ईश्वर कृपा से ही उसकी रक्षा सम्भव है।

(६३) बली लग्नेश, लाभ में तृतीय या केन्द्र में हो तो उसके समस्त अरिष्टों को दूर कर दीर्घायु तथा शरीर सुख देता है।

(६४) अष्टम भाव में सूर्य हो तो अग्नि से, चन्द्रमा हो तो जल से मंगल हो तो शस्त्र से, बुध हो तो महा कष्ट कर ज्वर से, गुरु हो तो असाध्य रोग से, शुक्र हो तो क्षुधा से और शनि हो तो तृषा से मृत्यु होती है।

(६५) लग्न, अष्टम व ६वें स्थानों में चन्द्रमा न हो, पाप ग्रह स्वगृही हो और बली दो ग्रह १०वें भाव में हो तो वह जातक शतायु होता है।

(६६) गुरु उच्च अथवा मीन राशि में होकर लग्न से ६।८ या केन्द्र में हो तो और अन्य ग्रह निर्बल हों तो वह जातक अवश्य ही मोक्ष को प्राप्त करता है।

(६७) लग्न या चंद्रमा से कर्म स्थान में बुध हो तो वह नायक शिल्पकला दक्ष, साहसी, धनी व पंडित वृत्ति करने वाला होता है।

(६८) सूर्य व शनि धनु राशि में हों, चंद्रमा कुंभ अथवा मेष की राशि में स्थित हो तो जातक पिता को मारकर पित्रोपार्जित धन को भोगता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६९) ४।१०।१२वें घर में पाप ग्रह हों तो जातक माता-पिता को मारकर देश-विदेश में जाता है।

(७०) १०वें भाव में बृहस्पति हो तो ब्राह्मण वृत्ति से, धार्मिक कार्यों से, देवोपासना से, यदि शुक्र हो तो पशु वृत्ति से, रौप्य तथा रत्नादिक से लाभ प्राप्त करता है।

अब मैं उक्त योगों से संबंधित कुछ विशिष्ट कुण्डलियां दे रहा हूं जिनके आधार पर उपरोक्त योगों को भली प्रकार समझा जा सकता है।

१. लंकेश्वर रावण—

मेष	वृषभ	मिथुन	तुला	वृश्चिक	धनु	मीन
सूर्य	बुध	राहु	चंद्रमा शनि	मंगल	गुरु केतु	शुक्र

२. रामकृष्ण परमहंस—

वृष	मिथुन	तुला	वृश्चिक	मकर	कुंभ	मीन
केतु	गुरु	शनि	राहु	मंगल	सूर्य चंद्र बुध	शुक्र

३. सुमित्रा सिंह—

मेष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला	धनु	मीन
सूर्य बुध	गुरु	मंगल	केतु	चंद्रमा	शनि	राहु शुक्र

४. चव्हाण (Y.V)—

वृष	मिथुन	सिंह	कन्या	मकर	कुंभ	मीन
शनि	मंगल	केतु	चंद्रमा	गुरु	सूर्य बुध राहु	शुक्र

५. पैगम्बर मुहम्मद—

मेष	वृषभ	कर्क	सिंह	तुला	वृश्चिक
सूर्य बुध	राहु शुक्र	मंगल	चंद्रमा	गुरु	केतु शनि

६. मोहम्मद अली जिन्ना—

सिंह	तुला	वृश्चिक	धनु	कुंभ	मीन
केतु	मंगल	गुरु शुक्र	सूर्य बुध	राहु शनि	चन्द्रमा

७. बादशाह औरंगजेब—

वृषभ	कर्क	सिंह	तुला	धनु	मकर	कुंभ
चंद्रमा शनि	केतु	मंगल	सूर्य बुध	शुक्र	राहु	गुरु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

८. शिवाजी गणेशन—

मेष	वृषभ	मिथुन	कन्या	तुला	वृश्चिक	मकर
गुरु	राहु	मंगल	सूर्य	बुध	शनि	चंद्रमा
				शुक्र	केतु	

९. कार्ल मॉर्क्स—

मेष	वृष	कर्क	तुला	धनु	कुंभ
सूर्य	बुध	मंगल	केतु	गुरु	शनि
चन्द्रमा	शुक्र				
राहु					

१०. सम्राट एडवर्ड अष्टम—

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	कन्या	कुंभ	मीन
शुक्र	गुरु	सूर्य	बुध	शनि	चंद्रमा	मंगल
			केतु			राहु

११. लिंकन—

तुला	वृश्चिक	मकर	कुंभ	मीन
मंगल	शनि	चंद्रमा	सूर्य	गुरु
राहु			बुध	[illegible]
				शुक्र

१२. श्रीमती भंडार नायके—

मिथुन	कर्क	तुला	वृश्चिक	धनु
केतु	मंगल	गुरु	चन्द्रमा	सूर्य
			शुक्र	बुध
			शनि	राहु

१३. चतुरसेन शास्त्री—

वृषभ	कर्क	सिंह	वृश्चिक	कुंभ	मीन
राहु	मंगल	सूर्य	केतु	गुरु	चंद्रमा
		बुध			
		शुक्र			
		शनि			

१४. एक कॅंसर पीड़ित व्यक्ति—

वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कुंभ	मीन
मंगल	सूर्य	शुक्र	शनि	चंद्रमा	गुरु
	बुध		केतु	राहु	

१५. भगवान दास—

वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	वृश्चिक	धनु	मीन
शनि	शुक्र	बुध	केतु	चंद्रमा	गुरु	राहु
मंगल		सूर्य				

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्नपति जुन ग्रहको भाव राशि छ उक्त ग्रहको महादशा वा अन्त दशा शुभ फल दिने हुन्छ।

मीन लग्न और योग

जातक का लग्न मीन होने पर सूर्य नारायण शत्रु भवन के अधिपति, चन्द्रमा त्रिकोणेश (५) तथा क्रूर ग्रह मंगल द्वितीयेश होकर भाग्येश होते हैं। बुध सुखेश व स्त्री भवनाधिपति और शुक्र क्रमशः सहजेश तथा मृत्यु भवन के स्वामी होते हैं। गुरुदेव लग्नेश के साथ कर्मेश और शनि एकादशेश व द्वादशेश दोनों होते हैं।

ध्रुव केन्द्र पति गुरु एवं अन्य केन्द्राधिपति गुरु व बुध होते हैं। त्रिकोणेश चन्द्रमा एवं मंगल और दुःस्थानों के स्वामी सूर्य, शुक्र व शनि तीनों क्रूर ग्रह हुआ करते हैं। पणफर पति मंगल, चन्द्रमा, शुक्र वं शनि, आपोक्लिमेश शुक्र, सूर्य, मंगल, शनि और उपचयेश शुक्र, गुरु, शनि होते हैं। त्रिकेश-सूर्य, शुक्र व शनि होंगे।

अब मैं तत् लग्न सम्बन्धी कुछ विशेष योग देने का प्रयास कर रहा हूं।

(१) पितृ स्थान (९) से सूर्य द्वादश स्थान में हो एवं लग्न से मृत्यु भाव में सूर्य हो, सूर्य नीच राशि में भी होना आवश्यक है। सूर्य पर शनि व मंगल की दृष्टि क्रमशः दसवीं व चौथी हो तो पिता चक्षुहीन हो जाते हैं।

(२) सूर्य-बुध मीन राशि में लग्न में स्थित हों, शनि की दृष्टि बुध पर हो, शनि राहु अधिष्ठित राशि में उपस्थित हो तो जातक को त्वचा से सम्बन्धित बीमारी होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) मंगल मृत्यु भवन में हो तथा एकादश व द्वादश स्थानों के स्वामी शनि की मंगल पर दृष्टि हो तथा किसी ग्रह (शुभ) की दृष्टि न हो तो जातक को घुटे का रोग होता है।

(४) सूर्य मंगल व बुध की युति द्वादश स्थान में कुंभ राशिगत हो शनि ११वें भाव में स्थित हो तो जातक की मृत्यु अग्नि से होती है।

(५) लग्न में सूर्य-बुध हो, चन्द्रमा द्वितीय भवन में विद्यमान हो, दोनों पर क्रमशः केतु व मंगल की दृष्टि हो। मंगल एकादश भाव में हो तो जातक चक्षुहीन होता है।

(६) गुरु द्वादश स्थान में अनिष्ट ग्रह के घर में स्थित हो, सूर्य से द्वादश स्थान में वृश्चिक राशिस्थ हों तथा सूर्य बुध क्रमशः १० व ९वें भाव में हो, मंगल की पूर्ण दृष्टि सूर्य, बुध पर हो तो पाँवों को शल्य क्रिया द्वारा काटना पड़ता है।

(७) मीन जातक की कुण्डली में अष्टमेश की दृष्टि सप्तम भाव पर हो तो जातक स्त्री दुराचारिणी होती है।

(८) सप्तम भाव में अर्थात् कन्या राशिस्थ मंगल हो तो एवं उस पर शनि की दृष्टि हो अर्थात् लग्न में मीन का शनि हो तो जातक स्त्री के सन्तान नहीं होती।

(९) मीन लग्न हो तथा जातक स्त्री का बुध उच्च का हो तो वह नारी-कवि हृदय, सौभाग्यशालिनी और सुन्दर गुणों से मंडित होती है। ऐसी नारी जीवन के समस्त ऐश्वर्य भोगती है।

(१०) सप्तम स्थान में सूर्य या उसका नवमांश हो तो उस स्त्री का पति लेखक, विचारक अथवा अफसर होता है, परन्तु रति-चर्या में स्त्री पति से प्रसन्न नहीं रहती।

(११) गुरु, चन्द्रमा के घर में हो तथा चन्द्रमा, गुरु के घर में अर्थात् गुरु-चन्द्रमा स्थान परस्पर परिवर्तन करते हों तथा गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो सरस्वती योग होता है। फलस्वरूप वह जातक प्रसिद्ध सरस्वती का वरद पुत्र माना जाता है। काव्य एवं संगीतादि के क्षेत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में वह विख्यात होता है।

(१२) लग्न की शुभ राशि हो, लग्न प किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि न हो। लग्नेश केन्द्र वृत्ति स्थान में हो। प्रथम भाव का कारक ग्रह सहज भाव (३) में हो तो जातक का शरीर हृष्ट-पुष्ट एवं पूर्ण स्वस्थ होता है।

(१३) लग्नेश गुरु धन भवन में हो, मंगल का लग्नेश से संबन्ध हो तो जातक उच्च कोटि का व्यापारी होता है।

(१४) सूर्य-शनि एक स्थान पर बैठ कर युति करते हों वह भी पुनः शत्रु भाव में हो तो पिता-पुत्र में सदैव झगड़ा होता है। उनका पारस्परिक मतभेद कभी नहीं मिटता।

(१५) मीन लग्न हो तथा शुक्र द्वादश स्थान में हो तो वह शुभ नहीं रहता, ऐसा जातक निश्चय ही ऋणग्रस्त रहता है।

(१६) यदि द्वादश स्थान में कुंभ राशिस्थ चन्द्रमा हो तो जातक निश्चय ही लखपति के घर जन्म लेकर भी साधारण जीवन व्यतीत करता है।

(१७) मंगल यदि उच्च का एकादश स्थान में हो तो जातक निश्चय ही करोड़पति होता है। चाहे जातक का कोई भी सहायक न हो। ऐसा मंगल आकस्मिक धन दिलाने में भी सहायक होता है।

(१८) कर्क राशि में पंचम भाव में मंगल हो तो जातक का धन स्त्री एवं स्त्री के भाई द्वारा नष्ट होता है।

(१९) ८वें भाव में बुध हो तो अल्पायु में ही जातक के पिता की मृत्यु हो जाती है।

(२०) पंचम भाव में गुरु होने से जातक को पुत्र-सुख नहीं प्राप्त नहीं होता। पुत्र होता भी है तो शीघ्र ही मर जाता है। हां, कन्या का सुख उसे अवश्य प्राप्त होता है।

(२१) यदि दूसरे भाव में चन्द्रमा एवं ५वें भाव में मंगल हो तो मंगल [illegible] श्रेष्ठ धन लाभ होता है।

(२२) शुक्र, सूर्य, मंगल तीनों लग्न में हों तथा गुरु अष्टमस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो तो जातक गुरु की दशा में मंगल की भुक्ति में जेल जाता है।

(२३) गुरु ६ठे भाव में हो, शुक्र ८वें, शनि १२वें तथा चन्द्रमा-मंगल ११वें भावस्थ हों तो उच्चातिउच्च धनदायक योग बनता है।

(२४) चन्द्रमा व शनि लग्न में हों, मंगल ११वें भाव में हो, शुक्र ६ठे भाव में तो शुक्र की दशा में उत्कृष्ट भाग्योदय होता है।

(२५) लग्न में सूर्य, शनि तथा सप्तम भाव में बुध हो तो जातक का गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण रहता है।

(२६) चन्द्रमा तीसरे भाव में, सूर्य ६, बुध ७, शुक्र ८, गुरु १०, मंगल ११ एवं शनि द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति का प्रबल भाग्योदय होता है।

(२७) शनि कुंभ राशिस्थ स्वगृही हो, लग्न में लग्नेश हो, नवमेश हो नवम भाव में तो जातक यशस्वी, धनी, कीर्तिवान होता है।

(२८) लग्न भाव में मीन राशि का शनि हो तो जातक धन, भाव व पुष्ट देह होता है।

(२९) गुरु पंचम भाव में हो तो ५ पुत्र, शुक्र हो तो ६ पुत्रियां शनि हो तो गर्भपात होता है एवं राहु रहे तो सन्तान होती ही नहीं।

(३०) मंगल यदि ६ठे भावस्थ हो, सप्तम भाव में राहु, अष्टम भाव में शनि हो तो जातक की स्त्री जीवित नहीं रहती।

(३१) चन्द्रमा व मंगल का योग हो, लाभेष व धनेश चतुर्थ भाव में हो तथा चतुर्थेश शुभ स्थान में शुभ युत एवं दृष्ट हो तो जातक को अचानक धन की प्राप्ति होती है।

(३२) लाभेश अष्टम भाव में, अष्टमेश लाभस्थ हो तो चोर बाजारी, सट्टा, लाटरी अथवा जुआ आदि से लाभ होता है।

(३३) मीन लग्न हो तथा द्वितीयेश द्वितीय भाव में, नवमेश नवम में तथा एकादशेश एकादश भाव में हो तो जातक धनी, भाग्यवान उत्तम आय वाला होता है तथा उसका भाग्योदय २८वें वर्ष ही होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३४) नवमेश जिस नवांश में हो, उसका स्वामी अपनी उच्च राशि में लग्नाधिपति के साथ हो तो जातक गुरुभक्त व बलाढ्य होता है।

(३५) दशमेश लग्न में हो, लग्नेश दशम में या उस पर शुभ दृष्टि हो तो जातक ज्ञानी व उच्च पदस्थ होता है।

(३६) मीन लग्न हो, लाभेश व भाग्येश शनि मंगल एकादश स्थान में चन्द्रमा के साथ हो और गुरु लग्नेश होकर कर्क में बैठ कर उन्हें पूर्ण दृष्टि से देखे तो सुन्दर राजयोग होता है।

(३७) लग्नेश बृहस्पति दशम स्थान में स्थित हो, लग्न से सप्तम स्थान का स्वामी बुध, चन्द्रमा से दूसरे स्थान में स्थित हो तथा लग्न में शुभ ग्रह हो तो जातक का भाग्योदय १२ वर्ष की अवस्था में होता है।

(३८) यदि वर्गोत्तम लग्न हो अर्थात् लग्न में जो राशि है वही नवांश लग्न हो, लग्नेश जन्म लग्न से नवम स्थान में हो तथा चन्द्रमा जिस राशि में हो, उससे नवम स्थान में गुरु हो तो उत्तम भाग्य योग बनता है।

(३९) लग्न में मीन का सूर्य हो, द्वितीय स्थान में मेष का सूर्य, सप्तम में कन्या में पाप ग्रह के साथ चन्द्रमा हो तो स्त्री हेतुक मरण घर में हो।

(४०) सूर्य सप्तम भाव में, मंगल चतुर्थ [illegible] में [illegible]नुराशि-स्थ दशम भाव में हो तो शस्त्र या अग्नि से मृत्यु हो।

(४१) मीन लग्न हो, लग्न में उच्च का शुक्र हो [illegible] द्रमा धनुराशि में हो तथा मकर में उच्च का मंगल हो तो [illegible]नयोग होता है।

(४२) मीन लग्न में चन्द्रमा हो, कुंभ में श[illegible] व सिंह में क्रमशः मंगल सूर्य हो तो उत्तम राजयोग होता [illegible]

(४३) द्वितीयेश, पंचमेश अथवा द्वितीयेश एकाद[illegible] परस्पर स्थानान्तरित होते हों या नवमेश व पंचमेश नवम, पंचम [illegible] में ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो तो उत्तम धनयोग होता है।

(४४) द्वितीयेश, एकादशेश—पंचमेश, नवमेश से सम्बन्ध करे तो उत्तम अर्थ योग होता है।

(४५) द्वितीयेश-एकादशेश साथ-साथ हों और मीन लग्न हो तो धन का नाश होता है।

(४६) लग्नेश गुरु, चतुर्थेश वुध, नवमेश मंगल मिलकर यदि अष्टम भाव में हो तो जातक दरिद्री होता है।

(४७) द्वादशेश व द्वितीयेश स्थान परिवर्तन किए हुए हों तो भी धन का नाश होता है।

(४८) सूर्य पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव में राहु बुध हों तो जातक ज्योतिष विद्या में निपुर्ण होता है।

(४९) यदि दूसरे घर में सूर्य-बुध की युति हो तो जातक ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता होता है तथा उस पर शनि की दृष्टि हो तो जातक गणितज्ञ होता है।

(५० [illegible] सूर्य बुध किसी केन्द्र,कोण या लाभ में बैठे हों तो जातक गो[illegible]तशास्त्र का ज्ञाता एवं [illegible]तषी होता है।

(५१) तृतीयेश [illegible] ६ष्ठ भाव या अष्टम भावगत हो तो जातक के भाइयों की मृ[illegible] समय से पूर्व हो जाती है अर्थात् भाई अल्पायु हों।

(५२) चतुर्थेश व द[illegible]शेश अर्थात् बुध-गुरु १।४।७।१० या कोण ५।९ में एक साथ हों तो जातक को सुख मिलता है।

(५३ [illegible]ुध,शुक्र मीन लग्न की कुण्डली में १० अथवा एकादश भाव[illegible] जातक के पास कई एक उच्च वाहन होते हैं।

[illegible]ग्नेश-पंचमेश की युति कहीं भी हो तो जातक का सु[illegible]ल होता है।

प्रथम व षष्ठम भाव के स्वामियों का सम्बन्ध भाग्येश मंगल से हो तो व्रण, घाव, शस्त्राघात, ग्रन्थि आदि का सदैव ही भय रहता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५६) यदि बुध नीच ग्रह के साथ १२वें भवन में बैठा हो और लग्नाधिपति गुरु उच्च का त्रिकोण में हो तो रोग नाश होता है अर्थात् उत्तम स्वास्थ्य रहता है।

(५७) सप्तमेश पाप ग्रह से युति करे, या दूसरे अथवा सप्तम भाव में मंगल, राहु, सूर्य, शनि में से कोई हो या शुक्र लाभस्थान में या नीच की राशि में हो अथवा सूर्य अपने ही घर में या द्वादश स्थान में हो तो जातक दूसरा विवाह अवश्य करता है।

(५८) शनि द्वितीय स्थान में हो और राहु सप्तम भवन में हो तो जातक दो विवाह करता है।

(५९) यदि द्वितीयेश व सप्तमेश या शुक्र सातवें घर में हो और दूसरे व ७वें घरों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जितने ही शुभ ग्रहों की दृष्टि हो उतनी ही पत्नियाँ हों या उतनी ही स्त्रियों से सुख हो पर यदि क्रूर ग्रह से युक्त ये स्थान या शुक्र हो तो यह योग नहीं होता।

(६०) यदि सूर्य व नवमेश नवम भाव में बैठे हों तो पिता अल्पायु होता है। यदि नवमेश एकादश भाव में हो तो पिता दीर्घायु होता है।

(६१) यदि बुध, गुरु, शुक्र एवं शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा को पाप ग्रह देखते हों तो जातक भाग्यशाली तो नहीं परन्तु धनवान अवश्य होता है।

(६२) नवमेश, सप्तमेश परस्पर स्थान परिवर्तन करते हों तो जातक का भाग्योदय अपनी-अपनी पत्नी के कारण होता है।

(६३) गुरु चंद्र क्रमशः अपनी उच्च राशि कर्क वृष में पुनः क्रमशः पंचम व तृतीय भाव में हो तो जातक की सन्तान अत्यधिक भाग्यशाली होती है।

(६४) यदि षष्ठ भावेश तृतीय भाव में हो तो वह मनुष्य लोगों कष्ट देने वाला, स्व परिवार को कष्ट देने में तत्पर एवं लड़ाई में कष्ट पाने वाला होता है।

(६५) यदि षष्ठेश षष्ठ भाव में ही हो तो वह जातक आरोग्य शत्रुता युक्त, कृपण, जन्म से ही कष्ट रहित एवं खराब स्थान में रहने वाला होता है।

(६६) सप्तम भाव में चन्द्रमा, अष्टम भाव में पाप ग्रह हों, लग्नेश लग्न में हो तथा सूर्य बृहस्पति की युति हो तो जातक वर्ष के अन्त में मृत्यु को प्राप्त होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६७) बुध से युक्त चन्द्रमा ६।८वें भाव में हो तो जातक विषपान कर अपनी आत्महत्या करता है।

(६८) लग्न अथवा अष्टम भाव में राहु हो तथा चन्द्रमा की उस पर दृष्टि हो तो जातक की मृत्यु १० दिन में ही हो जाती है।

(६९) राहु, बुध, शुक्र, गुरु एवं शनि से युक्त होकर केन्द्र में हो तो वह लक्ष्मी, पुत्र, मान, यश, प्रतिष्ठा, शरीर-सुख इत्यादि पाता है।

(७०) चन्द्रमा एकादश, नवम, पंचम स्थानों में से कहीं भी स्थित हो तो मातृ-पितृ, वंश के आनन्ददायक परम ऐश्वर्य भोगने वाला होता है।

अब मैं उपरोक्त योगों से सम्बन्धित मीन लग्न वालों की कुछ विशिष्ट कुण्डलियां दूंगा जिससे की उपरोक्त योग भली प्रकार समझे जा सकें।

१. स्वामी रामतीर्थ— (तुला)

मेष	कन्या	तुला	धनु	मकर
राहु	गुरु, शुक्र	केतु, बुध, सूर्य, चन्द्रमा	मंगल	शनि

२. डा० एन० बी० खेर— (मकर)

मेष	वृषभ	मिथुन	वृश्चिक	मकर	कुंभ	मीन
शनि	केतु, गुरु	मंगल	राहु	चन्द्रमा	बुध	सूर्य, शुक्र

३. रवीन्द्रनाथ टैगोर— (मीन)

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	धनु	मीन
सूर्य, बुध, शुक्र	मंगल	केतु	गुरु	शनि	राहु	चंद्रमा

४. श्रीमती एनी बीसेंट— (मिथुन)

मेष	मिथुन	कन्या	कुंभ	मीन
मंगल	चंद्रमा, गुरु	शुक्र, राहु, बुध, सूर्य	शनि	केतु

५. गणतंत्र दिवस भारत— (मेष)

मेष	सिंह	कन्या	धनु	मकर	मीन
चंद्रमा	शनि	केतु, मंगल	बुध	सूर्य, गुरु, शुक्र	राहु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६. सम्राट जार्ज पंचम—मेष वृषभ कर्क कन्या तुला धनु मीन
कन्या वुध सूर्य मंगल चंद्रमा शनि गुरु शुक्र
केतु राहु

७. राजकुमारी मारग्रेट—मेष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला धनु
कर्कट राहु गुरु चंद्रमा सूर्य वुध केतु शनि
मंगल शुक्र

८. हिमलर—वृष कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मीन
मीन केतु मंगल शुक्र सूर्य वुध गुरु शनि
राहु

९. सिण्डीकेट कांग्रेस—मिथुन सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर कुंभ
कन्या शनि राहु चंद्रमा बुध सूर्य शुक्र केतु
मंगल गुरु

१०. आइजन हावर—वृष सिंह कन्या तुला वृश्चिक मकर
तुला राहु शनि बुध सूर्य केतु गुरु
चंद्रमा शुक्र

११. इन्दिरा गांधी निर्वाचन—वृषभ वृश्चिक धनु मकर
गुरु केतु चंद्रमा सूर्य
राहु बुध मंगल
शुक्र

१२. श्री मां आनन्दमयी—मेष कर्क सिंह तुला वृश्चिक कुंभ वृ०
देवी शुक्र गुरु केतु शनि चंद्रमा सूर्य वुध
मंगल
राहु

१३. श्री उपेन्द्रनाथ अश्क—मेष वृषभ तुला वृश्चिक धनु
वृष शनि चंद्रमा गुरु सूर्य शु
राहु केतु मंगल बु

१४. लेखाधिकारी मेष वृष मिथुन कन्या तुला धनु कुंभ
आई. ए. पथिक—सूर्य शुक्र केतु मंगल चंद्र राहु शनि
तुला वुध गुरु

१५. आर. पी. श्रीवास्तव—मिथुन कर्क कन्या धनु मकर कुंभ मीन
इन्कम टेक्स आफीसर गुरु मंगल चंद्रमा शनि शुक्र सू केतु
कन्या राहु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

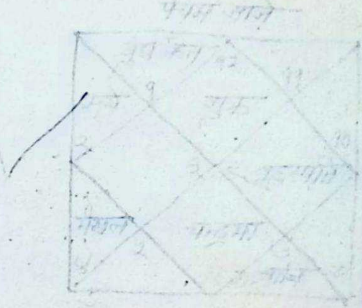

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस पुस्तक में विद्वान लेखक राधाकृष्ण शर्मा ने आज के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आधार बना कर योगों को सुस्पष्ट और सरल भाषा में प्रस्तुत किया है। पुस्तक में दिये गये योग विश्वासनीय तथा सत्य है। ज्योतिष प्रेमियों के लिये नवीनतम श्रेष्ठ कृति।

ज्यो रा श्री [illegible] मल्ल
ज्यूको सङ्कलनमा रहेका
पुस्तकहरु सार्वजनिक प्रयोगका
लागि प्रदान गरिएको छ।
श्रीमती मेदिनी मल्ल

साधना पॉकेट बुक्स

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu